CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमदभिनवचन्द्रेश्वरो विजयतेतराम्

श्रद्धासुमनाञ्जलि

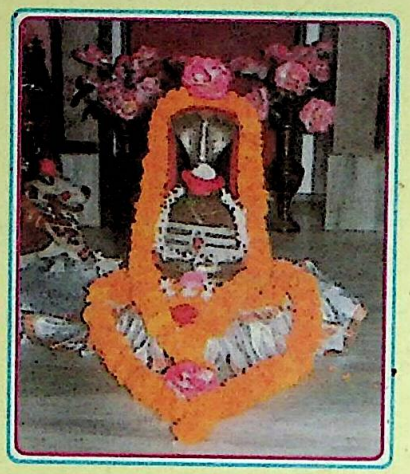

भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर संस्थापना शताब्दी

एवं

दिव्य विभूतिद्वय निर्वाण रजत महोत्सव

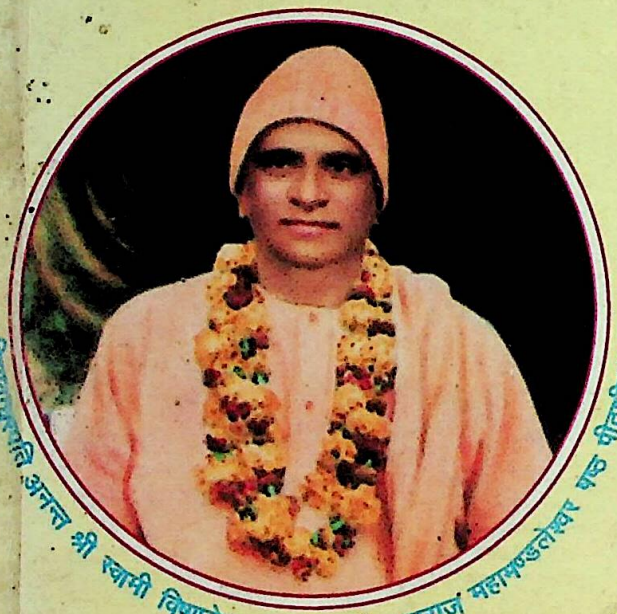

विद्यावाचस्पति अनन्त श्री स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज महामण्डलेश्वर षष्ठ पीठाधीश्वर

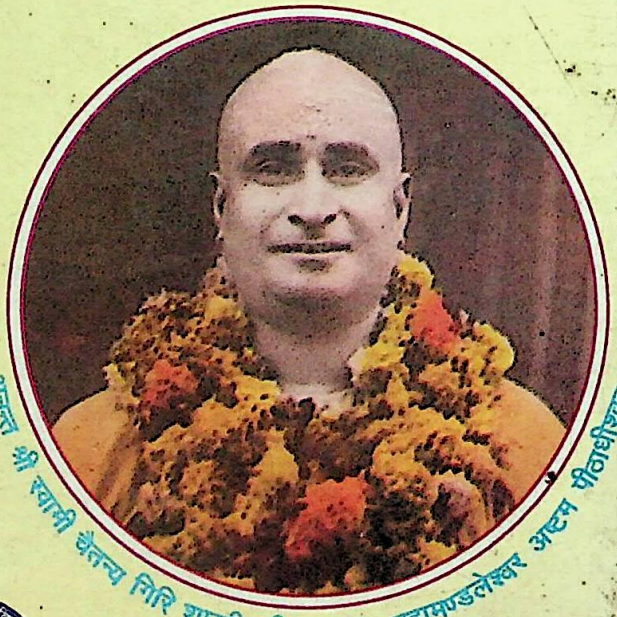

अनन्त श्री स्वामी चैतन्य गिरि शास्त्री जी महाराज महामण्डलेश्वर अष्टम पीठाधीश्वर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

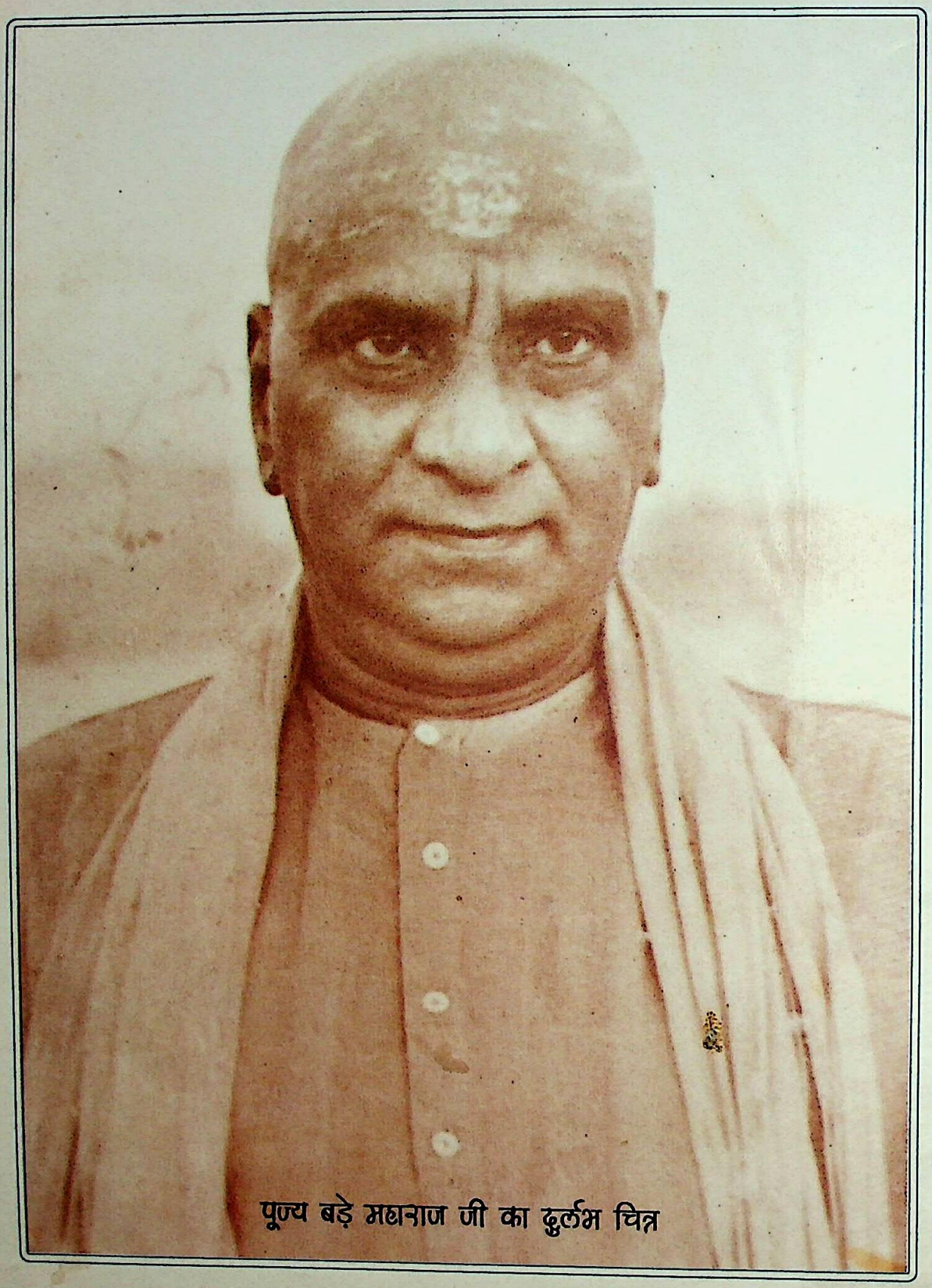

पूज्य बड़े महाराज जी का दुर्लभ चित्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2.2

ॐ

श्रद्धासुमनाञ्जलि

SHRADHASUMANANJALI

कैलास आश्रम ब्रह्मविद्यापीठ के अधिष्ठातृ देव
भगवान् श्री अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव जी की

प्रतिष्ठा शताब्दी

अचला सप्तमी वि.सं. २०५३ ✦ १४ फरवरी १९९७

परमपूज्य षष्ठ कैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर
विद्यावाचस्पति श्री स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज

निर्वाण रजत महोत्सव

वैशाख कृ॰ षष्ठी वि.सं. २०५४ ✦ २८ अप्रैल १९९७

परमपूज्य अष्टम कैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर
श्री स्वामी चैतन्य गिरि जी (शास्त्री जी) महाराज के

निर्वाण रजत महोत्सव

आश्विन कृ. एकादशी वि.सं. २०५४ ✦ २७ सितम्बर १९९७

प्रसंगों पर सादर समर्पित

सम्पादक
स्वर्ण लाल तुली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशकः

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य यतीन्द्रकुलतिलक श्रीकैलासपीठाधीश्वर आ.म.मं.
अनन्त श्रीस्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज के निर्देशानुसार
भगवत्पाद भक्त मण्डल, कैलास आश्रम, हृषीकेश (उ॰ प्र॰)

मुद्रकः ईलाइट प्रिन्टर्स, नई दिल्ली
दूरभाषः ५४३२९४०

प्रथम संस्करण – २५०० प्रतियाँ
© सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्यः एक सौ पचास रुपये

पुस्तक प्राप्ति स्थानः

१. कैलास आश्रम, ऋषिकेश – २४९२०१ दूरभाष : ०१३५–४३०५९८
२. दशनाम संन्यास आश्रम, हरिद्वार – २४९४०१ दूरभाष : ०१३३४–२७२०६
३. श्री कैलासविद्यातीर्थ, ६ भाई वीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली – ११०००१ दूरभाष : ०११–३३४७४७५
४. कैलास आश्रम, माडल टाउन, रोहतक (हरियाणा) – १२४००१.
५. श्री कैलासविद्यातीर्थ गिरियक रोड, राजगीर (नालन्दा) बिहार – ८०३१११
६. श्री कैलासविद्याधाम, रूप नगर, जम्मू
७. जयमाला पर्स एम्पोरियम, ५/७६ डब्लयू. ई. ए. अजमल खाँ रोड, करोल बाग, नई दिल्ली – ११०००५ दूरभाष : ०११–५७२९२१८
८. 'विद्या सदन' ४५, गुजराँवाला टाउन भाग – २, दिल्ली – ११०००९ दूरभाष : ०११–७४२५१४४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्री कैलास ब्रह्मविद्यापीठाधीन आश्रम

ASHRAMAS OF SHRI KAILAS BRAHM VIDYAPEETH

- कैलासधाम प्रयागराज
- ब्रह्मानन्द आश्रम ऋषिकेश
- कैलास आश्रम उत्तरकाशी
- दशनाम संन्यास आश्रम, हरिद्वार
- राम आश्रम, समाना (पटियाला)

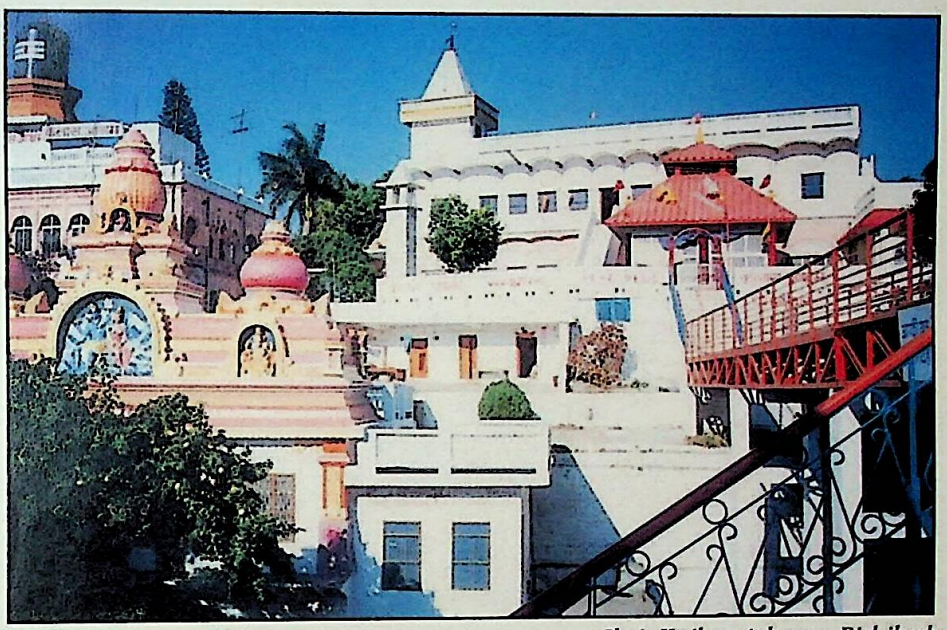

श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश

Shri Kailas Ashram Rishikesh

- श्रीकैलास विद्यातीर्थ–श्री आदि शंकराचार्य स्मारक नई दिल्ली–1
- श्री नर्वदा सत्संग आश्रम, भिलाड़िया घाट, होशंगाबाद
- कैलास विद्यातीर्थ, राजगीर (बिहार)
- शंकर ब्रह्मविद्या कुटीर मुजफ्फरनगर
- कैलास आश्रम रोहतक
- कैवल्यविद्याकान्तम् नई दिल्ली–27
- कैलास विद्याधाम जम्मू
- कैलास शांति सदन गुड़गांव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

कैलास आश्रम के अधिष्ठातृ देव श्री अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव जी का शृंगार

The decorated form of Lord Abhinavchandreshwar Ji -
The Presiding deity of Kailas Ashram Rishikesh

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

कैलास आश्रम में संस्थापित

भगवान् हनुमान जी (Lord Hanuman)

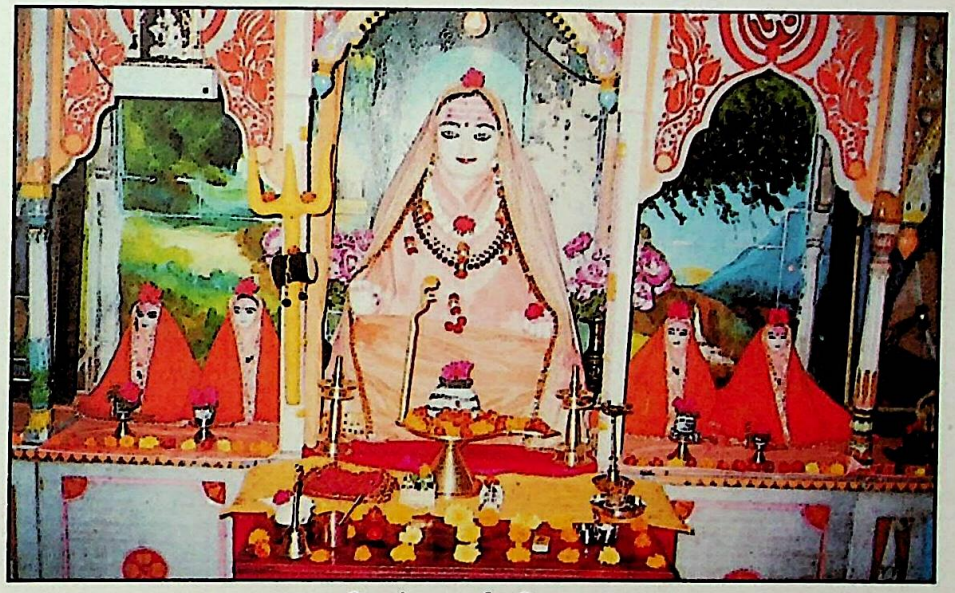

भगवान् भाष्यकार आदि शंकराचार्य जी (Adi Shankaracharya Ji)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्री कैलास आश्रम के संस्थापकाचार्य श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ
अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद स्वामी धनराज गिरिजी महाराज

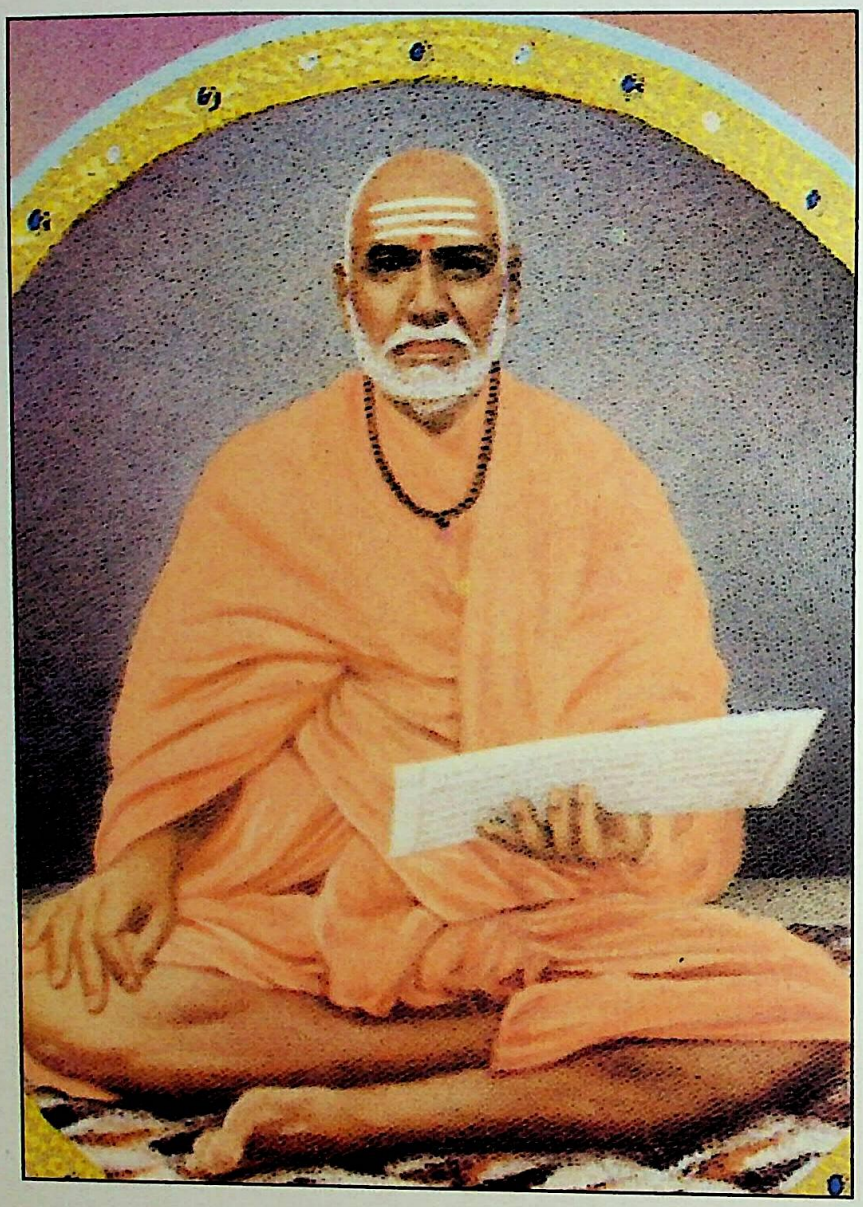

The founder of Shri Kailas Ashram - His Holiness Swami Dhanraj Giri Ji Maharaj

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्री षष्ठ कैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री विभूषित
स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज (बड़े महाराज जी) जीवनमुक्त अवस्था में

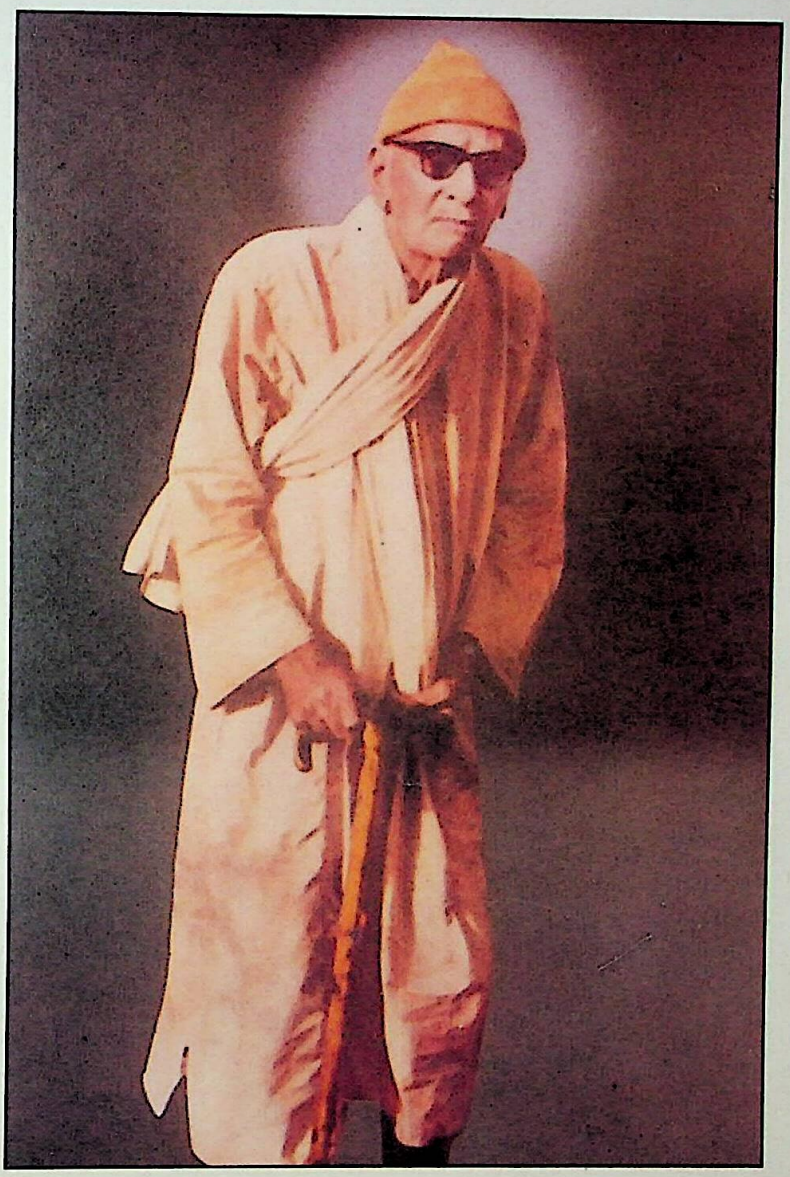

H. H. Swami Vishnudevanand Giri Ji Maharaj having the pleasure of retired life submerged in Divine bliss.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्री अष्टम कैलासपीठाधीश्वर श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ
अनन्त श्री विभूषित स्वामी चैतन्य गिरिजी महाराज (शास्त्रीजी महाराज)

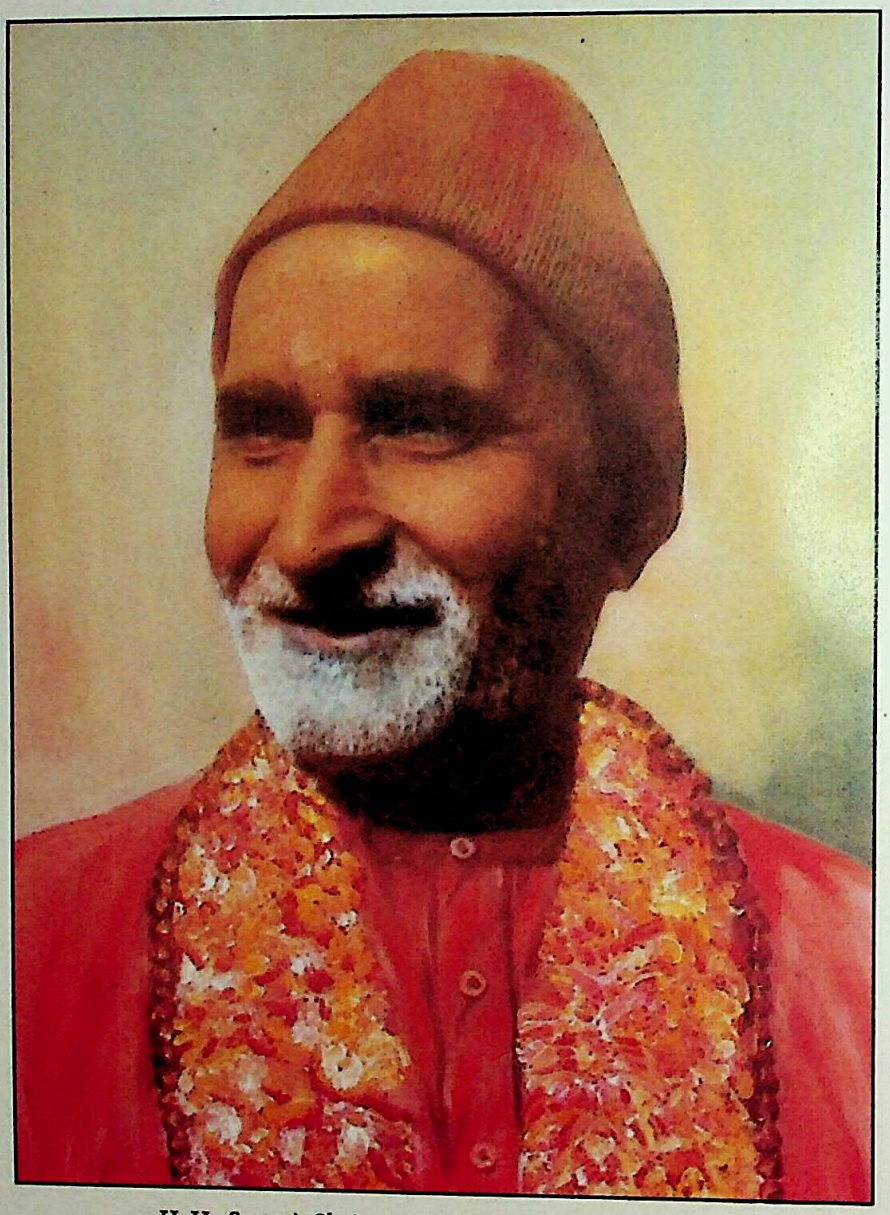

H. H. Swami Chaitanya Giri Ji Maharaj (Shastri Ji)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री दशम कैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर
अनन्त श्री विभूषित स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज

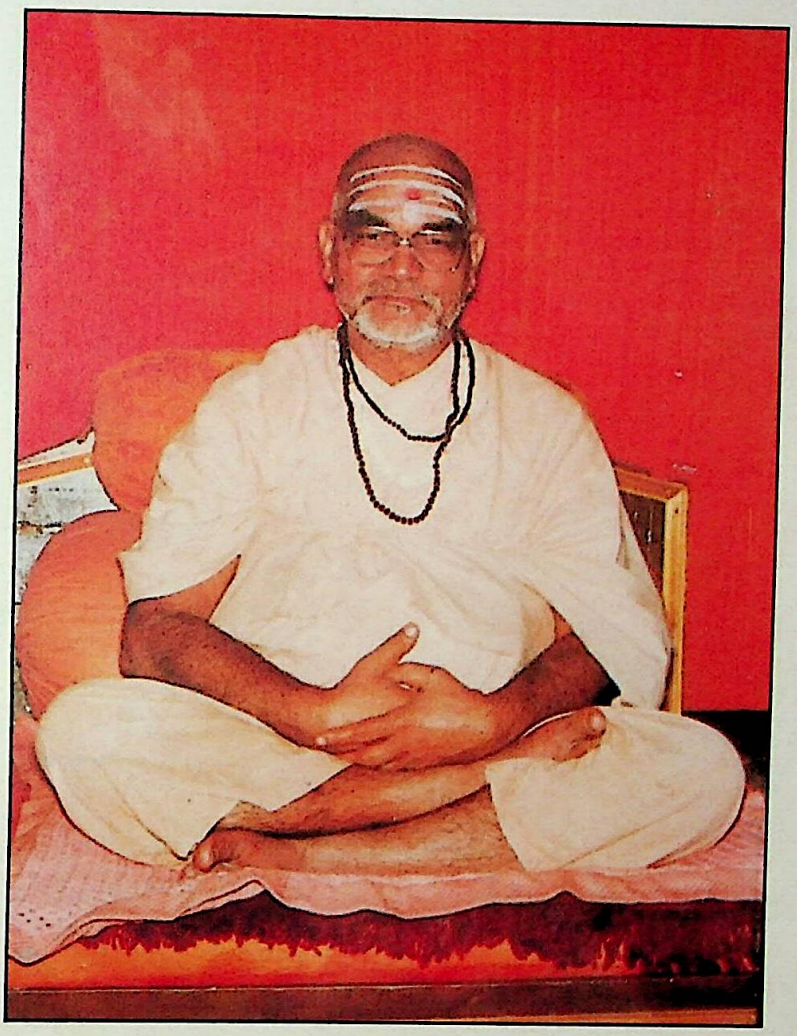

The Present Head of Kailas Ashram His Holiness
Swami Vidyanand Giri Ji Maharaj

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्व संत श्री मोरारी बापू जी भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव
की पूजा करते हुये

Vishwasant Shri Morari Bapu Ji Worshipping Lord Abhinavchandreshwar
Mahadev at Kailas Ashram Rishikesh (16-24 Nov. 1996)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

सम्पादकीय

दिशन्तु शं मे गुरुपादपांसवः

"कः पूजनीयः शिवतत्त्वनिष्ठः"

– भगवान् आदि शङ्कराचार्य

सर्वाधिष्ठान सर्वान्तर्यामी परमात्मा ही शिव रूप से प्रतिष्ठित हैं। जब शिवपूजक शिवतत्त्वनिष्ठा प्राप्त कर जगत्पूजनीय हो जाता है तो साक्षात् महादेव तो पूजनीयों के भी पूज्य हैं। कैलास आश्रम के संस्थापक महाराज श्री स्वनामधन्य प्रातः स्मरणीय अनन्तश्रीविभूषित स्वामी धनराज गिरि जी महाराज नित्य शिवपूजक थे। उनकी निष्ठा से प्रसन्न होकर महादेव अनुरोध पूर्वक वेदान्त सुनने के लिये कैलास आश्रम में पधारे। तब से गंगाप्रवाहवत् वेदान्त की अक्षुण्ण धारा यहाँ के आचार्य बहाते आ रहे हैं और अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव के दिव्य विग्रह का अभिषेक ज्ञान गंगा की इस पवित्र धारा से होता आ रहा है।

यह एक सुखद संयोग है कि श्रीदशम कैलासपीठाधीश्वर जी को अनेकों शताब्दी महोत्सव मनाने का गौरव प्राप्त हुआ जो किसी भी पूर्वाचार्य के समय में नहीं हुआ। कैलास आश्रम की शताब्दी, दिव्यविभूतिद्वय की जन्म शताब्दी, आदि जगद्गुरु शंकराचार्य जी की द्वादश शताब्दी– सभी वर्षपर्यन्त यथासमय दशम आचार्यपाद ने बड़ी धूमधाम से राष्ट्रीय स्तर पर मनाईं। इन सब से दिव्य जब कैलास के अधिष्ठातृ देव श्री अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव की शताब्दी निकट आई तो महाराजश्री ने इस को **दिव्यवर्षपंचकम्** का अनुपम स्वरूप प्रदान किया जिसमें कैलास आश्रम के २५ दिव्य महोत्सव इस शताब्दी महोत्सव के अङ्गरूप से मनाये गये। **'तस पूजा चाहिय जस देवता'** के अनुसार मुख्य शताब्दी महोत्सव पर महाराज श्री ने भगवान् अभिनवचद्रेश्वर की समाराधना के लिये **अतिरुद्र यज्ञ** की अनूठी कल्पना की और १२१ दिवसीय होमात्मक अतिरुद्र यज्ञ अमानवीय यजमान भगवान् श्रीगणेश जी एवं ऋद्धि–सिद्धि द्वारा सम्पन्न करवाया।

दिव्य वर्ष पंचकम् के २५ महोत्सवों में षष्ठकैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर विद्यावचस्पति स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज (बड़े महाराज जी) एवं अष्टम कैलासपीठाधीश्वर आचार्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामण्डलेश्वर स्वामी चैतन्यगिरि जी महाराज (शास्त्री जी) का निर्वाण रजत महोत्सव भी विशिष्ट स्थान रखते हैं। यह दोनों गुरुवर बड़े लोकप्रिय एवं अनुमप विद्वान् महापुरुष हुये। दिव्य–वर्षपंचकम् के केवल यही दो महोत्सव हैं जिनकी पूर्णाहुति शेष रह गई है। दोनों आचार्यों की शास्त्र निष्ठा एवं शास्त्राधिकार अद्‌भुत था। अतः दशम आचार्यपाद ने इनके उक्त महोत्सव मनाने में दिव्य शास्त्र रचना एवं प्रकाशन को मुख्य स्थान दिया। ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य, रत्नप्रभा टीका, टिप्पणियों एवं हिन्दी ललिता व्याख्या सहित एवं श्रीमद्‌भगवद्गीता शांकरभाष्य, आनन्द गिरि टीका, टिप्पणियों एवं हिन्दी ललिता व्याख्या सहित छपवाकर पूज्य बड़े महाराज जी एवं पूज्य शास्त्री जी महाराज की पुण्य स्मृति में विमोचन कराने का पवित्र विचार महाराज श्री ने किया। दिन रात एक करके महाराज श्री ने दोनों ग्रन्थों पर हिन्दी ललिता व्याख्या लिखी और दोनों पुस्तकों का प्रकाशन कार्य द्रुत गति से हो रहा है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत श्रद्धासुमनाञ्जलि में भी अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव की शताब्दी प्रसंग के अतिरिक्त मुख्य रूप से इन्हीं दो गुरुवरों को श्रद्धा सुमन अर्पणार्थ सामग्री जुटाई गई है। जनमतानुसार इन दोनों गुरुओं के यश को महाराज श्री ने जितना उजागर किया है उसको शब्दों द्वारा कहना अत्यन्त दुष्कर है।

श्रद्धासुमनाञ्जलि में परमपूज्य बड़े महाराज श्री द्वारा रचित **वेदान्तरत्नाकर** ग्रन्थ, उस पर शास्त्री जी महाराज द्वारा लिखी हिन्दी व्याख्या में से दशमपीठाधीश्वर जी द्वारा चयन किया गया अनुवादमात्र एवं अंग्रेजी अनुवाद का समावेश किया गया है। तत्रस्थ उपदेशों को जीवन में उतारने का प्रयास करना इन महापुरुषों के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

महाराज श्री द्वारा जिस भगवत्पादीय दिव्युगारम्भ का संकेत उन के प्रवचनों में श्रोताओं को मिला उस पर एक लेख देने की मैंने उन से प्रार्थना की। महाराजश्री ने कृपापूर्वक इस विषय पर अपने विचार लिखे और इसी लेख में भगवान् अभिनवचन्द्रेश्वर जी एवं दोनों गुरुवरों को श्रद्धासुमनाञ्जलि समर्पित कर अपार हर्ष का अनुभव किया। उनके इस लेख को भी श्रद्धासुमनाञ्जलि में दिया है। इसके अतिरिक्त दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी द्वारा बड़ा सुन्दर लेख आश्रम की उपलब्धियों पर हमें अमृताञ्जलि के लिए बिलम्ब से प्राप्त हुआ। अतः अमृताञ्जलि में समावेश न करके श्रद्धासुमनाञ्जलि के लिये भी अत्यन्त शोभनीय प्रतीत होने के कारण यहाँ दे रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धासुमनाञ्जलि को छपवाने का पावन संकल्प भक्त देसराज चानना एवं माता वीराँवाली चानना, मोती नगर, दिल्ली के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री गोवर्धन लाल चानना ने किया था। उनकी भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव, बड़े महाराज जी एवं शास्त्री जी महाराज तथा कैलासपीठ के अन्य आचार्यों के चरण कमलों में प्रगाढ़ भक्ति है। श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज के आदेशों की तो वे प्रतीक्षा करते रहते हैं कि कब महाराज श्री हमें कोई सेवा के लिये आदेश दें और हम उस सेवा को समर्पित कर धन्य हों। ऐसी दानवीरता एवं उदारता और नम्रता के उदाहरण मिलने कठिन हैं। उन्हें कोटिशः साधुवाद है।

अन्त में **श्रद्धासुमनाञ्जलि** भगवान् अभिनवचन्द्रेश्वर जी के पावन पादपद्मों में समर्पित करते हैं कि जिन की कृपालेश से ही सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। हरिः ॐ तत्सत्।

महाशिवरात्रि पर्व वि.सं. २०५३
(७.३.१९९७ ई.)

गुरुपादानुरागी
स्वर्ण लाल तुली
४५, गुजरांवाला टाउन भाग – २
दिल्ली – ११०००९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

EDITORIAL

'SHRADHASUMANANJALI' is a commemorative volume brought out on the successful completion of the five year long centenary celebrations (Divya Varsha Panchakam) of the installation of Lord Abhinavchandreshwar in Kailas Ashram one hundred years ago. Of the 25 important events included in these celebrations the functions relating to the Silver Jubilee of the Nirvana day of the two great Acharyas - His Holiness Swami Vishnudevanand Giri Ji Maharaj and His Holiness Swami Chaitanya Giri Ji Maharaj will be concluded on 28th April 1997 and 27th Sept. 1997 respectively. 'Shradhasumananjali' specially focuses on the pious memory of these two greatly loved Acharyas and include a masterpiece poetry of 108 sanskrit shlokas authored by the former Acharya and translated into Hindi by his able disciple, the latter Acharya to form a Rosary of Pearls collected from the ocean of Vedantic thoughts. (This collection has incidentally been rightly named by the learned author as Vedanta-Ratnakar). I have, with Acharyas' grace ventured to render the English translation to increase the usefulness of this publication.

The credit for sponsoring this book like various previous publications goes to gracious Shri Goverdhan Lal Chanana of Jaimala Purse Emporium, Karol Bagh, New Delhi.

I wish to dedicate this book to the presiding deity of Kailas Ashram the Ever- compassionate Lord Abhinav Chandreswara Ji whose Grace on devotees knows no bounds.

In the service of Gurudeva,
Swaran Lal Tuli.
45 Gujranwala Town, Part II
Delhi-110009

Mahashivaratri 1997

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव

"एकोऽहं बहुस्याम्" इस श्रुति वाक्यानुसार एक ही परमात्मा नाना रूपों में भास रहा है। ब्रह्मारूप से संसार को रचकर विष्णुरूप से प्राणियों के कार्मानुसार उनका पालन करना और कर्म के उपरत होने पर रुद्ररूप से संसार का संहार करना भी उस परमात्मा का ही कार्य है। इतना ही नहीं, प्रत्युत वेदानुकूल आचरण करने वाले भक्तों पर अनुग्रह और वेद विरुद्ध आचरण करने वाले दुष्टों का निग्रह भी परमात्मा करता है। साथ ही वैदिक सनातन धर्म की संस्थापना भी करता है। इस प्रकार भगवान् के अनेकों अवतार भी समय समय पर होते रहते हैं। इनमें भगवान् शिव और विष्णु परमात्मा के नित्य विग्रह माने जाते हैं जो वास्तव में अभिन्न हैं, परन्तु भक्तों की भावनानुसार उनको तत्तद् रूप में दर्शन देते हैं। अनादिकाल से परमात्मा की शिव रूप में आराधना देव, मनुष्य, नाग असुर इत्यादि करते आ रहे हैं। मनुष्यों में प्रत्येक वर्ग एवं जाति के लोग भगवान् शंकर की भक्ति करते देखे गये हैं। भगवान् शिव कृपासिन्धु हैं और आशुतोष होने से शीघ्र प्रसन्न होकर अभीष्ट फल प्रदान करते हैं। निवृत्ति परायण संन्यासी विशेष रूप से शिवाराधक देखे जाते हैं क्योंकि भगवान् शंकर सभी विद्याओं के आचार्य एवं गुरु हैं।

जब बौद्धों द्वारा वैदिक सनातन धर्म का ह्रास पृथ्वी पर हुआ तो विष्णु आदि देवताओं ने भगवान् शंकर से ही अवतार लेने की प्रार्थना की थी और तब वे आदि शंकराचार्य के रूप में अवतरित हुये थे। उन्होंने अपनी विद्वत्ता, निष्ठा और सदाचार के बल पर सभी विधर्मियों को परास्त कर वैदिक धर्म की पुनः स्थापना की। उन्होंने अपने चार प्रधान शिष्यों को भारत के चार कोनों में एक–एक मठ के संचालन का भार सौंपा ताकि वैदिक सनातन धर्म के व्यापक प्रचार के साथ साथ भारत की अखण्डता भी अक्षुण्ण रूप से बनी रहे। कुछ काल से इन मठों के कार्य में कुछ शिथिलता आने लगी। विशेष कर उत्तराम्नाय में कोई योग्य विद्वान् शांकरीविद्याप्रचार को सुचारू रूप से चलाने के लिये नहीं रहे। तब भगवत्कृपा से एक महापुरुष का पंजाब की पावन धरती पर पादुर्भाव हुआ जिन्होंने संन्यास के अनन्तर ऋषिकेश को अपनी तपःस्थली बनाया। उनका वेदान्त ग्रन्थों पर पूर्ण अधिकार था और तत्र प्रतिपादित ब्रह्मविद्या में निष्ठा थी। आप बिना कोई आश्रम या मठ बनाये काफी समय तक शांकरी विद्या का स्वाध्याय जिज्ञासु महात्माओं को गंगा किनारे प्राकृत वातावरण में कराते रहे। बाद में आग्रह पूर्वक पुस्तकों की सुरक्षा के लिये टिहरी नरेश ने एक कमरा बनाने की आप से अनुमति ले ली। उसी के साथ कैलास आश्रम ऋषिकेश की संस्थापना हुई ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋषिकेशस्थ कैलास आश्रम की सन् १८८० ई. में संस्थापना से पूर्व संस्थापक महाराजश्री स्वनामधन्य श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ अनन्त श्रीविभूषित स्वामी धनराजगिरि जी महाराज मुनिकी रेती बगीची में रहते थे। आप चन्द्रभागा में अवस्थित भगवान् चन्द्रेश्वर महादेव की अर्चना ब्राह्ममुहूर्त में ४ बजे प्रातः तक सम्पन्न कर लेते थे। तत्पश्चात् भ्रमणादि के अनन्तर तीनों प्रस्थानों का स्वाध्याय करवाते थे। महाराज श्री के शिवपूजन आदि कृत्य आश्रम संस्थाना के बाद भी वैसे ही चलते रहे। आप की निष्ठा, पाण्डित्य एवं भक्ति से आशुतोष भगवान् चन्द्रेश्वर अत्यन्त प्रसन्न हुये और आप से वेदान्त श्रवण करने की लीला करने के लिए उसी प्रकार लालायित हुए जैसे मराल वेष में काकभुशुण्डि जी से रामचरितमानस सुनने के लिए हुए थे। एक रात्रि भगवान् शंकर ने स्वामी जी महाराज को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि मैं कनखल में सेठ भारामल की बगीची में गंगा तट पर पड़ा हुआ हूँ। गंगा जी की धारा मेरा बाण बहाने ही वाली है। अतः आप शीघ्र ही मुझे वहाँ से अपने पास ले आओ। महाराज श्री ने भगवदादेश का पालन करते हुए तुरंत कनखल जाकर उस दिव्य लिङ्ग को प्राप्त किया और उसमें अपने उपास्य चन्द्रेश्वर महादेव की भावना करते हुए उन्हें अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव की सुन्दर संज्ञा देकर कैलास आश्रम में माघ शु. ७ (अचला सप्तमी) वि.सं. १९५३ को संस्थापित किया। यह सब करने के बाद महाराज श्री को भगवान् की यथोचित पूजा भोगादि की चिन्ता हुई, किन्तु भगवान् ने उन्हें पुनः स्वप्न में दर्शन देकर आश्वासन दिया कि आप केवल मुझे वेदान्त सुनाते रहें, शेष सब व्यवस्था मेरी प्रेरणा एवं कृपा से स्वतः चलती रहेगी। तभी से कैलास आश्रम के सभी आचार्य भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर जी को ही मुख्य श्रोता मानकर वेदान्त का गंगाधारावत् अक्षुण्ण पाठ चलाते आ रहे हैं। फलतः आश्रम की व्यवस्था में भगवत्कृपा से किसी प्रकार की कमी नहीं आई।

अपनी इच्छा से पधारे महादेव आज भी कैलास आश्रम में उसी स्थान पर विराजमान हैं और भक्तों को मनोवाञ्छित फल प्रदान करते हैं। उनका दर्शन अमोघ है ऐसा संत महापुरुष मानते हैं। सामान्यतः देव प्रतिमाओं में सजीव देव भावना करने के लिए भक्तों को विशेष साधना रूपी बल लगाना पड़ता है। परन्तु भगवान् अभिनवचन्द्रेश्वर के विग्रह में उक्त लीला का स्मरण करते ही सहज में ही देवत्व सजीव हो जाता है। इस दिव्य विग्रह की महिमा से ही भारत की विश्वविख्यात विभूतियाँ स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी अभेदानन्द जी, स्वामी रामतीर्थजी कैलास आश्रम में आये और वेदान्त श्रवण किये। कितने ही महापुरुषों द्वारा पूजित हुये इस दिव्य लिङ्ग की महिमा दिन प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त हो रही है। विशेषतया वर्तमान दशम कैलास पीठाधीश्वर जी महाराज का दृढ़ विश्वास है कि कैलास आश्रम के ब्रह्मलीन सभी पूर्वाचार्य भगवान् अभिनव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चन्द्रेश्वर में समाहित हैं। अतः इनकी दिव्यता एवं गरिमा शिवधनुष की भांति उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो रही है।

तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ।
मनहुँ पाइ भट बाहुबल अधिक अधिक गरुआइ।।

भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर जी की शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में महामण्डलेश्वर जी महाराज ने दिव्यवर्षपंचकम् का आविष्कार किया। इसी पावन शताब्दी प्रसंग पर अतिरुद्र यज्ञ द्वारा भगवान् की अनुपम समाराधना हुई। महाशिवरात्रि पर इन शताब्दी महोत्सवों की पूर्णाहुति करके महामण्डलेश्वर जी महाराज, सन्तों एवं भक्तों ने परम संतोष का अनुभव किया।

भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर में भक्तों की सजीव भावना कितनी दृढ़ है इस का उदाहरण दिल्ली के भक्त श्री गोवर्धन लाल चानना जी के जीवन में देखने को मिलता है। उन्होंने एक बार यह विचार किया कि महादेव कैलास पर्वत पर सदा निवास करते हैं जहाँ चारों ओर बर्फ ही बर्फ होती है। इससे उन्हें ठण्डे प्रदेश में रहने का अभ्यास है। इस के विपरीत कैलास आश्रम ऋषिकेश में अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव गर्मी में रहते हैं। तो क्यों न उनके मन्दिर को एअर कण्डीशणर द्वारा ठण्डा रखा जावे। इस अत्यन्त सरल एवं भावात्मक विचार को चानना जी ने मण्डलेश्वर जी महाराज के सन्मुख रखा और उनसे प्रार्थना की कि आप हमें भगवान् के मन्दिर में एअर कण्डीशणर लगाने की अनुमति प्रदान करें। महाराज श्री उनकी श्रद्धा एवं बालवत् सरलता से अत्यन्त संतुष्ट हुए और उन्हें इस कार्य की अनुमति दे दी। चानना जी ने तुरंत एक बढ़िया एअर कण्डीशणर भगवान् के मन्दिर में फिट् करवा दिया जो आज भी वहाँ विद्यमान है।

कैलास की सभी शाखाओं में भगवान् शंकर के सुन्दर मन्दिर और उनमें मनोहर नाम–रूप सम्पन्न विग्रह विराजमान हैं। ब्रह्मानन्द आश्रम ऋषिकेश में **उमेश्वर महादेव**, दशनाम संन्यास आश्रम हरिद्वार में **हरीश्वर महादेव**, कैलासविद्यातीर्थ–आदिशंकराचार्य स्मारक नई दिल्ली में **भगवत्पादेश्वर महादेव**, कैलास आश्रम रोहतक में **रामेश्वर महादेव** एवं कैलासविद्यातीर्थ राजगीर में **अभिनव वैद्यनाथ महादेव** (मन्दिर निर्माणाधीन) परम उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार शिवभक्ति द्वारा परमानन्द प्राप्ति का प्रशस्त मार्ग अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव जी की कृपा से सुलभ हुआ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

SHRI ABHINAVCHANDRESHWAR MAHADEVA - THE PRESIDING DEITY OF KAILASH ASHRAM.

Kailas Ashram, Rishikesh was founded in 1980 by His Holiness Swami Dhanraj Giri ji Maharaj - an exalted saint of rare calibre. He imbibed in him the qualities of an accomplished teacher, a true friend and a great devotee of Lord Shiva. Saints from far and near used to come to him daily to listen to his elegant discourses and lessons on Vedanta and related subjects. All the saint and Sanyasis of that region held him in very high esteem. Swami Dhanraj Giri ji Maharaj had the rare distinction of having the world renowned saint Swami Vivekanand ji, Swami Abhedanand ji and Swami Ramtirth ji among his audience. These luminaries stayed at Kailas Ashram Rishikesh for different periods and received instructions and guidance from him on the principles of Vedantic Philosophy.

Swami Dhanraj Giri ji was a very early riser. He daily worshipped at the temple of Lord Chandreswara Mahadev located in the rivulet Chandrabhaga which merges into the Holy Ganga. Pleased with the Swamiji's devotion Lord Shiva one night, as if in a dream, appeared before Swamiji and told him about a place near Haridwar where a Shivalinga was lying in a depleted temple just on the bank of the Ganga. The current of the Ganga was slowly cutting into the temple and the Shivalinga was about to be submerged. Lord Shiva wanted Swamiji to bring the Shivalinga to Kailas Ashram immediately from that place. Lord Shiva further said that He would like to listen to the daily discourse on Vedanta in Kailas Ashram through this Shivalinga. At first Swamiji dismissed the vision as mere dream but when the same vision and words were repeated soon, he took it seriously as the command of the Lord. Swamiji immediately started on foot for Haridwar. He in a couple of hours reached the particular place and was immensely pleased to find the temple and Shivalinga exactly as per the description of the Lord. Swamiji respectfully picked up the Shivalinga and brought it to Kailas Ashram. The Shivlinga was installed in accordance with the sacred rites in the Ashram in 1897. The holy Shivalinga was named by Swamiji as Abhinav (new) Chandreswara after the name of his favourite deity situated in Chandrabhaga rivulet. As per the desire of the Lord, henceforth Swamiji started taking Vedanta class facing the deity.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

While on one hand Swamiji was happy to instal the Lord Shiva in the Ashram, on the other he was worried about worship of the deity with suitable offerings as enjoined in the scriptures. Realising the anxiety of Swamiji the Lord, in a sacred vision to Swamiji, assured him that he need not worry about the articles of worship and other requirements of the Ashram as these would be arranged by His grace while He listens to discourses on Vedanta. From that day onwards all the Acharayas of Kailas Ashram have been delivering daily lectures on Vedantic scriptures with the firm conviction that the principal listner is Lord Abhinav Chandreshwar and with the Grace of the Lord the needs of the Ashram are smoothly met.

Kailas Ashram flourished greatly with Lord's arrival and its fame as a remarkable and sole centre of learning of spiritual sciences spread far and near. Evergraceful Lord Abhinav Chandreshwara has been bestowing his blessings on sincere devotees for the last one hundred years and has gained the singular reputation of granting the wish of devotees who visit the Ashram and pray to the Lord sincerely.

The present head of the Ashram His Holiness Swami Vidyanand Giri ji Maharaj has declared unequivocally that all the previous Acharyas of Kailas Ashram have merged into Shri Abhinav Chandreswara; thus enhancing its glory and gracefulness. The centenary celebrations of Lord Abhinav Chandresheewara were started by His Holiness in 1992 in a noval way. The period of five years (1992-97) was named as Divyavarshapanchkam meaning five glorious years. 25 important events related to Kailas Ashram were selected thoughtfully and the celebrations of these events during the five year period were dedicated to Lord Abhinav Chandreshwar ji. Another new concept of worship of Lord through Atirudrayajna lasting 121 days was introduced during the centenary celebrations of the Lord by His Holiness. As per this method of oblation 11 couples observing the necessary austerities worshipped the Lord for 11 days each, from 13.10.96 to 10.2.97. Be glory to the Lord Abhinav Chandreshwara ji.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

षष्ठ कैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर विद्यावाचस्पति अनन्त श्रीविभूषित स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज (बड़े महाराज जी)

ब्रह्मविद्यापीठ श्रीकैलास आश्रम के पूर्वाचार्यों में सर्वाधिक यशस्वी विद्यावाचस्पति परम पूज्य श्री स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज हुए हैं जिन्हें सन्त एवं भक्त बड़े आदर एवं प्रेम से बड़े महाराज जी के नाम से पुकारते थे।

जन्म एवं शिक्षा

धर्मप्रधान सौराष्ट्र प्रदेश के भावनगर मण्डलान्तर्गत एक ग्रामीण वैष्णव ब्राह्मण परिवार में श्री स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज का जन्म हुआ था। माता–पिता ने इस नवजात का नाम विष्णुदास हरियाणी रखा। निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित होने के कारण इस वंश में पैदा हुए सभी भक्तों का नाम हरिदासी हुआ करता था। कालान्तर में उसी हरिदासी शब्द को लोग हरियाणी कहने लगे। इस वंश की पवित्रता, धर्मनिष्ठा और परमेश्वरानुरक्ति प्रसिद्ध है जो आज इस कुल में उत्पन्न सुपुत्र रामभक्त, विश्वसन्त श्री मोरारी बापू के कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात हो गई है। श्री मोरारी बापू के दादाजी का नाम श्री त्रिभुवनदास जी हरियाणी था। इन्हीं के कनिष्ठ भ्राता श्री विष्णुदास जी हरियाणी बाल्यावस्था से ही विरक्त स्वभाव, धर्म एवं ईश्वर में पूर्ण निष्ठा रखने वाले थे। पिता तथा ज्येष्ठ भ्राता की अनुमति से अध्ययन के लिए आप सूरत गए। वहाँ से सरस्वती की क्रीड़ास्थली काशी गये जहाँ नव्य व्याकरण, साहित्य तथा दर्शन विषय को लेकर तीन बार सम्पूर्ण मध्यमा परीक्षा आपने उत्तीर्ण की और जिसके फलस्वरूप संस्कृत भाषा, दर्शन शास्त्र और साहित्य में आपका अच्छा प्रवेश हो गया। वेदान्त अध्ययन अभिलाषा को लेकर आप ऋषिकेश कैलास आश्रम में पहुँचे। तब से सदा–सदा के लिए आप कैलास आश्रम के ही हो गए।

संन्यास दीक्षा

कैलास आश्रम के तत्कालीन पीठाचार्य श्री स्वामी जनार्दन गिरि जी महाराज के पवित्र कर–कमलों द्वारा आपका संन्यास संस्कार सम्पन्न हुआ। तब से आपका नाम स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि पड़ा। उस समय कैलास आश्रम के प्रसद्धि सन्तों में से विद्यानिधि श्री स्वामी प्रकाशानन्द पुरी जी महाराज तथा श्री स्वामी गोविन्दानन्द गिरि जी महाराज सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त आचार्य थे। इन दोनों महापुरुषों ने अपने जीवन में अर्जित समस्त विद्याओं का उत्तराधिकारी आपको ही समझा। लघु प्रस्थानत्रयी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का अध्ययन आपने स्वामी गोविन्दानन्द गिरिजी महाराज से किया और बृहत् प्रस्थानत्रयी का अध्ययन विद्यानिधि श्री स्वामी प्रकाशानन्द पुरीजी महाराज से किया। दोनों आचार्यों से अधीत ग्रन्थों पर लिखी गई टिप्पणियों द्वारा आपके अध्ययन की गहराई का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। सटिप्पण आनन्द गिरि टीका एवं शांकरभाष्य सहित ईशादि दश उपनिषदों का प्रकाशन कैलास आश्रम शताब्दी प्रसंग पर हो चुका है। अब ब्रह्मसूत्र एवं श्रीमद्भगवद्गीता का प्रकाशन भी टीका–टिप्पणी सहित हो रहा है। टिप्पणियों के मूल कल्पक तो श्री स्वामी गोविन्दानन्द गिरि जी महाराज थे। किन्तु उनका परिष्कारकर सुचारु रूप देने वाले श्री स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज हुए। कुछ मौलिक ग्रन्थों की रचना भी आपने की जिनमें वेदान्त–रत्नाकर वैराग्य ज्ञान तथा भक्ति का त्रिवेणी संगम माना जाता है और जो इस श्रद्धासुमनाञ्जलि में मुख्य रूप से समाविष्ट किया गया है। तर्क शास्त्र का भी अध्ययन, सुकुमार बुद्धि से अवगाह्य काव्य एवं साहित्य का अनुशीलन तथा वेदान्त शास्त्र के समस्त ग्रन्थों का परम्परया अध्ययनकर अनुपम वैदुष्य के सम्पादन के साथ वैराग्य एवं ब्रह्मनिष्ठा आपश्री में कूट–कूट कर भरे हुए थे। एक ही व्यक्ति के जीवन में इन सभी का सामंजस्य अत्यन्त दुर्लभ है जो आपमें देखा जाता है। आपने अपने समस्त दैवीगुणों के कारण न केवल कैलास आश्रम की श्रीवृद्धि की, अपितु समस्त साधु समाज और विशेषतः दशनाम संन्यासी समाज के मुकुटमणि आप कहलाने लग गये। आपके सम्पर्क में आने वाले भक्त तथा सन्त अपने में बड़े गौरव का अनुभव करने लगे एवं उदात्त स्वरों में बोलते हैं कि हमने कैलास आश्रम के बड़े महाराजजी से शिक्षा और दीक्षा प्राप्त की है। ब्रह्मविद्यापीठ कैलास आश्रम से जुड़े हुये आपके जीवन को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है :–

१. विद्यार्थी जीवन
२. प्रौढ़ विद्वान् जीवन
३. पीठाचार्य जीवन
४. समस्त दायित्व को छोड़ जीवनमुक्तों का जीवन

इन सभी अवस्थाओं में आप अनुपम रहे और संस्था के प्रति समर्पित रहे।

विद्याव्यसनी स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी को महामण्डलेश्वर पद स्वीकार करना सर्वथा अभिमत नहीं था। आप के गुरुदेव चतुर्थ कैलासपीठाधीश्वर स्वामी गोविन्दानन्द गिरि जी महाराज सहारनपुर रहा करते थे और पंचम कैलासपीठाधीश्वर स्वामी प्रेमपुरी जी महाराज विरक्त स्वभाववश पीठाचार्य का दायित्व छोड़कर स्वतन्त्र भ्रमण करते थे। कैलास आश्रम में अध्यापन का प्रमुख दायित्व तब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी ही निभा रहे थे। प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि पर संन्यास दीक्षा देने का काम भी आप ही उन दिनों करते थे। आश्रम व्यवस्था स्वामी पूर्णानन्द गिरिजी देखते थे। स्वामी पूर्णानन्द गिरिजी आश्विन कृ. सप्तमी वि.सं. १९९४ को ब्रह्मलीन हो गये। अंब तो स्वामी गोविन्दानन्द गिरिजी महाराज पर ही पीठाचार्य का भार पुनः आ गया। स्वामी गोविन्दानन्द जी महाराज ने एक दिन आपको सहारनपुर बुलाया। गुरुदेव की आज्ञा पाकर आप अपने शिष्यमण्डल सहित सहारनपुर उनके पास पहुँचे। तब गुरुदेव ने आपको कैलासपीठ पर आसीन होने को कहा। रुचि न होते हुए भी "आज्ञा गुरूणां परिपालनीया" के अनुसार आप ने उनकी आज्ञा स्वीकार कर ली और अभिषेक के समय ऋषिकेश पधारने की उनसे प्रार्थना की। वि. सं. १९९४ के वार्षिक उत्सव पर अत्यन्त धूमधाम से कैलासपीठ पर आप को गुरुदेव की पावन उपस्थिति में विधिवत् आसीन किया गया।

कैलासपीठ पर आप १२ वर्षों तक विराजमान् रहे। तत्पश्चात् स्वाभाविक उदासीनता एवं स्वास्थ्य की शिथिलता के कारण पदभार स्वामी निर्दोषानन्द गिरि जी को सौंप दिया और स्वयं जीवन–मुक्ति का आनन्द लेते हुए उत्तरकाशी में १२ वर्षों तक निवास किया। यह आप को ही श्रेय प्राप्त है कि आप के बाद चार कैलासपीठाधीश्वर आपके जीवन काल में आप की छत्रछाया में इस पीठ पर आसीन हुए। आप वैशाख कृष्ण षष्ठी वि. सं. २०२९ को ब्रह्मलीन हो गये।

पूज्य बड़े महाराज जी को अपने जीवन काल में बहुत यश मिला। वर्तमान दशम पीठाधीश्वर जी के कैलास आश्रम में आगमन के पश्चात् एवं उनके कार्य कलाप को देखकर कैलास आश्रम संबन्धी समस्त चिन्ता दूर होने से पूज्य बड़े महाराज जी को अपार प्रसन्नता एवं परम संतोष का अनुभव हुआ। मण्डलेश्वर जी महाराज ने कैलासपीठासीन होने के साथ ही कैलास आश्रम की शताब्दी और पूज्य बड़े महाराज जी की जन्म शताब्दी साथ–साथ उनके जीवन काल में ही मनाने का संकल्प मन में किया था, किन्तु आपकी १९७२ ई० में ब्रह्मलीनता हो जाने से वह कैलास आश्रम की शताब्दी १९८० में मनाने तक ही सीमित रह गया। पुनः जब कुछ संतों की ओर से बड़े महाराज श्री की जन्म शताब्दी मनाने का प्रस्ताव मण्डलेश्वर जी के सामने आया तो पूर्वकृत संकल्प दुगुणी श्रद्धा सद्भावनापूर्वक जागृत हो गया। अतः १९८५ – ८६ में एक वर्ष पर्यन्त अत्यन्त उत्साह और उल्लास पूर्वक बड़े महाराज श्री की जन्म शताब्दी मनाई गई। दशम महाराज श्री महोत्सव मनाने का अर्थ इतना ही नहीं समझते कि जन्म दिन या निर्वाण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिवस पर बाजे बजें, मिष्ठान्न पकें, सभी प्रसाद ग्रहण करें और जयजयकार के साथ उस महोत्सव को पूर्ण कर दिया जाय; बल्कि ऐसे महोत्सवों पर रचनात्मक कार्य हों अथवा रचनात्मक कार्य करने का सफल संकल्प लें। तदनुसार इस महोत्सव के पावन प्रसंग पर निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए।

१. हर भगवान् सत्संग भवन का निर्माण

२. विष्णुधाम (ब्रह्मविद्यापीठ श्री कैलास आश्रम छात्रावास) का निर्माण

३. चैतन्यधाम (स्वामी चैतन्य गिरि धर्मार्थ चिकित्सालय)

४. उत्तरकाशीस्थ कैलास आश्रम में हरिहर पाकशाला, भोजनालय तथा कैलास घाट का निर्माण

५. आद्य शंकराचार्य जलागार तथा भोजनालय का संस्कार

६. तीर्थ कुटीर का विस्तार तथा संस्कार

६. रोहतक में कैलास आश्रम का शिलान्यास

८. विष्णुधाम में पूज्य बड़े महाराज जी की मूर्ति की स्थापना

९. श्री अमर नाथ यात्रा

१०. विश्वसंत श्री मोरारी बापू की राम कथा

११. डॉ. राम तवक्या शर्मा जी की राम कथा

निर्वाण रजत महोत्सव

प्रत्येक वर्ष वैशाख कृ. षष्ठी को बड़े महाराज जी का निर्वाण दिवस महोत्सव मनाया जाता है। मण्डलेश्वर जी महाराज अपनी अपूर्व आचार्यनिष्ठा के फलस्वरूप पूर्वाचार्यों के सुयश को उजागर करने के नये–नये प्रसंगों का अविष्कार करते आ रहे हैं। अतः पूज्य बड़े महाराज जी का और शास्त्री जी महाराज का निर्वाण रजत महोत्सव, रचनात्मक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों द्वारा, वैशाख कृ. षष्ठी वि. सं. २०५३ से आश्विन कृष्ण एकादशी वि. सं. २०५४ तक मनाने का निश्चय उन्होंने किया। इसके लिये महाराज श्री ने एक महासमिति का गठन कई वर्ष पहले ही किया। मुख्य नगरों में भी समितियों का गठन करके भक्तों को इन महोत्सवों में खुलकर भाग लेने और इन दो दिव्य विभूतियों के प्रति श्रद्धासुमनाञ्जलि समर्पित करके अक्षय पुण्यलाभ लेने की शुभ प्रेरणा प्रदान की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशन माला

सर्वप्रथम श्री शिवमहिम्नः स्तोत्र की २५००० प्रतियाँ छपवाकर इन दोनों महापुरुषों के पुण्य स्मरण में समर्पित की गयीं। ब्रह्मसूत्र को शांकरभाष्य, रत्नप्रभाटीका, पूज्य बड़े महाराज जी की टिप्पणियों एवं हिन्दी ललिता व्याख्या सहित छपवाकर दिव्यविभूतिद्वयनिर्वाण रजत महोत्सव पर प्रकाशित करने का निश्चय हुआ। इसके प्रथम चरण में चतुःसूत्री का विमोचन गत वर्ष वैशाख मास में आदिशंकराचार्य स्मारक नई दिल्ली के उद्घाटन प्रसंग पर हुआ। इसी प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता का शांकर भाष्य, आनन्दगिरि टीका, बड़े महाराज श्री की टिप्पणियों और हिन्दी ललिता व्याख्या का प्रकाशन भी इस प्रसंग पर हो रहा है।

पूज्य बड़े महाराज श्री और पूज्य शास्त्री जी महाराज के प्रति रचनात्मक, अति पावन श्रद्धाञ्जलि उक्त प्रकाशनों से बढ़कर उनके निर्वाण रजत महोत्सवों पर सम्भवतः नहीं हो सकती।

चमत्कारी घटनायें

पूज्य बड़े महाराज श्री का सम्पूर्ण जीवन वृत्तान्त अत्यन्त शोभनीय है। आप के प्रचार क्षेत्रों में सरगोधा, लायलपुर, सहारनपुर, फलौदी (राजस्थान) विशेष उल्लेखनीय हैं जहाँ के भक्त आपको कभी भूल नहीं सकते और आप की कई चमत्कारी घटनाओं का उल्लेख करते हैं। आपका एक बार फलौदी में चातुर्मास चल रहा था। वर्षा ऋतु में भी वर्षा के अभाव से सभी संत्रस्त हो रहे थे। वहाँ के भक्त पूज्य बड़े महाराज जी को सूखा से पीड़ितों की दशा का वर्णन करते और उनसे उपाय पूछते। महाराज श्री ने उनको यज्ञ करने का परामर्श दिया। श्रद्धालु भक्तों ने इसके आयेजन की तैयारी की और महाराज श्री के आदेशानुसार यज्ञ प्रारम्भ किया। कई दिनों तक यज्ञ हुआ। बीच में भक्त अधीर होकर महाराज श्री से प्रार्थना करते कि यज्ञ समाप्त होने जा रहा है परन्तु आकाश में बादल का नाम ही नहीं है। महाराज उनको धैर्यपूर्वक यज्ञ सम्पन्न करने को कहते। भक्त स्वामी जी महाराज के आश्वासन से पुनः उत्साह बटोरते। यज्ञ की पूर्णाहुति के दिन भी आसमान साफ ही दीखा। भक्त महाराज श्री के मुखारविन्द को निहारते और वे मुस्करा कर पुनः आश्वासन देते। पूर्णाहुति होते ही न जाने कहाँ से अकस्मात् आकाश में बादल घिर आये और मूसलाधार वर्षा हुई। इस प्रसंग को वहाँ के वासी आज भी स्मरण करके रोमांचित होते हैं।

एक बार संम्भवतः सन् १९४८ में गङ्गा जी में अभूतपूर्व बाढ़ आई। कैलास आश्रम की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बगीची तक जल चढ़ गया। लोगों में त्राहि–त्राहि मच गई। ऐसा प्रतीत होता था कि ऋषिकेश कुछ ही घण्टों में बाढ़ की चपेट में आ जायेगा। कुछ भक्त महाराज जी के पास गये और इस बाढ़ से रक्षा के लिये उनसे बार–बार प्रार्थना करने लगे। भक्तों के वचनों को सुनकर महाराज श्री का हृदय द्रवित हुआ। उन्होंने थाल में धूप, दीप, नैवेद्य आदि पूजा सामग्री लेकर प्रवाह के पास जाकर गंगाजी की पूजा की तथा उनसे प्रार्थना की कि वे अपना प्रवाह कम करें। लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि ज्यों ही स्वामी जी महाराज पूजन करके आश्रम की ओर लौटे त्यों ही गङ्गाजी का उमड़ता हुआ प्रवाह भी शांत हो गया। थोड़ी ही देर में गङ्गा जी का जल नीचे उतर गया और बाढ़ का संकट टल गया। सभी ने महाराज जी को कोटि कोटि धन्यवाद दिया।

श्रीगोवर्धन लाला चानना के माता–पिता श्रीदेसराज चानना एवं श्रीमती वीराँवाली का पूज्य बड़े महाराज जी से सम्पर्क भारत के विभाजन से पूर्व सरगोधा में उनके सत्संग से था जो उनके समस्त परिवार को कैलास आश्रम से जोड़ने और उनमें परमेश्वर प्रेम जगाने का मुख्य कारण बना। बालक गोवर्धन लाल जी दिल्ली में प्राइमरी कक्षा चौथी तक पढ़ाई करके पांचवी में जाने के लिए इसलिए तैयार नहीं थे क्योंकि उनको इस बात से भय था कि पाँचवी से अंग्रेजी पढ़नी पढ़ेगी। अतः वे स्कूल न जाने की हठ पकड़ लिये थे। उन दिनों पूज्य बड़े महाराज जी दिल्ली पधारे हुये थे और डॉ० टहलाराम जी वीरमानी की कोठी पर ठहरे हुये थे। उन की माता जी बालक गोवर्धन को पूज्य बड़े महाराज जी के दर्शनों को ले गईं ताकि उनकी कृपा से इस समस्या का समाधान हो। जब वे इस कठिनाई का निवेदन कर चुकी तो बड़े महाराज जी ने बालक गोवर्धन से बड़े प्यार से पूछा कि क्या तुम माता–पिता की सेवा करते हो। बालक ने कहा–हाँ जी। महाराज श्री ने बालक के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। कुछ ही दिनों में सरकार ने स्कूलों में ५वीं की जगह ६वीं कक्षा से अंग्रेजी पढ़ाये जाने का नया क्रम लागू कर दिया। बालक गोवर्धन की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रहा। उसने पाँवीं कक्षा में न जाने का हठ छोड़ कर स्कूल जाना पुनः प्रारम्भ कर दिया। इस घटना से पूज्य बड़े महाराज जी की दिव्य महिमा की अमिट छाप उसके हृदय में पड़ गई। और इसके पश्चात उसको जब भी कोई कठिनाई का सामना हुआ उसने बड़े महाराज जी की महिमा का सहारा लेकर उस पर विजय प्राप्त की। अपनी बहन कृष्णा की सगाई करने के बाद पता चला कि वे लोग ठीक नहीं हैं। चिंताग्रस्त सभी परिवार वाले बड़े महाराज श्री की शरण में गये। उन्होंने आशीर्वाद दिया कि सब ठीक हो जायगा। उसी समय इधर दिल्ली में गोवर्धन जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के मामा जी ने एक और लड़के का रिश्ता बता दिया। जहाँ विवाह के पश्चात् कृष्णा सुख समृद्धि को प्राप्त हुई।

पूज्य बड़े महाराजजी में कई देवदुर्लभ गुणों का समन्वय देखने को मिलता है। वेदान्त शास्त्रों का गम्भीरतम ज्ञान, तर्क शास्त्रों का प्रखर वैदुष्य, साहित्य शास्त्र का गहन अनुशीलन और संगीत शास्त्र की उच्चतम विदग्धता आप में थी। शास्त्र रचना में भी आप निपुण थे। आप द्वारा रचित आचर्यद्वयानुस्मृतिः, वेदान्त रत्नाकर, वेदान्त पंचक व्याख्या अनमोल ग्रन्थ माने जाते हैं। आप के सुमधुर कण्ठ से प्रस्फुटित संगीतमयी ओजस्वी वाणी का पान कर श्रोता मन्त्रमुग्ध हो जाते थे। आपके कण्ठ में सररस्वती का निवास माना जाता था। व्याख्यान के पूर्व आप के संगीतमय मंगलाचरण श्लोकों को श्रवण करने के लिये भक्त अत्यन्त लालायित रहते थे। धन्य हैं वे लोग जिन्होंने आपका साक्षात्कार किया और आप के मुखारविन्द से निकले आप के वचनामृत का पान किया।

आप के पावन संस्मरण के सहित अत्यन्त भक्ति भाव से सभी आपके चरणारविन्दों में **श्रद्धासुमनाञ्जलि** समर्पित करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री अष्टम कैलासपीठाधीश्वर
आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री स्वामी चैतन्य गिरि (शास्त्री जी)
महाराज का संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त

पूज्यपाद महामण्डलेश्वर श्री १००८ स्वामी चैतन्यगिरि जी महाराज का प्रादुर्भाव पंजाब प्रदेश के होशियारपुर जिले के मध्यवर्ती एक पवित्र सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप बचपन से ही अत्यन्त मेधावी तथा कुशाग्र बुद्धि छात्र के रूप में विद्यालय की शोभा रहे थे। अध्यापक से सुनी बातें तत्काल कण्ठस्थ कर लिया करते थे। जो कुछ भी आप एक बार पढ़ अथवा सुन लेते थे उसे हृदयंगम कर लेते थे।

विद्याध्ययन एवं दीक्षा

वंश परम्परानुसार आपने संस्कृत–विद्या का अध्ययन किया और पंजाब की शास्त्री परीक्षा अत्तीर्ण कर शास्त्री उपाधि प्राप्त की। संन्यासी–समाज में अनेक महात्मा विद्वान् मण्डलेश्वर हुए, पर 'शास्त्रीजी' महाराज नाम से प्रसिद्धि केवल आपकी हुई। अध्ययन के पश्चात् घर से विरक्त हो योगाभ्यास के लिए आप उत्तराखण्ड की ओर चल पड़े। बहुत काल तक स्वर्गाश्रम में रहकर भिक्षाटन पूर्वक जीवन निर्वाह करते रहे। वहाँ रहते हुए कैलास की ब्रह्मविद्या एवं सन्त परम्परा के सन्देश से भला आप कैसे अपरिचित रह सकते थे। शनैःशनैः आपका सम्बन्ध कैलास आश्रम से जुड़ गया। श्री कैलासपीठाधीश्वर पूज्यपाद स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज के सम्पर्क में आने पर उनकी अलौकिक विद्या एवं प्रतिभा से प्रभावित हो मन–ही–मन उनको अपना गुरु मान लिया। समयानुकूल परिस्थिति देखकर उनसे दीक्षा लेने का अनुरोध किया और विधिवत् दीक्षा ग्रहण के पश्चात आपको स्वामी चैतन्य गिरि नाम दिया गया; परन्तु प्रसिद्धि तब भी शास्त्री जी महाराज के नाम से रही।

श्री स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज (बड़े महाराज जी) के सम्पर्क में आये सभी महापुरुषों की अपेक्षा श्री शास्त्री जी अपने विशिष्ट गुणों के कारण उनके अधिक निकट आ गये और जैसी ममता पिता की पुत्र पर होती है, ऐसी ही ममता बड़े महाराज जी की आप पर हो गई। यह शास्त्रीजी के विशेष गुणों का ही सुपरिणाम था कि उन्होंने एक असंग, निःस्पृह, प्रबुद्धचेत यतिवर को भी अपने स्नेह के बन्धन में बाँध लिया। श्री शास्त्रीजी महाराज स्वामी श्री विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज के विद्या, निष्ठा आदि सभी गुणों के उत्तराधिकारी के रूप में निखर कर सामने आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकी वाणी में श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध करने का जादू था। जब वे सुमधुर कण्ठ से बोलने लगते तो ऐसा लगता था कि अमृत की वर्षा हो रही है जिसे सुनकर श्रोतागण कभी नहीं अघाते थे–

नाथ तवानन ससि स्त्रवत, कथा सुधा रघुबीर।
श्रवन पुटन्हि मन पान करि नहिं अघात मतिधीर।।

मजाल क्या कि श्री शास्त्रीजी महाराज का प्रवचन चल रहा हो और कहीं से तनिक भी आवाज आ जाय। उतना सुमधुर कण्ठ शायद ही किसी का होगा। जब महाराज श्री मस्ती में आते थे तो बीच में गा उठते थे। हजारों कोकिल–कण्ठाओं के स्वर को भेदकर आपका अलौकिक स्वर आगे निकल जाता था।

पीठाधीश्वर पद

बहुत वर्षों तक श्री शास्त्री जी महाराज ने कैलास आश्रम ट्रस्ट कमेटी के मन्त्रीपद का भी सफलता पूर्वक सञ्चालन किया। श्री १०८ स्वामी निर्दोषानन्द गिरिजी महाराज के पदत्याग के बाद स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज के आदेश एवं सभी महात्माओं की सम्मति और भक्तों के अनुरोध पर, १९५३ ई. में, श्री शास्त्रीजी महाराज ने महामण्डलेश्वर के गुरुतर पद को संभाला।

अज्ञातवास

आन्तरिक अभिरुचि न होने के कारण तथा स्वात्माराम में सदा लीन रहने के कारण पूज्य श्री शास्त्री जी महाराज को मण्डलेश्वर का पद भार जैसा ही प्रतीत होता था। अतः श्री शास्त्रीजी महाराज अज्ञातवास को चले गये। आत्मा के आदेश का पालन करने हेतु किसी की अनुमति नहीं लेनी पड़ती है। आपके अज्ञातवास से पूज्य बड़े महाराज जी (स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज) के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ा। पूज्य बड़े महाराज जी श्री शास्त्रीजी महाराज को इतना अधिक स्नेह देते थे कि क्षण भर का वियोग भी उनके लिये असह्य होता था। अज्ञातवास में आप को भगवान् शंकर के दर्शन का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ।

कार्यवाहक मण्डलेश्वर

श्री शास्त्रीजी महाराज चार वर्षों तक अज्ञातवासी बने रहे। पीठाचार्य का स्थान सर्वथा रिक्त रहने से आश्रम की व्यवस्था शिथिल होने लगी। अतः विवश हो आश्रम के प्रति अद्वितीय निष्ठा रखने वाली माता सत्यवती के अत्यन्त आग्रह पर १९५९ ई. के वार्षिक महोत्सव पर पूज्यश्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द गिरिजी महाराज को पीठाचार्य के पद पर अभिषिक्त किया। ६ वर्षों तक आश्रम का संचालन स्वामी स्वतन्त्रानन्द गिरिजी ने माता सत्यवती के सहयोग से किया। स्वास्थ्य की शिथिलता तथा अन्य कुछ कारणों से स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज ने १५–२–६५ को त्यागपत्र दे दिया। इसी बीच पुनः भक्तों और सन्तों के आग्रह पर श्री शास्त्रीजी महाराज कार्यवाहक मण्डलेश्वर के रूप में आश्रम का संचालन करते रहे तथा मन ही मन दूसरे मण्डलेश्वर की तलाश में भी लगे रहे।

नये मण्डलेश्वर की सफल खोज

यद्यपि श्री शास्त्रीजी महाराज कार्यवाहक मण्डलेश्वर के रूप में संस्था का संचालन कर रहे थे किन्तु यह पद उन्हें भार–सा ही प्रतीत होता था। वे अपने जीवन काल में ही इस पद पर किसी योग्य व्यक्ति को बिठाना चाहते थे। अतः मन ही मन योग्य पुरुष की तलाश में भी लगे रहे। कई लोगों के नाम उनके समक्ष आये किन्तु कैलास की गुरुतर गरिमा के अनुरूप वे लोग जँच नहीं पाये। किन्तु महापुरुषों का संकल्प कभी निष्फल नहीं होता। पूज्य शास्त्रीजी महाराज को अनुसंधान में सफलता मिली। पूज्य शास्त्रीजी महाराज के अन्तिम जीवन की सबसे बड़ी सफलता वर्तमान महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज को खोज निकालना है। वर्तमान मण्डलेश्वर जी को गद्दी सौंपकर शास्त्रीजी महाराज तथा पूज्यपाद बड़े महाराज जी सदा–सदा के लिए निश्चिन्त हो गये। अब दोनों महापुरुषों को ऐसा विश्वास हो गया कि उनके द्वारा छोड़ा गया अधूरा काम वर्तमान महामण्डलेश्वर पूरा करेंगे। और हुआ भी यही। जब से महामण्डलेश्वरजी कैलास के आचार्यपीठ पर प्रतिष्ठित हुए तब से अद्यावधि योजनाबद्ध ढग से कैलास तथा शाखा–आश्रमों के चतुर्दिक् विकास के कार्य में लग गये। आपके पदासीन होने के पश्चात् पूज्य बड़े महाराजजी तथा पूज्य श्री शास्त्रीजी महराज तीन वर्षों तक विद्यमान रहे। महामण्डलेश्वरजी की कार्य–प्रणाली तथा विद्या–वैभव देखकर दोनों महापुरुषों को परम संतोष हुआ।

१९७२ ई. के मई मास में पूज्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विष्णुदेवानन्दजी महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् उनकी श्रद्धांजलि सभा में पूज्य शास्त्रीजी महाराज ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "मैंने तो अपना सम्पूर्ण जीवन ही सद्गुरुदेव के चरणों में समर्पित कर दिया था।" इतना कहते ही आपकी वाणी अवरुद्ध हो गई और आप तूष्णीभाव से मसनद के सहारे मूर्च्छित से हो गये। तत्पश्चात् आपका स्वास्थ्य उत्तरोत्तर गिरता गया। कश्मीर से लौटने के पश्चात् आप अत्यन्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षीणकाय हो गये थे। आपके स्वास्थ्य लाभ के लिए बहुत प्रयास किये गऐ परन्तु सफल नहीं हुए। आपने भक्तों को कहा कि शरीर तो मिट्टी है, उसके लिये क्या चिन्ता है, हम दवादारू तो आप लोगों के संतोष के लिए करवा रहे हैं।अन्ततः वि. सं. २०२९ आश्विन कृ. एकादशी को आप ब्रह्मलीन हो गये।

ब्रह्मलीनता का संदेश मिलते ही महामण्डलेश्सर श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज विमान द्वारा कलकत्ता से दिल्ली होते हुए ऋषिकेश पहुँच गये। महामण्डलेश्वर जी के आने के पश्चात् आपकी जलसमाधि क्रिया सम्पन्न हुई। यथासमय श्रद्धांजलि एवं षोडशी का कार्यक्रम अत्यन्त समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। तब से प्रतिवर्ष आश्विन कृष्ण एकादशी को आपके महानिर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में कैलास आश्रम में अत्यन्त धूमधाम के साथ महोत्सव दिवस मनाया जाता है। ८ अक्टूबर १९९६ से २७ अक्टूबर १९९७ तक आपके निर्वाण रजत महोत्सव मनाने की धूम मच रही है।

त्यागमय जीवन

शास्त्री जी महाराज के जीवन में त्याग की पराकाष्ठा दिखाई पड़ती है। वैराग्य को उन्होंने अपना आभूषण बना रखा था। पूज्य बड़े महाराज जी की हार्दिक अभिलाषा थी कि शास्त्री जी कैलास पीठाधीश्वर पद सँभालें। प्रथम बार आपने स्वयं तो पद स्वीकार नहीं किया परन्तु पूज्य बड़े महाराज जी से आश्वासनपूर्वक प्रार्थना की कि पीठाचार्य श्री स्वामी निर्दोषानन्द जी को बना दिया जाय और मैं उनका सहयोगी बनकर आश्रम के प्रचारादि कार्यों के लिए उनके साथ जाऊँगा। तदनुसार शास्त्रीजी महाराज महामण्डलेश्वर श्री स्वामी निर्दोषानन्द गिरि जी के संग बाहर जाकर धर्म का प्रचार कार्य बड़ी सरलता और उदारता के साथ करते। पुनः जब स्वामी निर्दोषानन्द जी पदत्याग करके चले गये तो बड़े महाराजजी, सन्तों एवं भक्तों के अनेक आग्रह पर शास्त्री जी महाराज ने पीठाधिपति बनना स्वीकार किया।

सरलता की मूर्ति

शास्त्रीजी महाराज में सरलता एवं सादगी का भी निवास था। उनके कमरे की छत एक बार वर्षा में टपकने लगी। एक सन्त ने उनका ध्यान उस ओर दिलाया। आपने हँस कर उत्तर दिया–जहाँ टपकती है वहाँ नीचे एक बाल्टी रख दो और कोई विशेष चिन्ता की बात नहीं है। आपको पलंग पर अथवा चटाई पर सोने में कोई फर्क नहीं पड़ता था। अज्ञातवास में साधारण सी धर्मशाला में सोकर मच्छर और खटमलों के डंस सहन करके भी आत्मानन्द की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुभूति ही होती थी। कार पर अथवा रिक्सा पर सवारी में एक सा आनन्द आता था। यहाँ तक कि आप सामान ढोने वाली रिक्सा में भी सवारी किये ऐसा हमारे मित्र शिवस्वरूप हाँडा जी ने बताया जो उनको अपनी सामान रिक्सा में गद्दा बिछाकर उस पर चढ़ाकर भ्रमण के लिए तालकटोरा गार्डन में ले जाया करते थे। पकवानों और सूखी रोटी में समान भाव आप का था। आप अज्ञात भ्रमण के दौरान कई–कई दिन भोजन के बिना ही रह जाते। आप भूख मिटाने के कई अनोखे प्रयोग भी किया करते। खाली कटोरी सामने रखकर उसमें दाल साग की भावना करके खाली कटोरी पी जाते और तृप्त होने की भावना करके भूख को शांत कर लेते थे।

विचित्र घटना

आप जंगलों में रात्रि व्यतीत करने के लिए एक माचिस अपने साथ रखते। रात्रि को कुछ लकड़ी जला कर तापते और भजन करते। एक रात्रि बड़ी विचित्र घटना घटी। शास्त्रीजी महाराज ने कुछ सूखी लकड़ियाँ एकत्रित कीं और रात्रि होने पर उनमें माचिस से आग सुलगाई। जब लकड़ियाँ जलने लगीं तो आप को एक गम्भीर आवाज सुनाई पड़ी कि "मेरी बूटी को मत जलाओ"। शास्त्रीजी महाराज ने इधर उधर गौर से देखा परन्तु कोई व्यक्ति, पशु, पक्षी दृष्टिगोचर न हुआ। शास्त्री जी पुनः भजन में लग गये। परन्तु वही शब्द फिर अधिक स्पष्ट रूप से सुनाई पड़े। शास्त्रीजी को आश्चर्य हुआ कि यह किसकी आवाज है और इन वचनों का क्या अर्थ है? इतना विचार कर ही रहे थे कि सामने एक तेज पुञ्ज प्रकट हुआ और ध्यानपूर्वक देखने से वहाँ साक्षात् शङ्कर भगवान् के दर्शन हुये। महाराज श्री ने उठकर भगवान् के चरणकमलों में दण्डवत् किया। और उनकी छवि को निहारने लगे। प्रभु ने लकड़ियों की ओर संकेत किया कि इनमें हमारी बूटी जल रही है। भगवान् के अन्तर्धान होने पर शास्त्री जी महाराज ने लकड़ियों को ध्यानपूर्वक देखा तो पता लगा कि उनमें कीड़ा लगा हुआ है जो अग्नि के संताप से संतप्त हो रहा है। महाराजजीको अब सब रहस्य समझ में आ गया और भूतभावन भगवान् शिव के कोमल स्वभाव और प्राणीमात्र के प्रति सहज सुहृदता का चिन्तन करते हुये पश्चात्ताप पूर्वक उस अग्नि को बुझा कर उन जीवों को प्राणदान दिया। इस अनुभूति का वर्णन स्वयं शास्त्रीजी महाराज ने मण्डलेश्वर जी महाराज के प्रति किया। अतः इसमें अतिशयोक्ति की कोई सम्भावना नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शास्त्री जी महाराज को भ्रमण के दौरान बड़े विचित्र अनुभव होते थे। एक बार महाराज श्री एक धर्मशाला में ठहरे हुये थे। हाल कमरे में जहाँ आपका आसन था वहाँ और भी साधु अपने अपने आसन पर आसीन थे। महाराज जी नियमानुसर प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में शौच–स्नान से निवृत् होकर भजन में बैठ गये। उनके सामने एक साधु सूर्योदय के बाद भी लेटा हुआ इधर उधर करवट ले रहा था। महाराज श्री ने सोचा कि इस संत को उठकर बैठना चाहिये। पर आप ने उपेक्षा भाव से उससे कुछ न कहना ही अच्छा समझा। परन्तु जब उसी तरह काफी समय बीत गया और वह संत नहीं उठा तो महाराजश्री से नहीं रहा गया। आप ने बड़ी मधुर आवाज में संत से कहा कि सूर्योदय हुए बहुत समय हो गया और इस समय इस तरह सोते रहना उचित प्रतीत नहीं होता। सन्त ने लेटे लेटे महाराज श्री को संकेत से अपने पास बुलाया। महाराज श्री अपने आसन से उठकर उसके पास गये तो उसने महाराज जी को अपने शरीर के साथ कान लगाने को कहा। महाराज जी ने वैसा ही किया। महाराज जी को उसके शरीर से राम, राम की ध्वनि स्पष्ट सुनाई दी। महाराज श्री ने उस सन्त को हाथ जोड़कर कहा कि इस अवस्था में आप लेटें अथवा उठें इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता।

जोत से जोत जली

आपके जीवन में बहुत से साधक भक्तों ने आपसे सत्संग कर और दीक्षित हो न केवल अपना कल्याण किया बल्कि दिये हुये प्रकाश से दूसरों के बुझे जीवन को प्रदीप्त किया। रोहतक में माता श्री सुशीला देवी, दिल्ली में माता राज रानी एवं कृष्णा माताजी, चड्ढा साहब, पं. जगेश नारायण, नाकपाल जी, माता राम चमेली (कानपुर) इत्यादि कई विशिष्ट भक्त वर्तमान में सत्संग प्रवाह के द्वारा गुरुओं के यश को उजागर कर रहे हैं। आप भक्तों की समस्याओं को अपने तपोबल एवं अन्य अपायों से भी सुलझा देते थे। एक बार बालक गोवर्धन चानना ने घबराते हुये शास्त्री जी महाराज से निवेदन किया कि महाराज मुझे एक चिट्ठी मिली है कि इस तरह की १०० चिट्ठियाँ लिख कर बाँटो नहीं तो बहुत हानि होगी। शास्त्री जी महाराज ने बड़े प्रेम से कहा कि अपनी चिट्ठी और समस्त चिन्ताओं को मेरी झोली में डाल दो। ऐसा कह कर उन्होंने बालक की समस्त चिन्ताओं को तुरन्त दूर कर दिया।

अडोल निष्ठा

आपके अन्तिम समय आप के स्वास्थ्य के संबन्ध में सन्त और भक्त बहुत चिंतित रहते थे। परन्तु आप उनको ज्ञानोपदेश द्वारा चिन्तामुक्त करते और अपनी देहातीत अवस्था का उन्हें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोध कराते। कई भक्तों ने महाराज जी के स्वास्थ्य लाभ के लिए अनुष्ठानादि किये। श्रीमती राजरानी हाँडा पहाड़गंज दिल्ली ने शास्त्री जी महाराज से पूछा कि महाराज श्री हम २४ घंटे का ॐ नमः शिवाय मन्त्र का जप करना चाहते हैं। इस पर शास्त्री जी महाराज ने कहा कि २४ घंटे का नहीं बल्कि ४० दिन का अखण्ड पारायण पुष्पदल समर्पित करते हुये करो। श्रीमती हाँडा ने सपरिवार ४० दिनों तक इस उत्तम अनुष्ठान को बड़ी श्रद्धापूर्वक किया। महाराज जी भक्तों का कल्याण करते हुये यह निश्चय कर चुके थे कि अब इस देह को त्यागना है। फगवाड़ा के आप के भक्त सरदार हरदयाल सिंह चन्ना ने आप से उस समय पूछा कि महाराज जी! जीवन भर तो आप 'शिवोऽहं' करते रहे। अब आप के शिवजी कहाँ गये। महाराज श्री ने उन्हें तपाक से उत्तर दिया कि 'मेरे शिवजी मेरे भीतर हैं।' सरदार जी ने पुनः पूछा कि महाराज जी फिर शरीर को इतना कष्ट क्यों हो रहा है। महाराज जी ने कहा कि शरीर तो मिट्टी है, उसके लिए क्या चिंता करना। सरदार जी महाराज श्री के साथ खुला वार्तालाप करने के आदी थे। अतः उन्हेंने पूछा कि महाराज श्री जब शरीर मिट्टी है तो इसके लिए दवा–दारू क्यों करा रहे हैं। महाराज श्री ने हँसकर उत्तर दिया कि वह तुम लोगों के संतोष के लिए है। इस प्रकार अन्तिम समय तक वेदना के होते हुए भी महाराज जी की अद्वैतनिष्ठा और आत्मानुभूति ज्यों की त्यों बनी रही।

ऐसे अलौकिक महापुरुष के पावन चरणकमलों में हम सभी कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमनाञ्जलि स्मर्पित करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतिरुद्रयज्ञ

यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम ।। गी.१८.।।

एतान्यपि तु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा फलानि च ।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ।। गी.१८.।।

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ।। गी.५.।।

अर्थात् "यज्ञदान और तप रूप कर्मों का कभी त्याग नहीं करना चाहिए बल्कि उनका अनुष्ठान करना ही चाहिए, क्योंकि यज्ञ दान और तप विवेकियों को (अन्तः शुद्धि द्वारा) पवित्र करने वाले हैं।" 'हे पार्थ, उक्त यज्ञ, दान आदि नित्य कर्मों का आसक्ति एवं फलाभिलाषा का त्यागकर अनुष्ठान करना चहिए, ऐसा मेरा निश्चित और उत्तम मत है।' "मुझे यज्ञ और तप के भेक्ता, सम्पूर्ण लोकों के महेश्वर, सम्पूर्ण प्राणियों के सुहृत् जानकर (मनुष्य) परम शान्ति को प्राप्त होता है।"

श्रीमद्भगवद्गीता में यज्ञ को एक ओर तो भगवान् ने अवश्यकर्तव्य बतलाया तो दूसरी ओर यज्ञभोक्ता स्वयं को घोषित किया। अतः यज्ञ द्वारा भगवान् की आराधना मनुष्य का परम धर्म है और महोत्सवों पर यज्ञानुष्ठान द्वारा देवाराधन उत्तम माना गया है।

यदि कोई साधारण रीति से प्रतिष्ठापित देवता की प्रतिष्ठा शताब्दी को मनाने के लिये उद्यत हो तो उस दिन अथवा उससे कुछ दिन पूर्व यज्ञ अनुष्ठान रख कर प्रतिष्ठा दिन तक भजन, कीर्तन, पूजा, होम, आरती, भोग, प्रसाद आदि द्वारा उस महोत्सव को मनाने की योजना बनायेगा। परन्तु कैलास आश्रम के विषय में अन्य प्रकार का ही अनुभव गत २७ वर्षों से लोगों को हो रहा है। उपर्युक्त प्रकार के महोत्सव तो कैलास आश्रम में सदा ही होते रहते हैं। कैलास आश्रम के अधिष्ठातृ देव श्री अभिनव चन्द्रेश्वर जी महाराज की प्रतिष्ठा शताब्दी महोत्सव का क्या स्वरूप होगा, इसका चिंतन कैलास ब्रह्मविद्या पीठ के वर्तमान पीठाधीश्वर जी, जिन्हें 'महोत्सवाचार्य' नाम से भी ख्याति प्राप्त है, के अतिरिक्त और कौन करता ?

लगभग ५ वर्ष पूर्व जब अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव की प्रतिष्ठा के ९५ वर्ष पूरे होने जा रहे थे उस समय कैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज के मन में भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर जी के शताब्दी महोत्सव मनाने सम्बन्धी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकल्प उदय हुआ। इस परमविशुद्ध विचारमन्थन से दिव्यवर्षपञ्चकम् का प्राकट्य हुआ। इसके अनुसार जिस दिन भगवान् अभिनवचन्द्रेश्वर की शताब्दी मनाने की घोषणा की जाये उस दिन से लेकर शताब्दी महोत्सव होने तक (७–३–९७) इन पाँच दिव्य वर्षों में कैलास आश्रम के जो भी विशिष्ट महोत्सव आ जायें उन सभी महोत्सवों को महादेव शताब्दी महोत्सव के अंगरूप से विशेषतया मनाया जाय। इस प्रकार विचार करने पर २५ महोत्सवों की माला गुथ गई जिसमें १४–२–९७ (अचला सप्तमी) क भगवान् की संस्थापना के १०० वर्ष पूर्ण होने का मेरुस्थनीय महोत्सव मनाया गया।

अङ्गरूप से उपर्युक्त २५ महोत्सवों का सृजन एवं सम्पादन करते–करते महाराज श्री को मुख्य महोत्सव श्री अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव के शताब्दी महोत्सव मनाने की रूपरेखा निर्धारण करने का विचार हुआ। महोत्सव की दिव्यता एवं भव्यता ऐसी हो जिससे महादेव की गरिमा एवं कैलास आश्रम में अब तक हुये अनुष्ठानों की परम्परा की पूर्ण सुरक्षा हो सके। महादेव की आराधना का कौन सा स्वरूप निकाला जाय, यह प्रश्न भी सामने आया। महादेव की लघु रुद्र के द्वारा आराधना तो प्रायशः कैलास आश्रम में होती रहती है। महारुद्र यज्ञ जिसमें ११ लघुरुद्र करने का विधान है उसका भी संभवतः कैलास आश्रम में अनुष्ठान किसी समय हुआ होगा। महाराज श्री ने इससे भी आगे **अतिरुद्र यज्ञ** की कल्पना की जो ११ महारुद्रों के द्वारा संम्पन्न होता है। महाराज जी ने विचारा कि होमात्मक अतिरुद्रयज्ञ द्वारा भगवान् अभिनवचन्द्रेश्वर की समाराधना उनके शताब्दी महोत्सव पर करना महादेव की प्रसन्नता और भक्तों के कल्याण का प्रशस्त मार्ग बनेगा।

अतिरुद्र यज्ञ को सम्पन्न करने में महाराज श्री को बहुत सी बातें का विचार करना पड़ा। प्रथम तो होम करने के लिये यज्ञशाला की व्यवस्था होनी आवश्यक थी। यज्ञशाला भी अतिरुद्रयज्ञ की विभुता के अनुरूप होनी चाहिए। इसके लिए महाराज श्री ने 'हरिहरदेवसदनम्' यज्ञशाला का निर्माण करवाया जहाँ बैठकर यज्ञ करने वाले को एक ओर तो भगवान् अभिनवचन्देश्वर के दर्शन हों और दूसरी ओर गंगा जी के दर्शन होते रहें। इस सुखद एवं सुन्दर यज्ञशाला का निर्माण डेढ़ वर्ष पूर्व ही कराकर इस में प्रथम आहुति चैत्र नवरात्र ७–४–९५ को प्रदान की गई।

अतिरुद्रयज्ञ का प्रचलित स्वरूप जिस ढंग का लोक में बना हुआ था उससे महाराज श्री संतुष्ट नहीं थे। इस में १५० के लगभग ऋत्विक् ११ दिनों तक पाठ, जाप, अभिषेक, होमादि करते एवं करवाते हैं। होम के लिये कई यज्ञकुण्ड बनाये जाते हैं और उस में कई यजमान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहुति डालते हैं। इस प्रकार ११ महारुद्रों के अनुष्ठान का कलेवर तो बन जाता है परन्तु उस में अनुष्ठान करने वालों पर नियन्त्रण न रहने से पूर्णतया पाठ, जाप, एवं होम नहीं हो पाता। ऐसा देखा गया है कि सामूहिक अनुष्ठान में अधिकतर ऋत्विक् जाप और पाठ ठीक से नहीं करते। जैसा कि १०८, १००८ भागवत/रामायण पारायणों में देखने में आता है कि वहाँ कुछ ही लोग सही पारायण कर पाते हैं। अतः महाराज श्री ने इस प्रकार के अतिरुद्रयज्ञ की जगह १२१ दिन तक चलने वाले यज्ञ को अधिक महत्वपूर्ण समझकर उसको अपनाने का निश्चय किया। इस में एक लघु रुद्र द्वारा प्रतिदिन अनुष्ठान करके १२१ दिनों में अतिरुद्र यज्ञ सम्पन्न करने की योजना बनी। इस क्रम में एक कठिनाई का सामना हुआ। १२१ दिनों तक कोई यजमान शुद्धतापूर्वक कैसे समय दे सकेगा ? आज के समय में न तो इतना समय कोई सद्गृहस्थ निकाल सकता है और न इतने दिन आहार–विहार में संयम तथा शुद्धि रख सकता है। इस कठिनाई को लेकर एक विचित्र कल्पना महाराज श्री ने की कि यज्ञ के यजमान् भगवान् श्री गणेश जी हों और यजमानी ऋद्धि सिद्धि देवियाँ हों। महाराज जी के संकल्पानुसार यदि देवता प्रकट होकर इस अनुष्ठान में भाग लेते हैं तो भी गणेश जी को दूध पिलाने वाली घटना के जैसे उनके दर्शनों के लिये बेकाबू भीड़ हो जायगी और यज्ञ सम्पादन करना अत्यन्त दुष्कर होगा। अतः महाराज श्री ने ११ सद्गृहस्थ यजमान तैयार किये जो ११–११ दिन के लिये प्रतिनिधिरूप में यज्ञानुष्ठान करके अक्षयपुण्य के भागी बनेंगे। इस तरह निम्नाङ्कित प्रकार से अतिरुद्र यज्ञ का स्वरूप बना।

समाराधनीय देव	:	भगवान् अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव जी
अध्यक्ष	:	जगद्गुरु आद्यशंकराचार्य जी
यजमान	:	भगवान् गणेश जी
यजमानी	:	ऋद्धि सिद्धि देवियाँ
प्रबंधक	:	कैलास आश्रम ब्रह्मविद्यापीठ के वर्तमान पीठाधीश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज
सदस्य	:	संबन्धित सभी सन्त एवं भक्त। इन भक्तों में से मात्र ११ भक्त भगवान् श्रीगणेश जी का प्रतिनिधित्व ११–११ दिनों तक करेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गणेश जी का प्रतिनिधित्व करने वाले पुण्यात्मा भक्तों के नाम निम्नाङ्कित हैं :

१. श्री सुरेश मोदी एवं श्रीमती मधु मोदी, सपुत्र श्री फूल चन्द मोदी श्रीमती कृष्णा मोदी, कलकत्ता–दुबई

२. श्री सुन्दर लाल गोवर्धन दास जी, मुम्बई

३. श्री प्रियकान्त रतिलाल दवे एवं श्रीमती बालाबेन, मुम्बई

४. श्री मोहन लाल चौधरी एवं श्रीमती कृष्णा चौधरी, दिल्ली

५. श्री नन्द लाल बोहरा एवं श्रीमती अन्नपूर्णा बोहरा, कलकत्ता

६. श्री जितेन्द्र चानना श्रीमती निष्ठा चानना सुपुत्र श्री गोवर्धन लाल श्रीमती प्रेम चानना, दिल्ली

७. श्री रवीन्द्र शर्मा श्रीमती कमलेश शर्मा नई दिल्ली

८. श्री कुलभूषण शर्मा श्रीमती शीतला शर्मा सुपुत्र श्री रामाश्रय शर्मा श्रीमती कलावती शर्मा, जम्मू

९. श्री सुधीर चौधरी तथा श्री मधुसूदन चौधरी सपत्नीक, सपुत्र श्रीमती कौशल्या देवी, दिल्ली

१०. श्रीनीरज अग्रवाल श्रीमती वीना अग्रवाल, मुजफ्फरनगर

११. डॉ० श्री हरविलास राय धर्मपत्नी डॉ० श्रीमती प्रेम राय अमृतसर

यज्ञ का शुभारम्भ १३.१०.९६ आश्विन नवरात्र पर हुआ और १०.२.९७ को सम्पन्न होकर ११.२.९७, १२.२.९७ एवं १३.२.९७ को पूर्णाहुति हुई तथा विशाल भण्डारा हुआ।

उपर्युक्त यज्ञानुष्ठान के दिनों प्रतिदिन १६ विद्वान् ऋत्विक् पाठ, जाप होमादि कार्य करते थे जिनके साथ उपनयनादि संस्कारसम्पन्न यजमान उनकी धर्मपत्नी एवं परिवारजन भाग लेते थे।

प्रतिदिन एक लघुरुद्र द्वारा भगवान् अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव का अभिषेक होता था। एक प्रतिनिधि यजमान द्वारा यह कार्य ११ दिन तक चला। इन्हीं ११ दिनों में दशांश होम आहुतियाँ भी दी गईं।

इस अनुपम अतिरुद्र यज्ञ के संपन्न होने से भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव की महिमा में और भी चार चाँद लग गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दिव्य वर्षपञ्चकम् में अनुष्ठित कार्यक्रम ।।

(१) दिनांक १०–२–९२ अचला सप्तमी को श्री अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव के ९५ वें प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव पर दिव्य–वर्ष–पञ्चकम् महोत्सव की घोषणा।

(२) दिनांक ७–३–९२ को निर्माणाधीन कैलास विद्यातीर्थ, दिल्ली में आदिशंकराचार्य स्मारक का शिलान्यास।

(३) दिनांक ११–३–९२ को कैलास शान्ति सदन, गुड़गांव हरियाणा में सप्तदिवसीय देव–प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न।

(४) दिनांक १–४–९२ से दिनांक १४–४–९२ तक हरिद्वार अर्धकुम्भी पर्व का दशनाम संन्यास आश्रम में अनुष्ठान।

(५) दिनांक ३–७–९२ को ब्रह्मलीन श्री १०८ स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज (छोटे महाराज जी) की प्रथम पुण्य तिथि पर निर्वाण दिवस विशेष महोत्सव।

(६) दिनांक १०–१–९३ को वर्तमान श्री कैलास पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज का दिल्ली में सन्यास रजत जयन्ती महोत्सव।

(७) दिनांक २६–६–९३ को ब्रह्मविद्यापीठ कैलास आश्रम के वर्तमान दशम आचार्य यतीन्द्रकुलतिलक महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज के पट्टाभिषेक रजत महोत्सव का शुभारम्भ।

(८) कैलास आश्रम के पञ्चम पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी प्रेमपुरी जी महाराज की प्रतिमा की स्थापना, प्रेमपुरी अध्यात्म विद्या भवन, मुम्बई में दिनांक ८–१२–९३ को सम्पन्न।

(९) श्री नर्मदा सत्संग आश्रम, भिलाडिया घाट का कैलास आश्रम ट्रस्ट कमेटी में विलय–दिनांक २८–१२–९३ ।

(१०) दिनांक १५–२–९४ वसन्त पञ्चमी के दिन ब्रह्मसूत्र विद्यानन्द वृत्ति रजत जयन्ती महोत्सव।

(११) दिनांक १–५–९४ को ऋषिकेशस्थ ब्रह्मानन्द आश्रम की शताब्दी।

(१२) दिनांक १५–७–९४ को ब्रह्मविद्यापीठ श्री कैलास आश्रम के दशम पीठाचार्य महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज के पट्टाभिषेक रजत महोत्सव का समापन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१३) दिनांक १३–१–९५ से ३–२–९५ वसन्त पञ्चमी तक तीर्थराज प्रयाग के नव–निर्मित कैलास धाम, नई झूसी में अर्धकुम्भी पर्व का अनुष्ठान। बालविद्या मन्दिर की संस्थापना।

(१४) कैलास सेतु का उद्घाटन दिनांक २७–२–९५ ।

(१५) कैलास आश्रम, रोहतक में देव–प्रतिष्ठा एवं आश्रम प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक १३–३–९५ से २४–३–९५ तक सम्पन्न।

(१६) नव–निर्मित श्री हरिहरदेवसदन में प्रथम आहुति प्रदान, चैत्र नवरात्रि, दिनांक ७–४–९५ ।

(१७) दिनांक २०–४–९५ को कैलास विद्या प्रकाशन प्रतिष्ठा संकल्प का रजत महोत्सव।

(१८) श्री गोप्रेमकवलायतन का उद्घाटन, गंगा सप्तमी दिनांक ७–५–९५ ।

(१९) दिनांक ८–६–९५ को कैलास आश्रम एवं शखा आश्रमों के पुनरुद्धार तथा नव–निर्माण संकल्प का रजत महोत्सव।

(२०) दिनांक ९–४–९६ को कैलास आश्रम के षष्ठ पीठाचार्य महामण्डलेश्वर विद्यावाचस्पति श्री १०८ स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज का निर्वाण रजत महोत्सव।

(२१) कैलास विद्यातीर्थ, दिल्ली में आद्य श्री शंकराचार्य स्मारक का उद्घाटन–वैशाख शुक्ल पञ्चमी, २२–४–१९९६ ।

(२२) दिनांक ८–१०–९६ को कैलास आश्रम के अष्टम पीठाचार्य महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी चैतन्य गिरिजी (शास्त्री जी) महाराज का निर्वाण रजत महोत्सव।

(२३) दिनांक १०–१२–९६ को ब्रह्मविद्यापीठ श्री कैलास आश्रम के दशम पीठाचार्य यतीन्द्रकुलतिलक महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज का हीरक जयन्ती (अमृत) महोत्सव।

(२४) दिनांक १४–२–९७ अचला सप्तमी को कैलास आश्रम के अधिष्ठातृदेव श्री अभिनवचन्द्रेश्वरमहादेव की प्रतिष्ठा शताब्दी महोत्सव।

(२५) दिनांक ७–३–९७ महाशिवरात्रि के दिन "दिव्य–वर्ष–पञ्चकम्" महोत्सव का समापन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

गुरुजनसमाराधन श्रीराम कथा
(१६–११–९६ से २४–११–९६ तक)

अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव जी सौ वर्षों से कैलास आश्रम के आचार्यों से वेदान्त श्रवण करते आ रहे हैं। संभवतः कुछ श्रीराम कथा सुनने की इच्छा से उन्होंने महाराजश्री को शताब्दी महोत्सवों के अन्तर्गत श्रीराम कथा का आयोजन कराने की प्रेरणा दी। महाराजश्री ने हृषीकेशस्थ श्री कैलास आश्रम के सामने गंगा तट पर विश्वसन्त श्री मोररी बापू की प्रासादिक राम कथा का आयोजन रखा जिसका "गुरुजन समाराधन श्रीराम कथा" नाम रखा गया। इस कथा में भगवान् अभिनवचन्द्रेश्वरजी की प्रतिष्ठा शताब्दी सहित निम्नाङ्कित पाँच निमित्त जुड़ गये।

१. श्री अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव की प्रतिष्ठा शताब्दी।

२. विद्यावाचस्पति आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज का २५ वाँ (रजत) निर्वाण महोत्सव।

३. आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी चैतन्यगिरिजी महाराज का २५वाँ (रजत) निर्वाण महोत्सव।

४. वर्तमान कैलास पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज का अमृत महोत्सव।

५. श्री रामचरित मानस के विश्वविश्रुत प्रासादिक प्रवक्ता विश्वसन्त श्री मोरारी बापू जी का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव।

श्रीराम कथा का शुभारम्भ १६ नवम्बर अपराह्न को हुआ। श्री मोरारी बापू को कथा समिति के प्रमुख श्री भूषण कुमार कपूर, देहरादून हवाई पट्टी से हृषीकेश अपनी गाड़ी में ला रहे थे। बापू ने कथा स्थल पर पहुँचने से पूर्व श्री गंगाजी के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। कपूर साहब भीड़ की दृष्टि से बचाकर उन्हें त्रिवेणी घाट पर ले गये जहाँ अत्यन्त श्रद्धापूर्वक बापू ने गंगा स्नान किया और भागीरथी वन्दना के अनन्तर ही कथामंच पर पधारे।

श्री मोरारी बापू का स्वागत श्री जयराम आश्रम के ब्रह्मचारी श्री देवेन्द्र स्वरूप जी एवं श्री भरत मन्दिर के महन्त श्री अशोक प्रपन्नाचार्य शर्मा जी एवं कैलास के सन्तों ने बड़े प्रेम से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया। मानव कल्याण आश्रम, कनखल के श्री स्वामी कल्याणानन्द सरस्वती जी महाराज ने मंचसंचालन की अत्यन्त मधुर एवं गम्भीर वचनों द्वारा भूमिका निभाई और महाराज श्री से बापू की श्री राम कथा से पूर्व अपने आर्शीवचनों द्वारा श्रोताओं को संबोधन करने की प्रार्थना की।

महाराजश्री ने हृषीकेश को भरतजी की तपःस्थली बताते हुये श्री भरत मन्दिर का महत्व प्रकट किया। बाबा काली कमली अन्न क्षेत्र एवं श्री जयराम आश्रम अन्नक्षेत्र की भूरि–भूरि प्रशंसा की और कहा कि जहाँ ये संस्थायें तपस्वी महात्माओं के लिये भोजन का प्रबन्ध करती आई हैं वहाँ कैलास आश्रम ज्ञान क्षेत्र की भूमिका निभाकर जिज्ञासुओं की ज्ञानपिपासा को शान्त करता आ रहा है। कथा की सफलता में महाराजश्री ने पाँच निमित्त बतलाये वक्ता, श्रोता, स्थल, विषय और प्रसंग; इन पाँचों की दिव्यता का प्रस्तुत श्री गुरुजनसमाराधन श्रीराम कथा में महाराज श्री ने सुन्दर निरूपण किया।

श्री मोरारी बापू ने, कथा में कौन सा प्रसंग लें, इस का सुन्दर समन्वय किया। उन्होंने कहा कि भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव जी की संस्थापना के १०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इस कथा में भगवान् शंकर के साथ हम मानस में आये हुये १०० अङ्क को जोड़ना चाहते थे। अतः कथा प्रसंग का आधार श्री रामचरित मानस की बालकाण्ड की चौपाई

जपहु जाइ संकर सत नामा। होइहि हृदयँ तुरत विश्रामा।।
कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें। असि परतीति तजहु जनि भोरें।।

बापू ने चुना। नौ दिनों तक बापू ने शिव तत्त्व का जिस भक्ति भाव से निरूपण किया वह सुनते ही बनता था।

महाराजश्री ने कथा स्थल का नाम त्रिभुवन–गुरु–क्रीड़ा–स्थली घोषित किया। कथा स्थल को उन्होंने तीन जिलों पौड़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल और देहरादून का संगम बताया। त्रिभुवन गुरु–भगवान् शंकर, त्रिभुवनजीवन–भगवान् श्री राम और त्रिभुवन जीवनधाम–बापू की कैलास आश्रम में बनी कुटीर की संज्ञा का सुन्दर संयोग महाराजश्री ने दिखलाया। महाराज श्री ने हरिद्वार से ऊपर ऋषिकेश, लक्ष्मण झूला, उत्तरकाशी, गंगोत्री, गोमुख आदि गंगा स्थलों की स्थिति पृथ्वी से ऊपर के लोकों में मानस की इस चौपाई के आधार पर सिद्ध की **'गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे। एहिं किए साधु समाज घनेरे'** अर्थात् गंगा जी के पृथ्वी में तीन स्थल बड़े माने गये हैं, वे हैं– हरिद्वार, प्रयाग एवं गंगा सागर। उपर्युक्त गंगा के पावन स्थलों को गोस्वामी तुलसी दास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी ने अवनिथलों से ऊपर समझते हुये उनकी गणना बड़े स्थलों में नहीं की। श्री मोरारी बापू ने महाराजश्री की इस नई व्याख्या को सहर्ष विनम्रभाव से स्वीकार किया।

इधर कैलास आश्रम में प्रातः ६ से ९ बजे तक १०८ भक्त बड़े प्रेम से मानस का नवाह्न पारायण करते थे जिन की अगवानी स्वयं महाराज श्री प्रथम एक आध घंटा करते। इस पाठ में संपुट निम्नाङ्कित लगाते

बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू। रामभगत कर लच्छन एहू ।।

कथा के दिनों भक्तों की भीड़ का दृश्य बड़ा सुहावना लगता था। भक्तों के लिये आवास भोजनादि का प्रबन्ध बहुत सुन्दर था। कथा यज्ञ में सेवा रूपी आहुति कैलास आश्रम के सन्तों, भक्तों, ऋषिकेशस्थ विभिन्न संस्थाओं एवं निवासियों ने बड़ी उदारता पूर्वक समर्पित की। इन सभी को कोटि–कोटि धन्यवाद है। मुख्य–मुख्य सेवा समर्पकों का कृतज्ञतापूर्वक उल्लेख इस लेख में करना अत्यन्त उचित प्रतीत होता है।

श्रीराम कथा में सेवा समर्पित करने वाले सन्तों एवं भक्तों के नाम :

१. स्वामी मेधानन्द पुरी जी कैलास आश्रम ऋषिकेश
२. स्वामी प्रज्ञानन्द जी कैलास आश्रम ऋषिकेश
३. स्वामी गवेन्द्रानन्द जी कैलास आश्रम ऋषिकेश
४. स्वामी रघुनन्दन पुरी जी कैलास आश्रम ऋषिकेश
५. ब्र० धनञ्जय चैतन्य जी कैलास आश्रम ऋषिकेश
६. ब्र० सत्तमानन्द जी कैलास आश्रम ऋषिकेश
७. स्वामी निजानन्द भारती एवं कैलास आश्रमस्थ अन्य अनेक सन्त महानुभाव
८. ब्रह्मचारी श्री देवेन्द्र स्वरूप जी, जयराम आश्रम ऋषिकेश
९. महन्त श्री अशोक प्रपन्नाचार्य शर्मा, श्री भरत मन्दिर ऋषिकेश
१०. ब्रह्मविदुषी, श्री माता सुशीला देवी, कैलास आश्रम रोहतक
११. श्री हरीश चन्द्र मल्होत्रा महा प्रबंन्धक कृभको नई दिल्ली
१२. श्री भूषण कुमार, लता कपूर नई दिल्ली
१३. सेठ सीरू मल जी ऋषिकेश
१४. श्री बाबू विनोद कुमार अग्रवाल ऋषिकेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५. श्री विनोद शर्मा ऋषिकेश
१६. श्री जय प्रकाश गोयल मण्डी गोविन्दगढ़
१७. श्री जगदीश अग्रवाल मण्डी गोविन्दगढ़
१८. श्री सीता राम जोशी चण्डीगढ़
१९. श्री रमाशंकर बाजोरिया नई दिल्ली
२०. श्री शिव कुमार बागड़िया कलकत्ता
२१. श्री समीर कुमार ऋषिकेश
२२. श्री वीरेन्द्र सहगल ऋषिकेश
२३. श्री विजय कोहली एण्ड कम्पनी ऋषिकेश
२४. डॉ॰ चिमन लाल डॉ॰ आशा कोहली ऋषिकेश
२५. श्री धर्मानन्द डिमरीजी ऋषिकेश
२६. श्री प्रकाश चन्द्र जोशी ऋषिकेश
२७. डॉ० सुरेश राय ऋषिकेश
२८. श्री यशपाल अग्रवाल ऋषिकेश
२९. अजय कथूरिया ऋषिकेश
३०. श्री बाबू लाल जी बोहरा कलकत्ता
३१. श्री नन्द लाल जी बोहरा कलकत्ता
३२. श्रीमती उषा सेखरी नई दिल्ली
३३. श्रीमती संगीता कपूर नई दिल्ली
३४. श्रीमान् सुनील एवं अनिल गर्ग दिल्ली
३५. श्रीमान् शारदा चंडीगढ़
३६. श्री एस. पी. मक्कड़ चंडीगढ़
३७. श्री तिवारी जी नई दिल्ली
३८. श्री टेक चन्द ढींगड़ा नई दिल्ली
३९. श्री शिव स्वरूप हांडा नई दिल्ली
४०. श्री महेश कुमार गुप्ता नई दिल्ली
४१. श्री स्वर्ण लाल तुली नई दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

भगवत्पादीय दिव्ययुगारम्भ

यतीन्द्र तिलक परमाराध्य दशम कैलास पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज वेदान्त–सर्वदर्शनाचार्य

दिशन्तु शं में गुरुपादपांसवः

भारतीय संस्कृति एवं वैदिक सनातन धर्म की दिव्यता विश्वप्रसिद्ध है। किसी समय विश्व के सभी मानवों को भगवान् मनु ने आदेश दिया था कि

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रंण शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।"

अर्थात् हे पृथ्वी के सर्व मानव ! आप अपने चरित्र का पाठ भारत देश में जन्मे विद्वान् ब्राह्मणों से ग्रहण करो। यह क्रम जब तक सुव्यवस्थित रूप से चलता रहा, तब तक भारत ही नहीं प्रत्युत विश्व के समस्त मानव के जीवन में दिव्यता स्पष्ट भासती थी। किन्तु शिक्षा देने वाले व्यक्ति का जीवन ही जब संदेहास्पद हो जाय तब उससे शिक्षा प्राप्त करने वाले में दिव्यता कहाँ से आयेगी ? फलतः राष्ट्रीय एवं विश्व स्तर पर चरित्र का हनन् अर्थ लोलुपता एवं वैयक्तिक स्वार्थपरायणता का बोल–बाला होने लग गया।

आज से बारह सौ वर्ष पूर्व विष्णु आदि देवताओं की प्रार्थना पर आशुतोष भगवान् शंकर जब भारत धरा पर शंकराचार्य रूप से अवतरित हुये थे। तब एक बार पुनः उपर्युक्त सभी क्षेत्रों में दिव्यता का प्रादुर्भाव हुआ था। विश्व में दिव्यता लाने के लिये जिस आचार संहिता का निर्माण उन्होंने किया था उस आचार संहिता का सभी क्षेत्रों में दृढ़ता से प्रचार प्रसार होता रहा। अतः अवैदिकों को भारतवर्ष में पुनः पादप्रसारण का अवसर नहीं मिला। मध्ययुग में अवैदिकों का भारत में पादप्रसारण ही नहीं अपितु अप्रत्याशित फैलाव हुआ। निःसंदेह उसके जिम्मेदार वे लोग माने जायेंगे जिनके कंधों पर आदि शंकराचार्य जी ने वैदिक सनातन धर्म की सुरक्षा एवं विस्तार करने का भार सौंपा था। आज पुनः भगवत्पादीय युग की दिव्यता का अवतरण आवश्यक जान पड़ता है। समय की मांग भी है। अतः भगवत्पादीय युग का आरम्भ होगा, ऐसा विश्वास किया जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्र के उच्च पदस्थ नेताओं का चरित्र भी जब संदेह के घेरे में आ गया है और वे वैयक्तिक स्वार्थ एवं दल के अत्यन्त तुच्छ हित के लिए राष्ट्र की बड़ी से बड़ी क्षति करने में संकोच नहीं करते तो स्थिति बहुत गम्भीर हो जाती है। किसी समय स्वतन्त्रता के सेनानियों ने विदेशी शासकों को इसीलिये अस्वीकार कर दिया था कि वे राष्ट्र की अस्मिता को नष्ट करने में तुल गये थे। वे भारतीय सम्पदा को लूटकर विदेश में ले जाते थे। भारतीय साहित्य की चोरी भी करते थे और अपने मनःकल्पित मतों का धर्म के नाम पर प्रचार भी किया करते थे। इसीलिए स्वतन्त्रता सेनानियों ने विदेशी शासकों को भारत देश से खदेड़ दिया। विदेशी शासक भले ही भारत के पदासीन शासक नहीं रहे, पर खेद के साथ कहना पड़ता है कि उनके ही पदचिह्नों पर स्वतन्त्र भारत के शासक वर्ग भी चलते आ रहे हैं। विदेशी शासकों की भांति वेशभूषा और खानपान अपना रखे हैं, इतना ही नहीं, प्रत्युत देश की संपदा को लूटकर विदेशी बैंकों में जमा करने का क्रम आज भी बना हुआ है। वैयक्तिक एवं दलीय स्वार्थसिद्धि के लिये राष्ट्र की बड़ी से बड़ी क्षति करने में ये लोग संकोच नहीं करते। यह रोग राष्ट्र और प्रदेश के शासकों में ही नहीं, प्रत्युत नगर और ग्राम के पंचायत शासकों में भी समाया हुआ है। बड़े–बड़े पदों पर बैठे हुये अधिकारीवर्ग सरकार से प्राप्त सुख सुविधाओं के बावजूद भी तब तक काम करने के लिये तैयार नहीं होते जब तक उन्हें अलग से कोई भेंट न दी जाय। इधर धार्मिक प्रतिष्ठानों की दशा भी दयनीय है। मठ–मन्दिरों के उच्चपदासीन अधिकारी गण भी इसी रोग से पीड़ित हैं। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय जीवन में एक बार पुनः दिव्यता अवतरण का प्रसंग उपस्थित हो गया है। अतः राष्ट्र, समाज, अध्यात्म और धर्म के प्रति बलिदान देने वाले मनुष्यों का एक वर्ग पहले तैयार होगा। उसीकी दिव्यता एवं समर्पण की भावना का अनुसरण अन्य लोग भी कर सकेंगे। नीति शतक में भर्तृहरि जी ने कहा है–

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये,
सामान्यास्तु परार्थमुद्यभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,
ये निघ्नन्ति निरर्थकम् परहितं ते के न जानीमहे ।।

अर्थात् वे सत्पुरुष हैं जो निःस्वार्थ भाव से दूसरों का हित करते हैं, किन्तु समान्यतः मनुष्य तभी तक दूसरों का हित करता है जब तक उसके स्वार्थ में विरोध नहीं आता। हमारा भी स्वार्थ सिद्ध हो तो हम दूसरों का हित करते रहेंगे। किन्तु वे मनुष्य होते हुये भी राक्षस हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो अपने स्वार्थ के लिये दूसरो का अहित करते हैं। पर कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो अकारण एवं निष्प्रयोजन दूसरों के स्वार्थ के बाधक हो जाते हैं। इन चतुर्थ श्रेणी के मानवों को तो हम भी नहीं पहचान पाते कि ये कौन हैं और किस श्रेणी में इन्हें रखा जाय। आज प्रथम श्रेणी के पुरुषों का तो अभाव प्रायः दीखता है। पर ऐसे पुरुषों के अवतरण होने पर ही युग में दिव्यता आयेगी; ऐसा सभी लोक विश्वास करते हैं।

कुछ क्षेत्रों में दहेज प्रथा ने इतना भयङ्कर रूप धारण कर रखा है जिससे मानवता का मूल्य अत्यन्त घट गया है। साथ ही परिवार कल्याण के अन्तर्गत बन्ध्यकरण और भ्रूण हत्या ने भी समाज में अभिशाप का रूप धारण कर रखा है। इनसे भी समाज में विकृति और प्रदूषण फैलते दिखाई पड़ता है। धर्मानुष्ठान और धर्म प्रचार भी व्यवसाय का रूप धारण करते जा रहे हैं। आखिर एक दिन इन सब का अन्त होगा ही और राष्ट्र, समाज एवं व्यक्ति के जीवन में दिव्यता की संभावना की जा सकती है। दिन के अन्त में रात्रि आती है और रात्रि के अन्त में दिन का आगमन होता है। ऐसे ही जब सभी क्षेत्रों में विकृति एवं प्रदूषण सीमोलङ्घन करने जा रहे हैं तब इनका अन्त होना भी आवश्यक है। पिछले पाँच वर्षों से दिव्य–वर्ष–पंञ्चकम् महोत्सव चल रहा था, उसका अवसान आगामी महाशिवरात्रि को हो जायगा। जिस दिव्यवर्षपञ्चकम् महोत्सव के २५ बिन्दु थे उनमें से अब केवल ५ बिन्दुओं का अनुष्ठान होना शेष रह गया है। इस अमृताञ्जलि और श्रद्धासुमनाञ्जलि का प्रकाशन भी उन्हीं अनुष्ठानों के अंङ्ग रूप से हो रहा है। हम कैलास आश्रम के अधिष्ठातृ देव भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर के पावन चरणों में, कैलास आश्रम के षष्ठ पीठाचार्य विद्यावाचस्पति अनन्तश्री स्वामी विष्णुदवानन्द गिरिजी महाराज तथा कैलास आश्रम के अष्टम पीठाचार्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री स्वामी चैतन्य गिरिजी महाराज के पावन चरणों में श्रद्धासुमनाञ्जलि भेंट करते हुये अपने हृदय में अपार हर्ष का अनुभव कर रहे हैं और आशा करते हैं कि इन्हीं के परमानुग्रह से आने वाले वर्षों में एक **भगवत्पादीय दिव्य युग** का प्रारम्भ होगा, जिसमें वैदिक सनातन धर्म का प्रचार न केवल शब्दों से प्रत्युत अपनी जीवनचर्या से आचार्य गण करेंगे। इत्यों शम्।

भाद्रपद पूर्णिमा,
वि. सं. २०५३
दि० २७–९–१९९६

स्थान
कैलासविद्यातीर्थ
६, भाई वीर सिंह मार्ग
नई दिल्ली–११००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

THE DAWN OF A DIVINE ERA

– His Holiness Swami Vidyanand Giri ji Maharaj

The divinity of, Indian culture and the Eternal Dharma of the Vedas, is recognised all over the world. Once Lord Manu ordained all men of the world to have lessons on character from the learned Brahmins born in India. So long as this dictum was followed meticulously, not only Indians but the lives of the people of entire world community also reflected divinity. However when the life and morale of the teachers became doubtful, how could the divinity shine in the lives of the taught? The result was general degradation of character and growth of greed and selfishness at national and global levels.

Some twelve Hundred Years ago, when Lord Shiva accepting the prayers of Vishnu and other gods, incarnated as Shankarcharya on this earth then also once again divinity dawned in all the above fields. The code of conduct evolved by Shankaracharya was followed strictly in all the fields then. Therefore those opposed to the Vedas could not get an opportunity to have hold in India. However, in the middle period they not only got a foot hold here but also flourished unchecked. The blame for this, no doubt, lies with those whom Shankaracharya had given the responsibility for the protection and expansion of Vedic Eternal Dharma. Now again there is the necessity to have the divinity of the Shankaracharya's period. This is the need of the hour also. Therefore it is believed that the Shankaracharya Era will arrive again.

Look at the national scene. When the character of leaders occupying high offices has also become doubtful and they do not feel embarassed to cause gravest harm to the country for selfish ends or for petty good of their party, then situation naturally becomes very serious. There was a time when the freedom fighters rejected the foreign rule for the reason that they were bent upon to finish the self-respect of the nation. They looted India's wealth and took it abroad. They also used to steal the Indian Literature and propagated the creed of their own imagination

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

in the name of Dharma. That is why the freedom lovers routed the foreign rule from India. However it is a pity that eventhough the foreign rulers no longer occupy the chairs of office but the Indian officers of the free India have continued to walk in their foot-steps. They have adopted the same dress, food habits etc as the foreign rulers had. Not only this but the order relating to the loot of country's wealth and depositing it in foreign banks also continues even upto this time. As said before, these people do not hesitate to cause severest harm to the nation for selfish or party ends. This disease is not confined to the ruling class at national and state level but has spread to the city, village and even Panchayat level. Govt. officials occupying high posts, inspite of the fat salaries and other facilities, do not perform their duty unless their palm is greased. Even the head and office-bearers of religious institutions are not free from this disease. In fact the condition of these institutions has become pitiable. In these circumstances the dawn of divinity in the life of the nation has again become relevant. Therefore first of all a group of dedicated people ready to make sacrifice for the sake of nation, society, spiritualism and Dharma would emerge so that other people could follow their example. The king turned saint Bhartrihari has said that those are gentlemen who selflessly do good to others whereas an ordinary man would do good so long as it does not clash with his own self interest. But those men are really demons who harm others for grinding their own axe. Still further down there are men who without any reason or benefit harm others. This fourth catagory of people are beyond comprehension. Today the first catagory of people are very rare to find but as believed the divine era will come with only such people coming on the scene.

In some areas the dowry system has raised such a dreadful head that it has caused a tremendous decrease in human values. The unnatural birth control measures and abortion has assumed the form of a curse on society. These things tend to distort and pollute the society. Even the religious practices and preaching are being commercialised. All these evils must come to an end one day and then the dawn of divinity in the life of the nation, society and individual could be expected. Every day ends into night and at the end of night the day rises again. In the same manner, as the degradation and pollution in all fields is crossing its limits, their end also must come.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

The Divya-Varsha-Panchkam (the five years divine period) festival which we have been celebrating for the last five years will be concluded on the coming Mahashivratari day. Out of the twenty five events of this group only five remain to be celebrated. Even the publication of Amritanjali and Shradhasumananjali is a part of these celebrations. I feel immense pleasure in my heart by offering floral tributes of faith at the pious lotus feet of the main deity of Kailash Ashram Lord Shri Abhinav Chandershwar ji, the Sixth Acharya His Holiness Swami Vishnudevanand Giri ji Maharaj & the Eighth Acharya His Holiness Swami Chaitanya Giri ji Maharaj. I hope that with their supreme grace we will see the dawn of the Divine Era of the Shankracharya's period when the preachings of the Vedic Sanatan Dharma will not only be done by words but also reflected in actions of the Acharyas.

27th Sept. 1996

Place:
Kailash Vidya Tirth
6, Bhai Veer Singh Marg,
New Delhi-110001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मविद्यापीठ श्रीकैलास आश्रम ऋषिकेश की परम्परा एवं वर्तमान दशम पीठाधीश्वर–काल की उपलब्धियाँ

श्रीमद्भगवद्गीता अध्यात्म विद्या–वारिधि के चिरकालिक मंथन से उपलब्ध रत्नों में कौस्तुभ मणि है। उसके दिव्यालोक से समग्र भूमण्डल उद्भासित होकर शताब्दियों से मानवमात्र के सर्वांगीण अभ्युदय का प्रशस्त एवं परिष्कृत मार्ग दर्शन करता आ रहा है। इस संदर्भ में भगवान् की अमृतवाणी मुखरित हुई है कि साधु पुरुषों की रक्षा, दुष्कर्मियों के विनाश और धर्म की सत्यनिष्ठा के लिये मैं धराधाम पर अवतरित होता हूँ। सच पूछा जाय तो अपनी अप्रतिम विलक्षण आद्या शक्ति के माध्यम से भगवान् अनीति, अन्याय और साधु–पुरुषों के उत्पीड़न से द्रवित, करुणानिधि बनकर आते और अविद्या के अंधकार को दूर कर धरा को सुख–शांति और आनंद का धाम बना देते हैं।

कैलास भगवान् शंकर का दिव्यधाम है। वहाँ सतत् अमृत वर्षा होती रहती है। वहाँ राग, द्वेष एवं मोह का कहाँ पता है ? भगवान् शंकर ब्रह्मवेदस्वरूप व्यापक विभुसत्ता हैं। वहाँ निर्विकल्प निराकार एक के अतिरिक्त दूसरा कौन है ? वह सत्यम् शिवम्, सुन्दरम् है। सत–चित् आनन्द है। इसीलिए कविकुलगुरु कालिदास ने हिमालय को "देवात्मा" कहा है।

कुमारसंभवम् में कवि की उक्ति है :–

"अस्त्युत्तरस्यांदिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः"

इस सत्य का राष्ट्रकवि दिनकर ने भी अनुमोदन करते हुए कहा है :–

मेरे नगपति मेरे विशाल ।
साकारदिव्य गौरवविराट पौरुष के पुंजीभूतज्वाल ।।

हिमालय मणिरत्नों, अमृतोपम जड़ी–बूटियों, और तपस्वी सिद्ध सन्तों का आवास गोलोक तुल्य है। यह अलौकिक भारतीय संस्कृति की गौरवगरिमा का मूर्तिमानस्वरूप है। यह कैलास हिमालय का मस्तक है वहाँ मानसरोवर में स्वर्णकमल विकसित होते है, हंस जहाँ क्रीड़ा करते हुए क्षीर नीर विवेक करके सरस्वती की आराधना करते है, वहीं– ऋषिकेश ऋषि–महर्षियों, संतमुनियों की साधना भूमि है, जहाँ भगवती भागीरथी के पावन तट पर वे समाधिस्थ हो अपने हृदय के विमल नेत्रों से ब्रह्मदर्शन करके ब्रह्ममय हो जाते हैं। यह नैसर्गिक परम्परा अनंतकाल से चली आ रही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। यह अखिल ब्रह्मांडनायक का दर्शन कराने वाली पुण्यभूमि है, जहाँ पुण्यपुंज के उदय होने पर विलक्षण संत अवतरित हो धर्मरक्षा के अनूठे रचनात्मक कार्य करते है।

आज से एक शताब्दी से कुछ पूर्व ऋषिकेश में एक ऐसे ही विलक्षण तत्त्वदर्शी संत स्वामी धनराज गिरि जी हो गये हैं। जिन्होंने ब्रह्मविद्या के अभ्युदय के परमपावन विलक्षण कार्य किये हैं। उन्होंने ब्रह्मविद्या को भारत के प्रमुख तीर्थधामों से भी लय होते देख अन्तरावलोकन द्वारा यह सत्य संकल्प किया कि ब्रह्मविद्या के पुनरुद्धार के लिये हिमालय की महिमामंडित गोद में सुदृढ़ आसन जमा कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करना है। अतः उन्होंने ब्रह्मविद्या के प्रतीक कैलास आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम के माध्यम से उन्होंने ब्रह्मविद्या के पठन–पाठन, चिन्तन–मनन के अपने सत्य संकल्प को साकार किया और मनीषी, संन्यासी–संतों के सहयोग से अद्वैत वेदान्त के मौलिक ग्रंथों को पढ़ाने, बोध कराने एवं तदनुकूल चरित्र निर्माण का अपूर्व कार्य सम्पादित किया। उन्होंने भगवान् आदि शंकराचार्यजी के प्राचीन शंकराचार्य–पीठों तथा अन्य संस्कृत विद्या केन्द्रों से सघन संपर्क स्थापित करके दुर्लभ ग्रंथों की प्राचीन पाण्डुलिपियों और उनके भाष्य कृतियों और विचारचिन्तन की टिप्पणियों को एकत्रित करने की ओर सक्षम संतों का ध्यान आकर्षित किया।

अपने अलौकिक कार्यों से महाराज जी ने शीघ्र ही बड़े–बड़े युगपुरुषों–महामानवों का ध्यान आकर्षित किया और वे इस स्थान द्वारा प्रवर्तित पुनीत कार्यो से प्रभावित हो यहां अपने चरण रखे। स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद एवं जननायक स्वामी सहजानंद स्रस्वती जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के दिग्गज महापुरुषों ने भी यहां आकर कुछ काल तक वेदान्त ग्रंथों की शिक्षा ग्रहण की।

यह परम्परा इसी प्रकार क्रमशः आगे बढ़ती गई और संत महात्माओं तथा भगवत्भक्तों के सहयोग से ब्रह्मविद्या वल्ली पल्लवित पुष्पित हो अपनी सुगंध चतुर्दिक बिखेरती गई। प्रथम, द्वितीय चरण में आश्रम शब्द के सारगर्भित तात्पर्य के अनुसार संतमहात्माओं ने कठिन परिश्रम और तपसाधना द्वारा आश्रम को परिपुष्ट करने का पुण्य कार्य संपादित करते हुए धर्म की प्रतिष्ठा की। तृतीय चरण में कैलास आश्रम के षष्ठ पीठाचार्य, महामंडलेश्वर विद्यावाचस्पति श्री १०८ स्वामी विष्णुदेवानंद गिरिजी का पदार्पण हुआ। आप वेद–वेदान्त के निष्णात मनीषी, कविशिरोमणि, विलक्षण चिन्तक और ओजस्वी प्रवचनकर्ता संत थे। आपने आश्रम की मर्यादा को अद्भुत शक्ति एवं आलोक प्रदान किया। नवयुग के पदार्पण की दिशा में आपके अद्भुत निर्माणकारी कार्यों से प्रभावित हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तों ने मनीषियों एवं समग्र संत मंडली में आपको बड़े स्वामीजी महाराज की आह्लादकारी उपाधि से विभूषित–सम्मानित किया।

आपके कार्यकाल के बाद दूसरे चमत्कारी महामंडलेश्वर अष्टमपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी चैतन्य गिरिजी महाराज ने कैलास ब्रह्मविद्यापीठ के सिंहासन पर आसीन हो आश्रम के संगठन, प्रचार और प्रसार को एक नवीन स्फूर्ति और ऊर्जा प्रदान की। उन्होंने एक श्रद्धालु भक्तमंडली को प्रेरित और आकर्षित करके आश्रम के कार्य को व्यापक और उदार बनाया।

इनको महात्माओं ने सहानुभूति और सहयोग प्रदान करके पठन–पाठन के जिज्ञासु ब्रह्मचारी एवं समर्पित विरक्त संतों को आश्रम से जोड़ा। इसी अवधि में एक परम तपस्वी एवं निर्लिप्त विरक्त संत जो अध्यात्मविद्या के, विशेषतः अद्वैत वेदान्त के ग्रंथों के उत्कृष्ट अध्येता, चिन्तक और सदाचार की प्रतिमूर्ति स्वामी हरिहर तीर्थजी कैलास आश्रम में एक अलौकिक विभूति के रूप में भगवत् कृपा से आ प्रतिष्ठित हुए। इन्होंने मनोयोग पूर्वक ब्रह्मविद्या के पठन–पाठन को आगे बढ़ाया। ये पदप्रतिष्ठा, राग–द्वेष–मोह से पूरी तरह से दूर रहकर सरस्वती मंदिर में कर्मणा, मनसा, वाचा भगवदर्पण बुद्धि से स्वधर्म का पालन करते रहे। इस पूज्य आरती के उज्जवल आलोक ने अनेकों जिज्ञासु संतों के हृदय को आलोकित किया और उन्होंने परोपकार में लोकसंग्रह के कार्य में जुटकर अपने जीवन को कृतार्थ किया, धन्य बनाया।

भगवत् कृपा से ही कोटि–कोटि ब्रह्मांडों की व्यवस्था चलती है। जो कुछ हम देख रहे हैं, वह प्रकृति का लीला–विलास है। अपरा प्रकृति का खेल है। जिस महाप्रभु की अहैतुकी कृपा से मर्यादापुरुष श्री स्वामी धनराज गिरिजी ने कैलास की गोद में अभिनव कैलास का निर्माण किया और भगवान् चन्द्रमौलेश्वर की श्रद्धाभाव से प्राण प्रतिष्ठा की, उन्हीं की दिव्यशक्ति से उस ब्रह्मविद्यापीठ का उत्तरोत्तर अभ्युदय होता रहा।

आगे एक ऐसे महामानव विद्यावारिधि दिव्यालोक प्रदान करने वाले प्रचण्ड तेजस्वी सूर्य के आगमन की प्रतीक्षा थी, जो अविद्या के अंधकार को दूर कर जड़चेतन की मनःकल्पित ग्रंथि का भेदन करे और जिससे मानव को जीवनमुक्ति विवेक की उपलब्धि हो।

ब्रह्मविद्या के श्रद्धापूर्वक पठन–पाठन, अध्ययन–अध्यापन और अन्तर्मुखी विमल विलोचन के पलक खुलने से ही यह अलौकिक कार्य सम्पन्न हो सकता है। भगवान् ने एक ऐसे ही पुरुष को कैलास आश्रम से जोड़ने और उसे पीठासीन करने की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। बड़े स्वामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री स्वामी विष्णुदेवानंद गिरिजी महाराज की पारखी आँखें इस कार्य में लगी थीं। उन्होंने किसी अनूठे रत्न की खोज के लिये अनेक विरक्त तपस्वी संतों से संपर्क किया।

प्राचीन भारत के इतिहास में मगध के श्री संपन्न भूस्वामी ब्राह्मणों का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। मगध की नाभि गया में राजर्षिगय ने जो अभूतपूर्व यज्ञ संपन्न करके भारतीय संस्कृति को एक सबल ठोस आधार दिया था उसका बड़ा भारी महत्व है। स्वयं भगवान् विष्णु को अवतरित हो उन्हें दर्शन एवं वरदान देने का युगान्तरकारी पुनीत कार्य करना पड़ा। उससे धर्म की युगानुरूप सत्प्रतिष्ठा हुई। फलतः आज भी वह स्थान समग्र भारत के एक धर्मकेन्द्र के रूप में सर्वमान्य है और दिवंगत पितरों को मुक्ति प्रदान करने की क्षमता रखता है।

कलिकाल के योगियों में चक्रवर्ती सम्राट भगवान् बुद्ध को यहीं आत्मबोध प्राप्त हुआ। उन्होंने दिव्यालोक पाकर विश्व में भारतीय संस्कृति की विजय पताका फहराई तथा भारतीय धर्म को विश्वमानव का, प्राणिमात्र का धर्म बनाया।

उसी मगध की परमपावन धरती पर विश्वविख्यात नालंदा विश्वविद्यालय के विस्तृत प्रांगण में राजगिरि से अनतिदूर गिरियक प्रखंड के एक उत्कृष्ट ब्राह्मण परिवार में सुकृतिपिता जवाहर शर्मा एवं सौभाग्यवती तपस्विनी माता ललिता देवी के घर मार्गशीर्ष अमावस्या वि॰ संवत् १९७८ तदनुसार सन् १९२१ ई॰ में शुभलग्न घड़ी में अवतरण हुआ। उस समय सोनभद्र से नेपाल की सीमा तक मगध साम्राज्य की श्री आलोकित थी और विद्या–वैभव, योग–तन्त्र का अखंड प्रभुत्व विराजित था। आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक अभ्युदय की दृष्टिकोण से इस क्षेत्र में विद्या विज्ञान के तीन अनूठे दीपक प्रकाशित हो रहे थे। नालंदा, उदंतपुरी एवं विक्रमशिला जिन्हें विश्व में बहुत ऊँचा सम्मान प्राप्त था। उसी नालंदा एवं उदन्तपुरी के मध्यवर्ती क्षेत्र में स्वनामधन्य चरितनायक–चंदनशर्मा संज्ञाधारी यह अलौकिक विभूति धरती पर उतरी। पूर्व जन्मार्जित संस्कारों से अनुप्राणित एवं उर्ज्वसित हमारे चरितनायक ब्राह्मण शिरोमणि का बाल्यकाल से ही धर्म कार्यों के प्रति अद्भुत आकर्षण एवं लगाव देखा जाता है। आपने आरंभिक शिक्षा संपन्न होते ही रामचरितमानस का स्वाध्याय और भजन तथा पारायण करने का दृढ़ संकल्प लिया और उसे पूरा करने में सतत् संलग्न रहे। आपने अवधूत संत ब्रह्मानंद जी से सघन संपर्क स्थापित करके उनसे परम्परा के अनुसार पाणिनीय अष्टाध्यायी और महाभाष्य का गंभीर अध्ययन किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कालक्रम से द्वितीय चरण में आप भारत की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक राजधानी सारस्वत साधना की मुक्तिदायिनी नगरी वाराणसी पहुँचने से पूर्व बीस वर्ष की आयु में नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा प्राप्त करने के बाद निरन्तर छः वर्षों तक आप अहोरात्र अध्यात्मशास्त्र के भजन एवं चिन्तन में लगे रहे। ठीक वैसे ही जैसे पंडित ब्रह्मानंदजी अवधूत की सन्निधि में आपने दो वर्ष तक अष्टाध्यायी एवं महाभाष्य का अध्ययन किया था।

काशी, हरिद्वार तथा वटवृक्ष के नीचे रहने वाले कुछ महात्माओं से आपको यह सुनिश्चित समाचार मिला कि कैलास–आश्रम ऋषिकेश में बिना परीक्षा के स्वतंत्र रूप से व्याकरण आदि समग्र शास्त्रों का अध्ययन–अध्यापन होता है। यह बात आपके मनोनुकूल थी। अतः योगिराज ब्रह्मनिष्ठ श्री स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज के आर्शीवाद तथा परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महराज की प्रेरणा से स्वामी आनन्दानंदजी के साथ आप सर्वप्रथम कैलास आश्रम में आये। उस समय परमपूज्य स्वामी विष्णुदेवानंद गिरिजी महाराज महामण्डलेश्वर पद छोड़ चुके थे। उनके स्थानापन्न महामण्डलेश्वर स्वामी निर्दोषानंद गिरिजी महाराज आश्रम में विद्यमान थे। सर्वप्रथम आपने स्वामी हरिहरतीर्थजी महाराज से भेंट की। स्वामी हरिहरतीर्थजी आपकी अध्ययन की जिज्ञासा और अष्टाध्यायी एवं महाभाष्य आदि के अध्ययन की बात जानकर परम प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि अध्ययन की व्यवस्था तो हो ही जाये गी किन्तु आवास के लिये आप महामंडलेश्वरजी से संपर्क करें। फलतः आपने स्वामी निर्दोषानंद गिरिजी महाराज के श्रीचरणों में नमस्कार करके अपना अनुरोध उपस्थित किया। कुछ क्षण मौन रहने के बाद उन्होंने कहा कि आप कोठारीजी से मिलें। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द पुरी जी कोठारी पद पर आसीन थे। उनसे मिलकर आपने आकांक्षा प्रकट की। उन्होंने आपका अनुरोध सुनकर कहा कि यहाँ अभ्यासी के लिए तीन दिनों तक आश्रम में रहने की व्यवस्था है। आपने कहा कि मैं तीन दिनों तक काल–क्षेप के लिये यहाँ रहना नहीं चाहता। मैं तो स्थायी रूप से रहकर तथा आश्रमानुकूल अनुशासन का पालन कर विद्यार्जन करना चाहता हूँ।

उस समय किसे प्रभु की इस रहस्यमयी लीला का पता था कि जिस परम विरक्त एवं तपस्वी विद्यानुरागी को तीन दिनों से अधिक आश्रम में रहने की अनुमति नहीं मिली, वही कालक्रम से प्रखर विद्वान् इस संस्था के सफल संचालक होकर भविष्य में कैलास आश्रम के पीठाधीश्वर बनेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी विद्यानंदजी पुनः काशी पहुँकर धर्मसंघ के प्राध्यापक पं॰ रामयश त्रिपाठी महाराजजी से मिले। महाशय जी ने अष्टाध्यायी और महाभाष्य के पूर्ववर्ती अध्ययन को सफलता का द्योतक न मानते हुए कतिपय प्रश्न पूछे और "प्राची" प्रयोग सिद्ध करने को कहा। आपने अपनी विलक्षण प्रतिभा से महाशयजी और उनके निकटवर्ती विद्वानों को प्रयोगसिद्ध करके स्तम्भित कर दिया। किन्तु गैरिकवस्त्रधारी ब्रह्मचारी के लिये उनके यहाँ कोई स्थान नहीं था। फलतः आप विवश होकर गोविन्द मठ संन्यासी कॉलेज एवं महाविद्यालय में गये। पर वहाँ भी प्रबन्ध न होने के कारण आप स्वामी स्वतंत्रानन्दजी के साथ दक्षिणमूर्ति मठ में गये।

यहाँ अपने व्रत संकल्प के अनुसार कुछ समय तक अनुशासित ब्रह्मचारी रूप में रहकर सिद्धान्त कौमुदी और वेदान्तशास्त्र के ग्रंथों का अध्ययन–मनन किया। काशी में आपने वेदान्त का अध्यन सुप्रसिद्ध विद्वान् पं॰ हरिरामजी शुक्ल एवं पंडित रामचन्द्रजी दीक्षित से किया। नव्यन्याय का अध्ययन आपने पं॰ वामाचरण भट्टाचार्य, पं॰ हरिराम शुक्ल तथा पं॰ जगदीश शास्त्री से किया। १९५७ में आपने वेदान्ताचार्य तृतीय खण्ड प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया।

उज्जैन के कुम्भ में महामण्डलेश्वर स्वामी नृसिंह गिरिजी महाराज ने अपने स्थान पर स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज को अभिषिक्त किया। उज्जैन से काशी लौटने पर श्री दक्षिणामूर्ति संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना हुई, जिसमें उभय महामण्डलेश्वर महोदय ने आग्रह पूर्वक वेदान्त के अध्यापन में आपको नियुक्त किया। एक वर्ष के अन्दर ही आपने आपने अध्यापन और व्यवहार कौशल का इतना सुंदर परिचय दिया कि जिस सन्देश को सुनकर महामण्डलेशर स्वामी महेश्वरानंद गिरिजी महाराज ने बम्बई से विशिष्ट पत्र लिखकर आपको वहाँ बुला लिया। १९५८ ई॰ के ग्रीष्मावकाश में महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानंद गिरिजी महाराज के निमंत्रण पर आप बंबई गये और गुजरात के विसनगर में चातुर्मास किया। चातुर्मास के बाद आप काशी आये और पुनः अध्यापन में तल्लीन हो गये।

इस समय सर्दी के कारण स्वामी नृसिंहगिरिजी महाराज काशी में ही विद्यमान थे। आपके अध्ययन–अध्यापन का कौशल देखकर वे अत्यन्त संतुष्ट हुए और दिल्ली चलने के लिये आग्रहपूर्वक कहा। उस समय दिल्ली संन्यास–आश्रम में वार्षिक महोत्सव चल रहा था। उस महोत्सव में भी आपने भाग लिया। तत्पश्चात् दिल्ली संन्यास–आश्रम के समारोह में आपके प्रवचन से सभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संतमहात्मा–मनीषी बहुत प्रभावित एवं प्रसन्न हुए। उसके बाद दिल्ली के विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय के संचालक का संपूर्ण दायित्व आपको संभालना पड़ा जिसे आपने १९६९ ई॰ तक निभाया।

किंकर्तव्यविमूढ़ दिग्भ्रमित समाज को संस्कार और संगठन प्रदान करके नई दिशा देना, मार्गदर्शन करना, अभ्युदय के पथ को आलोकमय बनाना श्रोत्रिय एवं ब्रह्मनिष्ठ संतों का ही कर्तव्य है। वेद का शोध, मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने ही किया है। वेद अनादि एवं नित्य है। नित्य को ही सनातन कहा जाता है। सनातन ज्ञान ही धर्म है। धर्म की संस्थापना के लिए भगवान् युग–युग में अवतरित होते आये हैं।

अतः निष्कर्षतः यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भविष्यद्रष्टा विरक्त संतशिरोमणि महामंडलेश्वर धनराज गिरिजी महाराज ने गहन–मनन–चिन्तन के बाद जो संकल्प और ब्रत लिया उसे पूरा करना भगवान् की अहैतुकी कृपा द्वारा ही संभव था। समय पाकर वह परिस्थिति क्रमानुसार स्वयं बनती गयी।

"स्वामीजी का पट्टाभिषेक"

"वलीयसीकेवलमीश्वरेच्छा" के अनुसार जिस उद्देश्य से दिल्ली संन्यास आश्रम के महामण्डलेश्वर महाराज ने अपने पद पर आसीन करने के लिये आपको बाध्य किया था और आपका संस्कार भी किया वह परमेश्वर को स्वीकार नहीं था।

इधर स्वामी यशोदानन्दतीर्थ एवं ब्रह्मचारी शाश्वतानंदजी श्री कैलास–आश्रम ऋषिकेश के मण्डलेश्वर पद पर आपको अभिषिक्त करने के लिये प्रयत्नशील हो गये। कैलास आश्रम के मण्डलेश्वर का पद कई वर्षों से रिक्त था। कार्यवाहक महामण्डलेश्वर के रूप में श्री स्वामी चैतन्यगिरि शास्त्रीजी महाराज कार्यवहन कर रहे थे। १९६८ ई॰ के उज्जैन के कुम्भ मेले की कुछ आकस्मिक घटना से कैलास– आश्रम का भाग्य खुल गया। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महाविद्यालय के ग्रीष्मावकाश में त्यागमूर्ति श्री स्वामी गणेशानंदपुरीजी महाराज, महामण्डलेश्वर के आमन्त्रण पर स्वामी प्रेमपुरी सत्संग मंडल बम्बई में आप अपने शिष्यवर्ग सहित गये हुए थे। वहाँ से कैलास आश्रम के अधिकारियों के अनुरोध एवं त्यागमूर्ति के फोन पर विशेष सूचना मिलने के कारण आपको हरिद्वार साधना सदन होते हुए ऋषिकेश आना पड़ा एवं कैलास आश्रम के अधिकारियों, भक्तों, संतों तथा स्थानीय जनता की सम्मति से २१.७.१९६९ को शास्त्रविधि से आप अभिषिक्त किये गये। जिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय आप पीठ पर आसीन हो रहे थे उसी समय इस धरती से चन्द्रलोक पर मानव उतरा था। इसलिये वह काल ऐतिहासिक रूप से सदा स्मरणीय रहेगा।

आप जिस समय कैलास आश्रम में पीठाधीश्वर बनाये गये एवं अभिषिक्त हुए, उस समय आश्रम की प्रबंध व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो गयी थी। दस–पांच संत रहते थे। आवास और भोजनादि के आवश्यक नियम निभाने में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। उस जीर्णशीर्ण भग्न बरामदे में फटी दरी पर संत समागम और समारोह विराजित था। आज सताईस वर्षों के बाद वही कैलास–आश्रम दिव्यालोक प्रदान कर रहा है। उत्तराखंड में सर्वत्र एक नवीन धार्मिक जगमगाहट और स्फूर्ति आ गई दिखाई देती है। दशम पीठाधीश्वर के अभिषिक्त होने के समय चन्द्रमौलेश्वर के भोग तथा स्वयं के लिये बाजार से दूध मंगाये जाने की स्थिति थी। आज आश्रम में एक सौ भक्त, महात्माओं और अन्य विशिष्ट अतिथियों समागतों के लिये गौमाता का शुद्ध दूध उपलब्ध होता है। उत्तम कोटि की पंद्रह जर्सी और गुजराती गौएं आश्रम में पाली–पोसी गई हैं और उनकी उत्तम कोटि की सेवा होती है।

दशम महामण्डलेश्वर जी महाराज के सभी कार्य अलौकिक एवं चमत्कारी होते है। आपने समग्र उत्तरी भारत में कैलास–आश्रम की शाखायें स्थापित कर शांकरी विद्या के पठन–पाठन, प्रचार–प्रसार का अभूतपूर्व कार्य करके हमलोगों को चकित सा कर दिया हे। आपने समानामंडी, पंजाब और रोहतक, हरियाणा प्रदेश में कैलास आश्रम की सुदृढ़ शाखायें स्थापित कीं। इन सभी शाखा–आश्रमों में सन्त महात्मा रहते है तथा संत–अतिथि और गौ सेवा का पुण्य कार्य होता रहता है। साथ ही, भजन–चिन्तन एवं ब्रह्मविद्याा के पठन–पाठन की भी समुचित प्रबंध व्यवस्था से समाज में धर्म प्रचार का कार्य होता है। तक्षशिला के प्रांगण में चतुर्दिक देविशारदा की वीणा का मधुर नाद गूँज रहा है और लोग आश्रम के पुस्तकालयों में अध्ययनशील हो अपने विषाद को त्वरित गति से मिटाने में सफल होते देखे जाते हैं। मालूम होता है यह कैलास, सनातन शाश्वत कैलास की अभिनव सौम्यमूर्ति बन, अनेक स्थलों में सुशोभित हो रहा है।

अनन्त श्रीविभूषित महाराज जी की परम कृपा से कानपुर में भी कैलास आश्रम की शाखा और विद्या मंदिर की स्थापना हो गयी है और वहाँ लोग विशुद्ध धार्मिक वातावरण में शिक्षा और संस्कार प्राप्त करते हैं।

प्रयागराज नई झूसी में भी कैलास–धाम नाम से कैलास आश्रम की भव्य एवं लोक हितकारी शाखा कई वर्ष पहले से बन चुकी है। यहाँ बच्चों के लिये बाल शिक्षा विद्यालय भी संचालित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होता है। जहाँ डेढ़ सौ बच्चों को नित्य भोजन जलपान दिया जाता है। यह वही स्थान है जहाँ कुमारिलभट्ट अपने पिता द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय में यदाकदा निवास करते थे। और उनकी बहन भारती देवी जो मंडन मिश्र की धर्मपत्नी थी, यहाँ के महिला महाविद्यालय की प्राचार्या थीं। तत्कालीन मगधनरेश महीपाल और चालुक्य तथा राष्ट्रकूट राजाओं की राजकन्यायें उस विद्यामंदिर में सारस्वत साधना करती थीं।

आपके पीठासीन होने के पहले कैलास–आश्रम, ऋषिकेश एवं दशनाम संन्यास आश्रम भूपतवाला, हरिद्वार दो ही केन्द्र थे। ऋषिकेशस्थ आश्रम का ही एक प्रमुख अंग हरिद्वार का भी आश्रम था। उसके बाद आपके पुरुषार्थ एवं त्याग–तप, तथा व्यवहार कुशलता से कैलास–आश्रम, उजेली, उत्तरकाशी, श्रीराम–आश्रम, समानामंडी–पटियाला, श्री कैलास–आश्रम माडल टाउन रोहतक, श्री आद्यशंकराचार्य स्मारक श्री कैलास विद्यातीर्थ भाई वीर सिंह मार्ग नई दिल्ली, कैलास विद्यातीर्थ राजगीर (बिहार), नर्मदा सत्संग आश्रम भिलाड़िया घाट पो॰ शिवपुर होशंगाबाद, कानपुर आदि लोकोपकारी शाखा–संस्थाओं की स्थापना और प्रबंध व्यवस्था आपके कुशल कर्मयोगी होने के प्रमाण स्वरूप शांकरी विद्या के प्रचार–प्रसार में संलग्न राष्ट्र की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मर्यादा की रक्षा करते हुए धर्म के अक्षयवट को सींचते और सम्पोषण प्रदान करते हैं। सभी आश्रमों में संत–अतिथि, ब्रह्मविद्या जिज्ञासुओं और गोमाता की श्रद्धापूर्ण निस्पृह तथा अखंड सेवा होती है।

ऋषिकेशस्थ कैलास आश्रम, यदि राष्ट्रधर्म का मेरुदण्ड है एवं प्राणवायु की संवाहिका सुषुम्ना का आधार है तो सहस्त्रार और मूलाधार को जोड़ने वाली उस विलक्षण विद्युत शक्ति को सहयोग देने वाली इड़ा, पिगंला, पयस्विनी, गांधारी, यशस्विनी, वारणा आदि की तरह आपके शेष आश्रम भी मर्यादानुसार सतत् सक्रिय हैं।

इन आश्रमों में प्रत्येक का अपना महत्व है किन्तु मेरी दृष्टि में नई दिल्ली भाई वीर सिंह मार्ग पर, भगवान् आद्यशंकराचार्यजी का भव्य स्मारक कैलास विद्यातीर्थ सर्वोपरि महत्व रखता है और इस राष्ट्र–विप्लव की संक्रमणकालीन संकटापन्न घड़ी में, राष्ट्रीय चरित्र निर्माण और राष्ट्र को नई दिशा, नया आलोक प्रदान करने वाला है जो नवयुग के अनुरूप अभ्युदय कार्य में लगा है।

भारत की राजधानी में संसार के सभी देशों के महामनीषी और राष्ट्राध्यक्ष आते रहते हैं और इस आश्रम से उन्हें भारत के उस अतिप्राचीन सनातन सार्वभौम दृष्टिकोण को समझने में सहायता मिलेगी जिसे भगवान् मनु का मन निम्न श्लोक डंके की चोटपर व्यक्त कर रहा है:–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।"

जिस प्रकार मरीचिमाली प्राची में उदय होकर समग्र भूमण्डल को दिव्यालोक प्रदान करता एवं सुख शांति प्रदान करता है, उसी तरह त्याग तपस्या की पुण्यतमा धरती पर अनेक कल्पों से दुर्लभ आत्मबोध को सम्यक् संकल्प से प्राप्त करने वाले युग प्रवर्तक महामानव बुद्ध और उनके पट्टशिष्य, सारिपुत्त, महामौद्गल्यायण एवं महाकाश्यप जैसे भूस्वामी ब्राह्मणों की परम्परा में अवतरित अलौकिक मनीषी संत स्वामी विद्यानंद गिरिजी महराज ने तथागत के सार्वभौम दर्शन की भाँति आज के दुःख–संतप्त मानव को विश्वधर्मदर्शन का दिव्यालोक प्रदान करने की परम पुनीत भावना से पांच पहाड़ों की मनोरम नैसर्गिक छटा के बीच बसे गिरिव्रज राजगीर में कैलास विद्यातीर्थ नामक दूसरा आश्रम स्थापित कर मानवमात्र का भारी कल्याण किया है। ब्रह्मविद्या के दिव्य मूर्तिमान स्वरूप का ही नाम कैलास है। अविद्या के अंधकार को दूर करने वाले आदित्यवर्ण परमप्रकाश को ही विद्या कहते है, जहाँ ब्रह्मज्ञान के अतल महासागर में डुबकी लगा सहज ही आत्मबोध प्राप्त करते है, उस स्थान को पुण्यतीर्थ समझना चाहिये। अपने अन्तःकरण के चिन्तन मनन में तीनों शब्दों की यह संगति है।

महामंडलेश्वरजी महाराज ने विगत् १९९३ ई॰ के पुरुषोत्तम मास में इस आश्रम की स्थापना की थी। स्थापना का कारण क्षेत्रीय जनता और समर्पित समाज सेवकों का श्रद्धापूर्ण आग्रह ही है। लगभग साठ (६०) वर्ष पूर्व युगपुरुष जननायक स्वामी सहजानंद सरस्वती ने यहां ब्रह्मर्षि कल्याण मंच की स्थापना की थी। वह संस्था स्थानीय लब्धप्रतिष्ठ जनों के सहयोग से बनी थी, किन्तु काल प्रवाह में आगे नहीं बढ़ सकी। भगवत् प्रेरणा से उसी संस्था के पुराने संचालकों ने ऋषिकेश कैलास आश्रम में पहुंचकर संस्था की भूमि आश्रम की ट्रस्ट कमेटी के नाम निबंधित करके महाराज श्री को बाध्य किया कि आप वहाँ कैलास आश्रम की शाखा स्थापित करें जिससे लोक कल्याण का कार्य हो सके।

वर्तमान संवत् २०५३ वि॰ तदनुसार जून १९९६ के अंत में द्वितीय पुरुषोत्तम मास में राजगीर आश्रम में मैं गया था। वहाँ आश्रम, निर्माण की दिशा में क्रमशः प्रगति है। महाराज श्री की प्रस्तावित निर्माण योजना बहुत महत्वपूर्ण है। भगवान् कृष्ण ने जहाँ जरासंध द्वारा कई सौ बंदी राजाओं को मुक्त किया था, जहाँ बुद्ध एवं महावीर की पावन तपस्थली रही है, उस धरती पर अब एक अभिनव वैद्यनाथ मंदिर के निर्माण का संकल्प हो चुका है। निर्माण–समिति एवं संरक्षक मंडल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का भी गठन हो गया है। यहीं सप्तपर्णी गुफा में बुद्ध के संघपति महाकश्यप की अध्यक्षता में, प्रथम संगीति हुई थी, और उसमें त्रिपिटक का संकलन हुआ था। अतः विश्व के सभी देश इस स्थान को आदर की दृष्टि से देखते हैं।

अभिनव वैद्यनाथ मंदिर का गर्भगृह 20 x 20 फुट होगा। जिसमें शिवपंचायतन की प्रतिष्ठा मध्य में होगी। मंदिर के आगे पूर्व भाग में एक महामंडप होगा। मंदिर की परिक्रमा ६ फुट चौड़ी होगी। उस परिक्रमा के पश्चिम भाग में शिल्पियों के द्वारा दशावतार की प्रतिमा बनवायी जायेगी। मंदिर की ऊँचाई कई खंडों में होगी। सत्संगभवन में आदि शंकराचार्य और कृष्णार्जुन की प्रतिमा जयपुर के शिल्पियों के द्वारा बनवाकर दीवाल में लगवाई जायेगी।

कैलास ब्रह्मविद्यापीठ पर आसीन हो महाराज श्री ने और अनेक अलौकिक कार्य किये। आपने आश्रम के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में तीर्थयात्रा रेलवे ट्रेन द्वारा छः सौ संत एवं भक्त–मंडली सहित समग्र भारत के तीर्थों की परिक्रमा की और श्रद्धालु धर्म–प्रेमियों को सहज में तीर्थ–दर्शन कराया। दूसरा विलक्षण कार्य आपने आश्रम के संत महात्मा और महामंडलेश्वरों द्वारा संग्रहित शांकरी विद्या के ग्रंथों की अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का उनकी टिप्पणी, व्याख्या सहित प्रकाशन करके जिज्ञासुओं की चिरप्रतीक्षित अभिलाषा पूरी की।

आपका तीसरा चिरंजीवी पुण्यकार्य प्रस्थानत्रयी का, कथा सारित सागर एवं पंचतंत्र की कथात्मक शैली में प्रवचन है। आप ने ऋषिकेशस्थ आश्रम और अन्य तीर्थों के महत्वपूर्ण सत्संग समारोहों में गीता, उपनिषद् एवं ब्रह्मसूत्र के मौलिक विचार दर्शन को सहज रूप में जीवन मुक्ति के पथ पर अग्रसर किया। इस क्रम में अष्टादशाह गीता प्रवचन प्रकाशित भी हो चुका है। आपने ईशादिदशोपनिषद् की हृदयस्पर्शी व्याख्या प्रकाशित की है। छान्दोग्य एवं वृहदारण्यक जैसे विशाल कलेवर वाले दर्शनों पर भी आपकी व्याख्या तथा ब्रह्मसूत्र–वृत्ति आदि ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं जो अध्यात्म जगत के मार्गदर्शक आलोक हैं। आपने एक अद्‌भुत कार्य किया है – 'शंकरानंद, आनन्दगिरि और मधुसूदन सरस्वती की गीता–व्याख्याओं से संकलित गीता के शांकरभाष्य को प्रांजल हिन्दी भाषा में अनुवाद करके'–जो प्रकाशन के क्रम में है।

ऋषिकेशस्थ आदि ब्रह्मविद्यापीठ विद्युत उत्पादन केन्द्र है। जहाँ से भागीरथ प्रयास के बाद गोमुख की गोद से शांकरवेदान्त की सुरसरिता सतत् अपनी मधुर कलकल ध्वनि द्वारा गिरिकंदराओं में–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणि ।
सदा मे समत्त्वं न मुक्तिर्न बंधश्–
चिदानंदरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ।।

की अमरवाणी विश्वमानव को स्वधर्म के बोध के लिये प्रेरित करती है।

अनन्त श्री विभूषित आपने अपनी सर्वदर्शनाचार्य की विशिष्ट उपाधि को अपने सार्वभौम धर्म कार्यों से सम्यक् प्रमाणित कर दिया। ऋषिकेशस्थ कैलास आश्रम में दो और विलक्षण कार्य सम्पादित किये हैं जो संस्कृति के मेरुदण्ड के सहयोगी, इड़ा और पिंगला स्वरूप हैं। धर्मनिष्ठ सद्गृहस्थ भक्तों और परोपकारी समाज सेवकों को ब्रह्मविद्यापीठ से जोड़ने के लिए सद्गृहस्थों एवं सन्तमहात्माओं के आवासों को कैलास आश्रमसेतु से जोड़ कर एक विलक्षण कार्य किया। दूसरा विलक्षण कार्य है ज्ञानियों में अग्रगण्य भक्तराज हनुमान जी की विशालकाय प्रतिमा की सेतु के प्रहरी रूप में स्थापना। हनुमान जी ने ही जन सहयोग से सेतु का निमार्ण कर आसुरी शक्ति पर विजय पाई थी और उसी स्मृतिरूप सेतुबन्ध रामेश्वर की स्थापना की गई थी।

यतीन्द्र कुलतिलक महामंडलेश्वर स्वामी विद्यानंद गिरिजी महाराज अपर महामानव हैं, वे धन्य है, शिव स्वरूप हैं। वे युग पुरुष हैं। उन्होंने शांकरी विद्या का प्रचार–प्रसार करके नवयुग का आगमन किया है। अपने इन दो शब्दों के साथ यह अकिंचन उनके श्रीचरणें में अमृत महोत्सव के पुनीत अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

– दण्डिस्वामी विमलानंद सरस्वती
बी. ३/१७५, राजगुरु मठ,
शिवाला घाट,
वाराणसी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

परम रम्य गिरिबर कैलासू
सदा जहाँ सिव उमा निवासू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

षष्ठ कैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर
विद्यावाचस्पति पूज्य बड़े महाराज जी

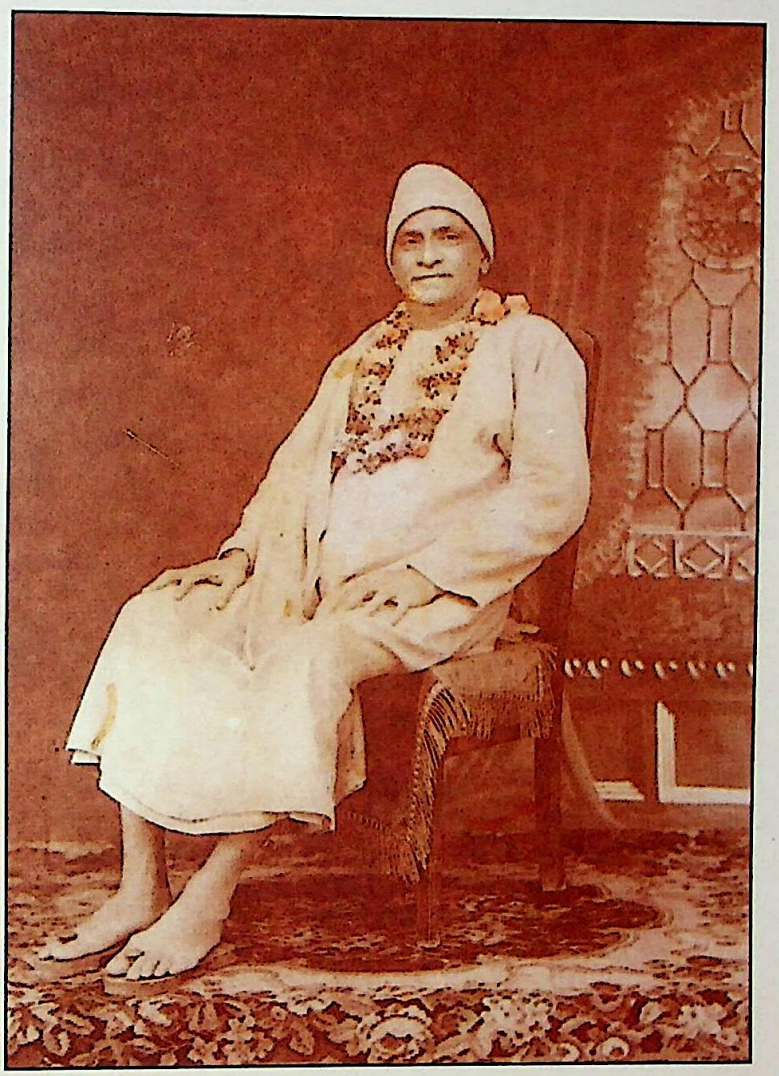

His Holiness Swami Vishnudevanand Giri Ji Maharaj

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

अष्टम कैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर
परम पूज्य शास्त्री जी महाराज

H. H. Swami Chaitanya Giri Ji Maharaj

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

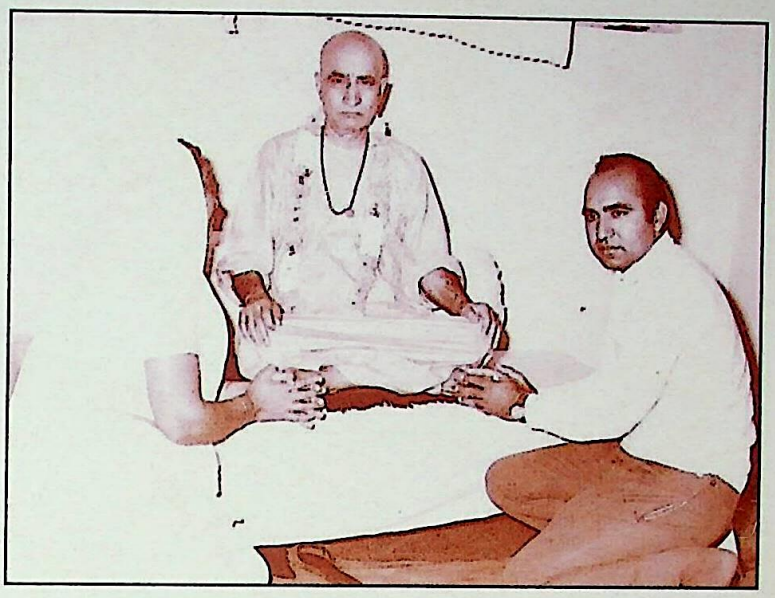

प. पू. शास्त्री जी महाराज कृष्णाचैतन्यधाम राजौरी गार्डन दिल्ली में

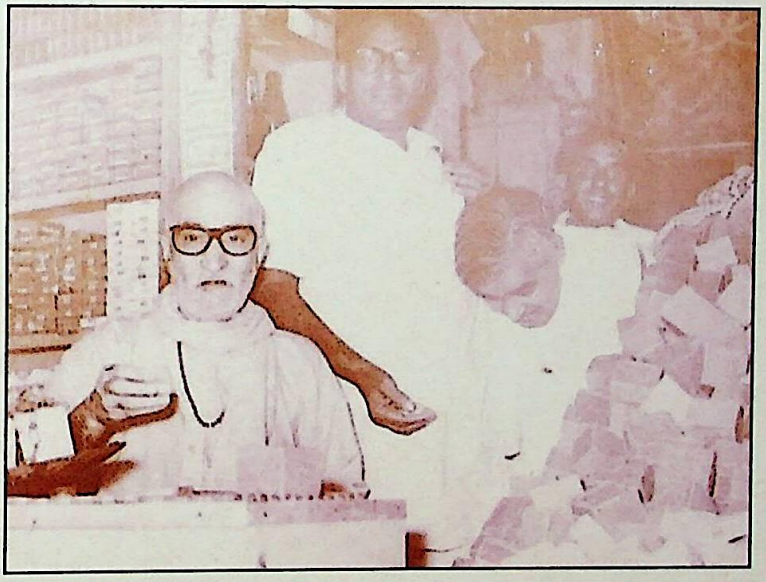

भक्त बलवन्त राज हांडा की दुकान पहाड़ गंज दिल्ली पर शास्त्री जी महाराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

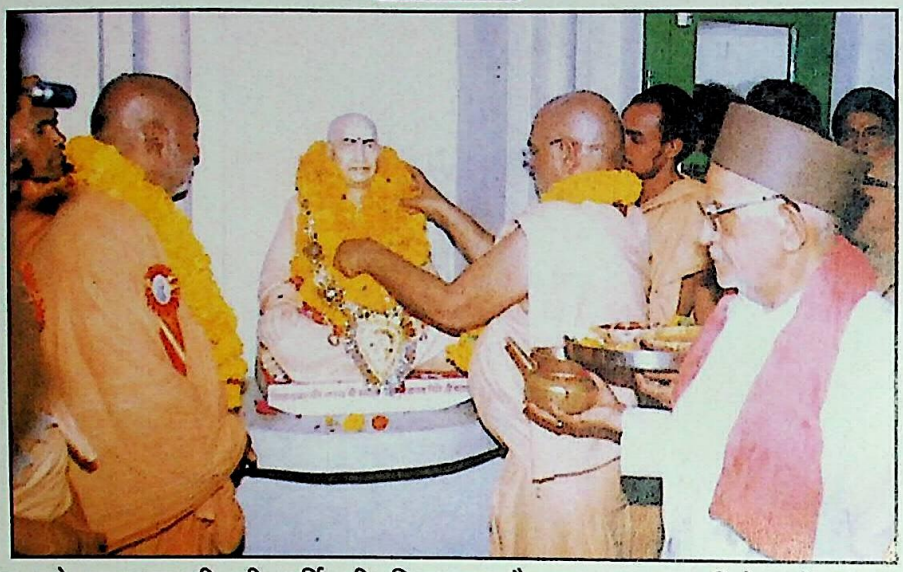

पूज्य बड़े महाराज जी की मूर्ति की विष्णुधाम कैलास आश्रम ऋषिकेश में संस्थापना

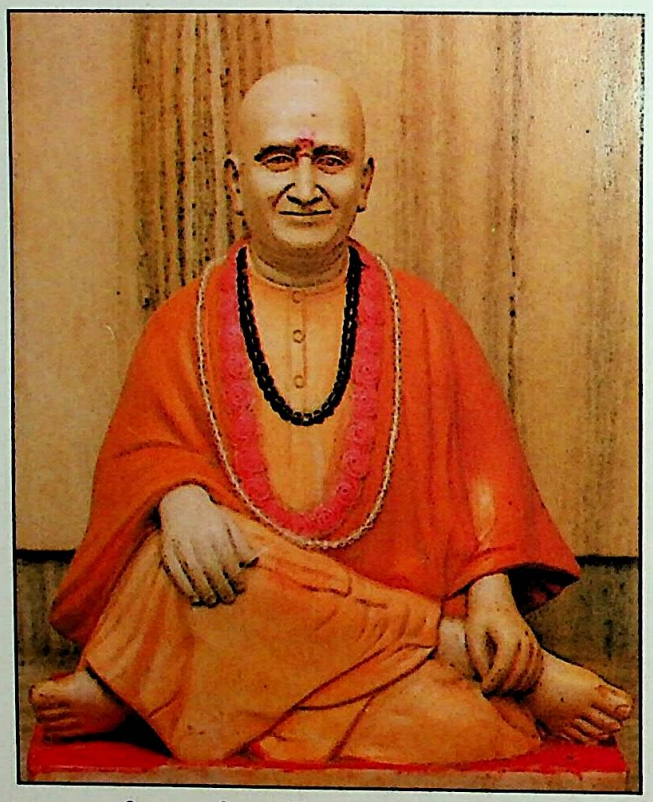

पूज्य शास्त्री जी महाराज की आकर्षक मूर्ति भक्त मुंशीराम नाकपाल, दिल्ली के निवास पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

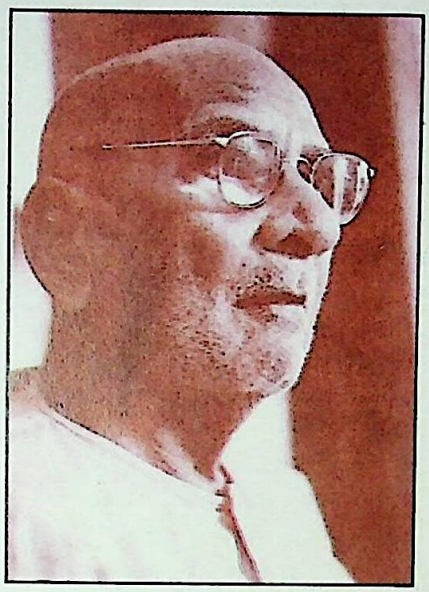

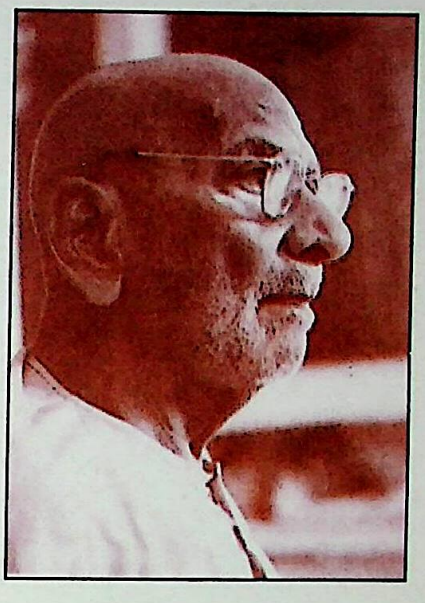

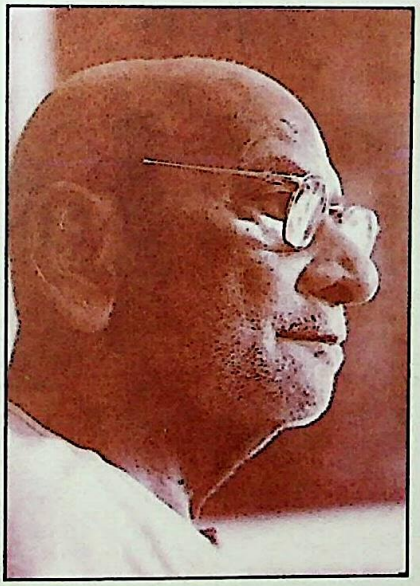

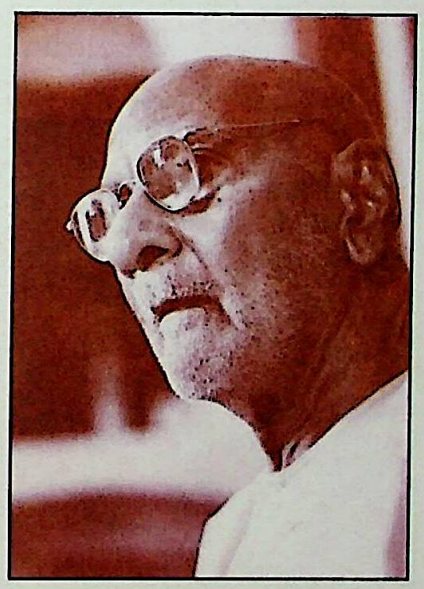

प. पू. बड़े महाराज श्री विभिन्न मुद्राओं में

H. H. Swami Vishnudevnand Giri Ji Maharaj in different poses.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

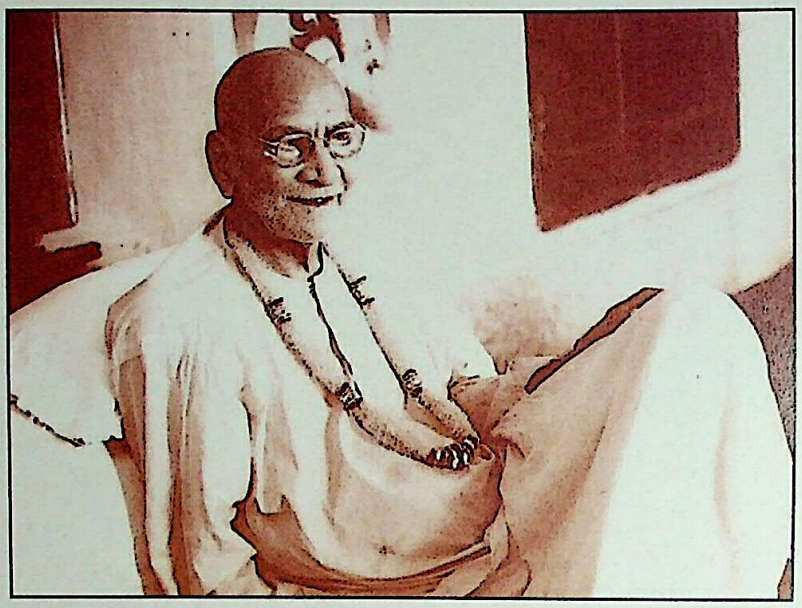

प. पू. बड़े महाराज जी अपने कक्ष में (कैलास आश्रम ऋषिकेश)

H. H. Swami Vishnudevanand Giri Ji Maharaj in his Chamber at Kailas Ashram Rishikesh

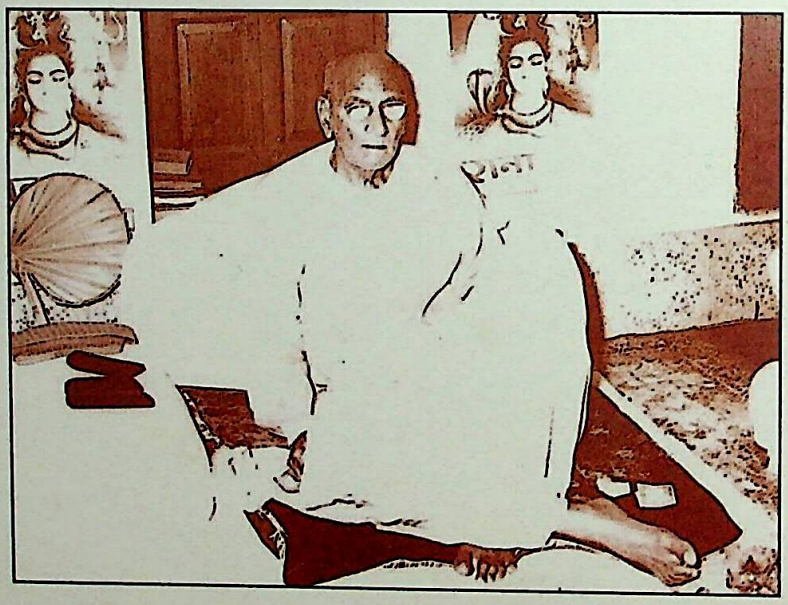

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

दशम कैलासपीठाधीश्वर अमृतमहोत्सव प्रसंग 10.12.96

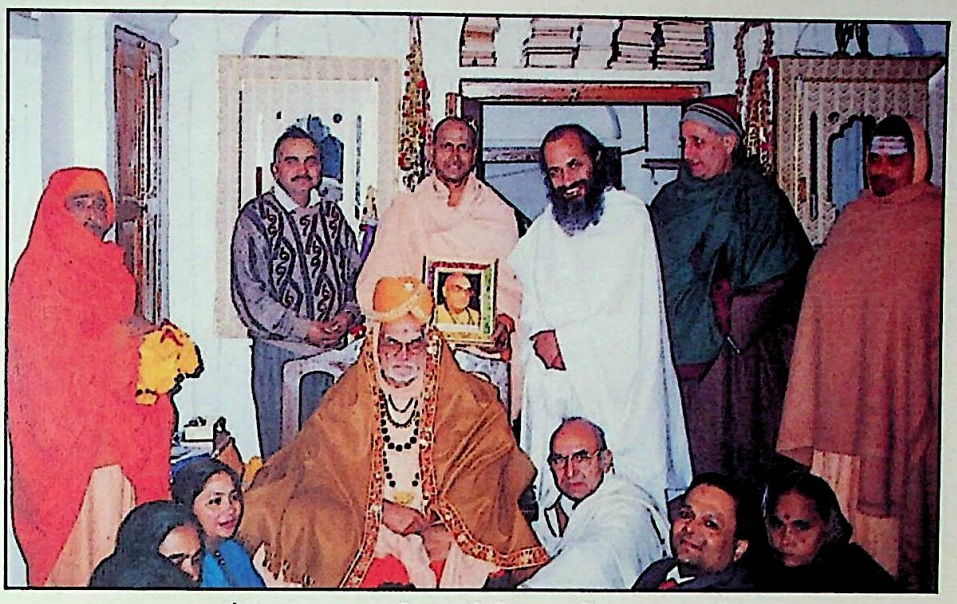

कैलास आश्रम पीठाचार्य निवास में महाराज श्री

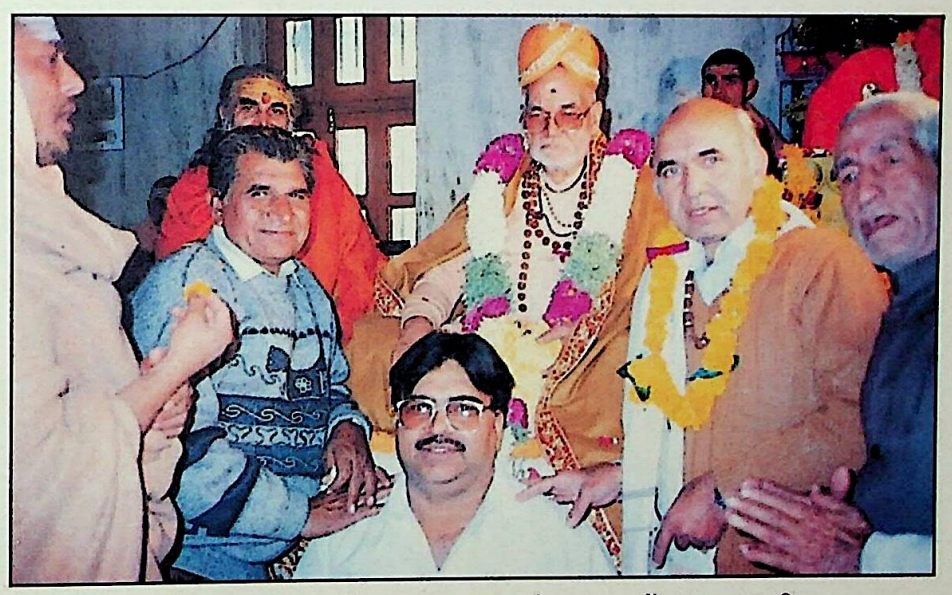

कैलास आश्रम श्री हरभगवान् सत्संग भवन में महाराज श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

कैलास आश्रम ब्रह्मविद्यापीठासीन दशम पीठाधीश्वर जी के चरणों में कुछ भक्त

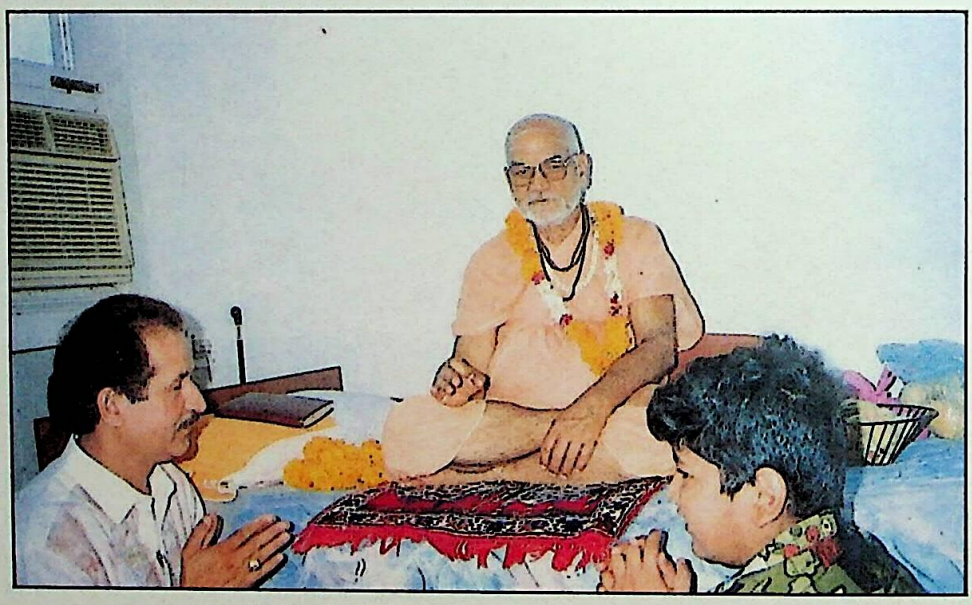

महाराज श्री के चरणों में श्री नरेन्द्र चानना एवं बालक मयंक चानना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदान्तरत्नाकर

प्रणेता

षष्ठ कैलास पीठाधीश्वर
आ. म. मं. स्वामी विष्णुदेवानन्द
गिरिजी महाराज

भाषानुवादक

अष्टम कैलास पीठाधीश्वर
आ. म. मं. स्वामी चैतन्य
गिरि जी महाराज

भाषानुवाद संस्कर्ता

दशम कैलासपीठाधीश्वर
आ. म. मं. स्वामी विद्यानन्द
गिरि जी महाराज

अंग्रेजी अनुवादक

स्वर्ण लाल तुली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संसारोरुकरञ्जकाननभुवं चेतोऽम्बुदा गोचरा
बोधार्कं स्वपिधाय सन्ततममी सिञ्चन्ति रागाम्बुभिः।
जीवोऽयं चिरमत्र घोरगहने भ्राम्यन्नहो ताम्यति,
त्राता कोऽस्य पशोर्ऋते पशुपतेः संसारकान्तारतः ।।१।।

यह संसार एक अत्यन्त गहन करञ्जवन है, जो चित्तरूपी पृथ्वी में उत्पन्न होता और फलता फूलता है। उस चित्तभूमि में विषयात्मक मेघ ज्ञानसूर्य को ढककर रागरूपी जल बरसाते हैं, जिससे संसार–वन की पुष्टि होती है। यह जीव अनादि काल से इस घोर जंगल में भटकता–भटकता बहुत दुःखी हो रहा है। इस संसार–कानन से जीव की रक्षा परमेश्वर के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता ।।१।।

(1) This world is like an extremely dense forest full of 'thorny' trees. Mind is the land on which it sprouts and grows. The clouds of sensual pleasures nourish it with the water of attachment and cover the sun of wisdom as well. The soul has been wandering in this severe forest for endless time and experiencing immense pain. None else than God can save man from this.

यावद्रागस्य रेखा विलसति हृदये प्रेयसि क्वापि जन्तो-
र्मन्तोस्तावन्न मुक्तः प्रभवति भवितुं कोऽपि संसारहेतोः।
चेतोऽस्वस्थं च तावद्विषयविषरसोल्लासवैषम्यभावाद्
दावात्तस्माद् भवाभादवितुमभिलषन्नुत्स्यादवावाऽनुरक्तेः ।।२।।

जब तक मनुष्य के हृदय में किसी भी प्रिय वस्तुविषयक अनुराग का बिन्दु भी है तब तक सांसारिक दुःखों के मूल कारण अज्ञानरूप अपराध से मुक्त नहीं हो सकता और तभी तक विषयोपभोग की इच्छा के तारतम्य से उसका चित्त अस्थिर रहेगा। इसलिए इस दावानल के सदृश सन्तापजनक संसार से अपनी रक्षा चाहने वाले पुरुष को सबसे पहले विषयानुराग को दूर करना चाहिये।।२।।

(2) So long as there is even the slightest attachment in the heart of man for anything dear to him, he cannot absolve himself of the curse of ignorance, the root cause of the painful worldly experience and until then his mind shall remain unsteady due to varying degree of desires. Therefore one who wants to protect himself form the world, painful like the forest fire, he must first get rid of attachment to things.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रागान्धो नैव पश्येदचिरमुपनमद्दुःखदावौघसंघा-
स्तत्रायं को वराकः स्फुरितुमलमहो दीपकाभो विवेकः।
तस्माद्रागोरुपाशे पतनपरवशत्वात्तु पूर्वं यतध्वं
सङ्गत्यागे त्वमीषामयिविबुधवराः शक्यते चेन्नराणाम्।।३।।

जबकि रागान्ध पुरुष शीघ्रप्राप्त होने वाले दुःखरूपी दावानल के समूहों को भी नहीं देख सकता तब उस के चित्त में दीपशिखा के समान अति दुर्बल विवेकको अवकाश कैसे मिल सकता है ?

इसलिए हे बुद्धिमान् पुरुषों ! इस रागात्मक विशाल जाल में फँसने से पूर्व इन रागान्ध पुरुषों के सङ्गत्याग के लिए प्रयत्न करो।। ३ ।।

(3) When a man blinded by passion is unable to see even a host of forest fires in the form of miseries, how can he perceive the dim light of the lamp of wisdom? Therefore O'wise man ! Strive to give up the company of such blind persons before you get entangled in the vast net of passion.

जानन्नप्येष जन्तुर्विषयपरिणतिं नीरसां भूरिदुःखां
हानं नैषामभीप्सत्यहह परिचितेः प्राणनत्राणतोऽपि।
वाच्यं किं पामराणामधिगतपरमार्थेष्वनेकेषु सत्सु,
सेयं देदीप्यमाना जगति विजयते वैष्णवी मोहमाया।।४।।

यह प्राणी विषयभोग के परिणाम को अत्यन्त फीका और दुःखमय जानता हुआ भी विषयों में इतना अनुरक्त है कि उन्हें भोगते–भोगते प्राण त्याग करने को भी तैयार रहता है, परन्तु उन्हें छोड़ना नहीं चाहता। यह दशा अपठित मूर्ख पुरुषों की ही नहीं है, प्रत्युत जो शास्त्रज्ञ और अपने को पण्डित मानने वाले हैं वे भी इसी मोह–जाल में फँसे हुए देखे जाते हैं।।४।।

(4) Even though it is clear that the sensual pleasures result only in misery and a feeling of emptiness, the man is so much enamoured by them that he would rather die than leave them. This is true not only of illiterate and foolish persons but also of those who have knowledge of the scriptures and consider themselves learned.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्वायं हन्ताभिलाषोऽचलदमृतपदे सर्ववैराग्यसाध्ये
क्वेदं चात्यन्तगर्ह्यं विषयविषरसे पानलौल्यं मनस्ते।
कस्मादेवं विरोधे सति समधिगते चेष्टमानं सदा त्वं
मन्दाक्षं मन्द नायास्यधमपथमिहाश्रित्य यायात् क उच्चैः ।।५।।

ऐ मेरे चित्त ! बड़े खेद का विषय है कि इच्छा तो तुम उस अचल और अमृत पद की रखते हो जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के विषयों में वैराग्य होने से प्राप्त हो सकता है और प्रवृत्ति तुम्हारी अत्यन्त निन्दनीय विषयरूपी विषमय रस के पीने में हो रही है। इस प्रकार का विरोध जानते हुए भी ऐसी विपरीत चेष्टा करने में तुमको लज्जा नहीं आती ? क्या तुम नहीं जानते कि अधर्म मार्ग में चलने से किसी को उच्च स्थान की प्राप्ति नहीं हो सकती। ।।५।।

(5) O'my Mind ! it is a matter of utmost pity that though you wish to attain immortality and unshakable position, which can only be achieved by dispassion towards all objects of this world, but your actions are directed towards drinking the poisonous soup of those very most contemptuous objects. Knowing such contradiction, are you not ashamed of your perverse activity ? Don't you know that by going down the slope one cannot reach the summit.

कामान् वामानवाप्तुं सततमभिलषन्नैति चेतोऽपि तोषं
शोषं कायोऽप्ययासीदहह परितपन् भोगयोग्यत्वमौज्झत्
सोऽयं हन्तान्तराले विलुलित उडुपे वायुवेगेन सिन्धा-
वासीनो यद्वदेवं करुणमभिलपन् वेपते भोगलिप्सुः ।।६।।

एक ओर तो चित्त विषयभोग की कामना को नहीं छोड़ता और दूसरी ओर भोग का साधनीभूत शरीर रोगों से कृश होकर भोग करने में असमर्थ हो गया। इस प्रकार द्विविधा में फँसा हुआ भोगी दीनतापूर्वक रोदन करता हुआ ऐसे दुखी होता है जैसे समुद्र के मध्यभाग में फँसी हुई तथा वायु के वेग से डूबने को तैयार हुई एक छोटी सी नौका में बैठा हुआ कोई पथिक दुःख से कातर हो जाता है।।६।।

(6) On one hand the mind does not give up the desire for sensual pleasures and on the other, the body which is the means to enjoy them has become too weak with ailments to enjoy. Caught up between the two the man cries pitifully and experiences such agony as a sailor on a small boat about to be drowned by the strong wind in the midst of the sea.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हा हा हन्तोरुरागो दहति वपुरिदं प्रेयसो विप्रयोगे,
संयोगे त्यागमोत्थामपि विमलदृशं कम्पयल्लुम्पतीव।
एवं दुःखैकहेतोरयि शुभधिषणाः काम भोगोरुरागा-
न्नागादस्माददम्योत्कटगरलमयात् त्रस्यत स्वास्थ्यहेतोः ।।७।।

यह राग केवल दुःख का ही हेतु है, क्योंकि विषय न मिलने पर यह शोक और चिन्तादि उत्पन्न करके शरीर को नष्ट कर देता है और विषय प्राप्त होने पर शास्त्रपर्यालोचन से उत्पन्न हुई विवेक–दृष्टि को लुप्तप्राय कर डालता है। इसलिए हे निर्मल बुद्धियुक्त मुमुक्षु पुरुषों ! तुम अपने कल्याण के लिए दुःखमात्र के हेतुभूत अचिकित्स्य और भयंकर विष से भरे हुए इस विषयभोगासक्तिरूप सर्प से सदा बचते ही रहो।।७।।

(7) The passion results only in misery, as in the event of not getting the desired objects it produces sorrow and tension which destroys the health of the body and on acquiring them, it blinds the vision of discrimination born out of the study of scriptures. Therefore O'pure and wise aspirants ! For your own good, always beware of the snake of attachment to sensual pleasures whose deadly poison has no anecdote and causes only misery.

यत्पूर्वं त्वमृतेन तुल्यमभवत्प्रेयोऽद्भुतं वस्तु मे,
कस्मात्तत्त्वगतेऽपि दीर्घसमये क्ष्वेडायते सम्प्रति।
स्वप्नोऽयं किमिवेन्द्रजालमथवा मोहोऽथवा मामको,
ज्ञातं भो ननु मायिकस्य जगतो रूपं चलं न स्थिरम्।।८।।

जो वस्तु पहले मुझे अमृत के समान प्रिय थी, वही कुछ ही समय में न जाने विष के समान क्यों प्रतीत होने लगी है। क्या स्वप्न है अथवा इन्द्रजाल है या मेरा ही भ्रम है ? नहीं, यह सब कुछ नहीं है। किन्तु इस मायिक संसार का स्वरूप ही चंचल है ; स्थिर नहीं है, यहाँ प्रत्येक वस्तु कुछ काल तक सुख देकर अन्त में नष्ट होने वाली ही है।।८।।

(8) I do not understand why a thing which was earlier dear to me like nectar begins to appear like poison moments later. Is it a dream or magic or my confusion? No, it is not any of these but it is due to the unsteady nature of the illusory world where everything gives pleasure for some period only and remains no more thereafter.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रागो रागत्वयुक्तः सुखयति हृदयं कालमत्राल्पमेव,
क्लिश्नात्यङ्गं तु तत्राप्यथ न सुखवशान्मन्यते क्लेश एषः
द्वेषत्वं प्राप्य सोऽयं सपदि पुनरहो कृन्ततिस्वान्तखण्डं,
हा हा चण्डं तथापि त्यजति न तमहो पापमेतन्मनो मे।।९।।

राग, रागरूप से थोड़े ही समय हृदय को सुखी करता है। परन्तु उस काल में शरीर को तो दुःख पहुँचाता ही है; तथापि सुख के संस्कारों के कारण वह क्लेश प्रतीत नहीं होता है। फिर वह शीघ्र ही द्वेष का रूप धारण करके हृदय का छेदन करता है। ऐसे दुष्ट को समझ कर भी मेरा पापी मन उसका त्याग नहीं करता। ।।९।।

(9) Attachment associated with passion provides comfort to the heart only for a short time. Even during this period though it does harm the body but the same is not comprehended due to the previous favourable impressions of the mind. However, soonafter, when it appears in the form of hatred, it pierces the heart. Even after knowing this to be so wicked, my impure mind does not leave it.

संयोगः प्रेयसो मे मरणमुपगतः कामभूमिं श्मशानं,
कृत्वा रागे चिताग्नौ ज्वलति मम पुरस्ताद्रुदन्तीन्द्रियाणि।
कस्त्राता स्यादमीषां विधिरपि विमुखो रागिणां रक्षणेऽद्य
सद्यो भ्रातर्विवेकाव्रज विरतिवचोभिः समाश्वासयैतान्।।१०।।

विषय के साथ जो संयोग था वह आज मृत्यु को प्राप्त हो गया और अन्तःकरण–रूप श्मशान भूमि में रागात्मक चिताग्नि प्रज्वलित होने लगी। यह देखकर इन्द्रियाँ विह्वल होकर रोने लगीं। इनकी रक्षा अब कौन कर सकता है ? रागियों की रक्षा करने से तो परमात्मा भी विमुख है। इसलिए भाई विवेक ! तुम्हीं शीघ्र आकर वैराग्यपूर्ण वचनों से इनको धैर्य प्रदान करो ।।१०।।

(10) The union with the sense objects has met with its end today and in the cremation ground of mind the fire of attachment has flared up. Seeing this the sense organs got restless and started crying. Who can protect them now ? Even God is not willing to help persons having passion. Therefore O brother wisdom ! Come without delay and buck up the senses with words of dispassion.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्वं यः सुप्त आसीन्मम हृदयबिले रागनामा भुजङ्गः
सोऽयं सद्यो व्यजागर्विषमयः प्रेयसः संप्रयोगे।
हा हा दष्टोऽस्मि दष्टः पतति वपुरिदं घूर्णते मानसं मे
कष्टं भोः सर्वमेतत्सपदि सम भवच्छन्यमन्तर्वियोगे।।११।।

विषम विष से भरा हुआ रागनामक सर्प जो पहले मेरे हृदय रूप बिल में सोया पड़ा था अब विषयप्राप्तिरूप पादाघात से झट जाग पड़ा है। इसके काटने से मेरा शरीर गिरा ही जाता है और चित्त में भी बेचैनी लगी है, परन्तु आश्चर्य है कि विषय का वियोग होते ही ये सब बातें स्वप्न में देखे हुये पदार्थों की तरह भीतर से सारहीन हो गयी हैं।।११।।

(11) The snake of attachment full of deadly poison, which was earlier sleeping in the hole of my heart has suddenly woken up by the impact of the foot of sense objects. Its bite is making my body fall and the mind more and more restless. It is however strange that as soon as the contact with the sense objects ceases, this entire situation turns out to be hollow like a dream.

ज्ञात्वा सत्यं च सारं पुनरपि यदहो चेष्टसेऽसारहेतोः
चेतोऽदः किं तवाभूदहह कथय मे वञ्चितं केन बन्धो।
सिन्धोः सन्तारणो मे व्यवसितमधुना मध्यमानीय तूर्णं
चूर्णं वाञ्छस्यकस्माच्छमविरतिमुखायाः किमेतत्सुनावः।।१२।।

रे चित्त! इस संसर में सत्य और सार वस्तु को जानकर भी तुम असार और मिथ्या वस्तुओं के लिए ही चेष्टा करते हो। तुमको क्या हो गया है ? क्या किसी ने तुम्हें ठग लिया है ? तुम पहले मुझे संसार–सागर से पार करने के लिए तैयार होकर फिर इस सागर के मध्य में लाकर क्या अकस्मात् ही इस शमदम–वैराग्यादिरूप सुन्दर नौका को चूर्ण करना चाहते हो।।१२।।

(12) O' Mind ! What has happened to you that after knowing what is eternal and abiding in this universe you are still striving for false and hollow things. Have you been duped by someone ? After preparing yourself to cross the worldly sea, do you, in the midst, suddenly want to destroy the beautiful boat of controlled mind, subdued senses and dispassion.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हा हा श्रान्तोऽस्मि चेतस्तव विविधवचोभिः समाश्वासनेऽस्मिन्,
क्षामः कण्ठो मदीयश्चिरमभिलपनात्कुण्ठितं प्रज्ञयाऽपि।
त्वं तु स्वीयं न शाठ्यं त्यजसि कथमपि प्रेमतो बोध्यमानं
केनेत्थं पाठितं भो अपि हितवचने नैव विश्वासमेषि।।१३।।

हे चित्त ! नाना प्रकार के उपदेशों द्वारा तुम्हें समझाने में मैं तो थक गया हूँ। बहुत समय तक बोलने के कारण मेरा कण्ठ भी थकने लगा है और अब बुद्धि भी कुण्ठित हो गयी है। परन्तु तुम तो प्रेमपूर्वक समझाने से भी किसी प्रकार अपनी शठता नहीं छोड़ते हो। न जाने किसने तुमको ऐसी शिक्षा दी है, जिसके कारण तुम हितकर वचनों में भी विश्वास नहीं करते हो।।१३।।

(13) O'Mind ! I am tired of teaching you through a variety of sermons. My throat has begun to choke due to these lengthy lectures and now my intellect has also got blunt. But inspite of my advising you with love you have in no way given up your foolishness. I don't know by following whose teachings you have lost faith in my beneficial words.

कण्ठे कलङ्कवलितो यदि नीलकण्ठो
वकुण्ठवत्समपि गुण्ठति चेत् कलङ्कः।
प्रत्यक्ष एव सकलङ्कतया न शशाङ्कः
शङ्के कलङ्कविकलस्तु न कोऽपि रङ्कः।।१४।।

भगवान् शङ्कर के कण्ठ में विषपान की सूचना देने वाला नीला चिह्न है। भगवान् विष्णु के भी वक्षस्थल में श्रीवत्स नामक अङ्क है। चन्द्रमा में तो प्रत्यक्ष ही कलंक दिखायी देता है। इसलिए यह बात निश्चित है कि कलङ्करहित वस्तु संसार में कोई नहीं है।।१४।।

(14) The neck of Lord Shiva bears a blue mark of the poison He drank. Lord Vishnu also has a mark on his chest namely 'Shrivatsa' and the moon's black spot is so clearly visible. There is thus nothing faultless in this world.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यैर्यैस्त्वाभिषङ्गो जगति कृतचरः पामरैर्भोगलिप्सै-
स्तैस्तैः पश्चादतापि प्रचुरमिहशिरो धूनयद्भिश्चिराय।
साक्षात्कृत्याऽप्यसारं विषयमलमिदं भोक्तुमेवेच्छसि त्वं
हा हा चित्रंत्वदीयं चरितमिदमहो चित्त ते किं ब्रवाणि।।१५।।

जिस–जिस भोगलिप्सु मनुष्य ने इन सांसारिक विषयों में आसक्ति की, उसी–उसी को पीछे सिर पटक–पटक कर रोना पड़ा। हे चित्त ! विषयों को इस प्रकार साररहित जानते हुए भी यदि तुम उनके भोग की इच्छा करते हो तो तुम अति नीच हो। इससे अधिक तुम को और क्या कहा जाय ?।।१५।।

(15) Whosoever cultivated attachment with the wordly objects had to weep bitterly later. O' Mind ! Knowing the hollow nature of these objects, if you still desire to have enjoyment from them, you are mean to the extreme. Nothing more can be said about you then.

मोघास्ते ते क्रियौघाः सपदि शममगुः स्वान्तराज्यान्यमूनि
शून्यान्यासन्त्समन्तात्तदपि तदुदिता लेशका ये मनस्थाः।
चेतस्तेऽस्वस्थयन्ति प्रति घटिकमहो कोऽपराधोऽस्य जन्तोः
सन्तोऽत्र स्युःप्रमाणं किमिह बहुविदां वक्तुमर्हाम एते।।१६।।

तूने सुख की प्राप्ति के लिए जिन–जिन क्रियाओं का आरम्भ किया था वे सब विफल रहीं। चित्त के मनोरथ भी सब निष्फल हो गये। परन्तु चित्त में पड़े हुए उनके संस्कार प्रतिक्षण उसे खिन्न किया करते हैं। यह प्राणियों के किस अपराध का फल है ? इस में विद्वत् समुदाय ही प्रमाण है। पण्डितों के सामने हम बहुत क्या कहें ?।।१६।।

(16) All your efforts to get happiness have proved futile. The hopes entertained in the mind have also been dashed to the ground. However the impressions left by these in the mind disturb it every moment. Which are the sins committed by the living-beings those are responsible for this agony, only learned would know. We cannot say much before them.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कस्माद्रौषोत्थमन्तस्त्वमसि सममिदं न त्वदन्यत्तुकिंचित्
त्वं चानन्दैकसीमा तव लवमुपयान्नन्दितं भूतजातम्।
पश्य त्वं वैभवं स्वं चितिविमलतनुः सर्वभूतेश्वरोऽसि
रोदिष्यद्यापि कस्माद्विभुरभवमृतिः किं तवानाप्तमस्ति।।१७।।

हे जिज्ञासुवर्ग ! तुम अपने चित्त में इतने दुःखी क्यों हो ? क्योंकि यह सारा संसार तुम्हारा ही स्वरूप है, तुम से भिन्न यह कोई वस्तु नहीं है। निःसीम आनन्द ही तुम्हारा स्वरूप है। तुम्हारे स्वरूपानन्द के ही एक–एक बिन्दु को लेकर समस्त प्राणी अपने को आनन्दित मान रहे हैं। तुम अपने स्वरूप को अनुभव करो। शुद्ध चैतन्य ही तुम्हारा रूप है। तुम ही सम्पूर्ण प्राणीवर्ग के नियन्ता भी हो। रोते क्यों हो ? तुम विभु और जन्म–मरण से रहित हो और आप्तकाम होने के कारण कोई भी वस्तु तुम को अप्राप्त नहीं है।।१७।।

(17) O' Aspirants ! Why are you so unhappy in your mind? Know this universe to be your own self. There exists nothing other than you. You are the embodiment of endless bliss. All the creatures are considering themselves happy because of the drops of bliss drawn form your nature. You just have to experience your real self and find that you are but pure conciousness and also the controller of all creatures. Why do you weep ? You are omnipresent, devoid of birth and death and being desireless there is nothing which you don't posses.

By committing sin in a secluded place you should not think that none has seen you. Remember God exists everywhere and watches everyone. Therefore beware and don't incur the wrath of the Lord by your sinful deeds.

—Swami Chaitanya Giri

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुद्धं शान्तं स्वरूपं तव गगननिभं कोमलं कोमलानां
तेजः पुञ्जोरुतेजो व्यवधिरसमयं सर्वतः सम्प्रसन्नम्।
मुक्तवा किं वल्गसीहाजरममरमिदं दुःखभूयिष्ठलोके
शोके कस्मान्निमग्नोऽस्यथि सकलजगद् भावयानन्दरूपम्।।१८।।

आकाश के समान शुद्ध तथा शान्त, सबसे कोमल, तेजोमय, सूर्यादिकों का प्रकाशन करने वाला, अनन्त आनन्दमय, अविद्या–कामक्रोधादि सकल मल से रहित तथा मृत्यु आदि संसार धर्मों से रहित जो अपना स्वरूप है उसे छोड़कर इस दुःखमय संसार में क्यों आसक्त हो और किस कारण से शोक में डूबे हुए हो। सम्पूर्ण जगत् को आनन्दमय और आत्मस्वरूप समझ कर सुखपूर्वक विचरो।१८।।

(18) Your own form is pure and peaceful like the sky, sublest of all, full of light, illuminator of bodies like sun, embodiment of infinite bliss, devoid of all impurities like nescience, desire and anger and free of worldly characteristics like death. Forgetting that why are you having attachment with the painful world and get submerged in worry? Considering the whole universe as embodiment of bliss and the same as self, move in it with comfort.

God has provided you many valuable things like eyes etc. It is sheer ingratitude if you do not even remember the name of such a kind and benovalent Lord. Such ungrateful persons have to go through the cycle of birth and death for endless time. Therefore awake and save yourself from the curse of ingratitude by reciting the name of the Lord.

—Swami Chaitanya Giri

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सद्यो बुध्यस्व बन्धो हृदि वियति तवाऽऽयादुदग्राभ्रमाला
मोहाख्या श्यामलाऽलादियमहह बलाद्भानुमन्तं विवेकम्।
ज्वालेयं वैद्युतीह स्फुरति सुनिशिता रागनाम्नी विशाला
यावद्वर्षेन्न हालाहलमियमधुना क्रोधकामाद्यनन्तम्।।१९।।

मुमुक्षुओं ! देखो तुम्हारे हृदयरूपी आकाश में महाभयङ्कर अज्ञाननाम की काली घटा छा गयी है, जिसके कारण से हृदयाकाश में देदीप्यमान विवेकरूप सूर्य लुप्तप्राय हो गया है और राग नाम वाली अत्यन्त तीक्ष्ण विद्युत् की ज्वाला चमक रही है । सो जब तक यह काम–क्रोध आदि दुर्जर विष की वर्षा न करे तब तक ही तुम सचेत हो जाओ, क्योंकि हालाहल की वृष्टि हो जाने पर तो फिर जगना असंभव है।।१९।।

(19) O' Aspirants ! Behold the fearful dark clouds of ignorance engulfing the sky of your heart as a result of which the sun of discrimination has disappeared and fierce lightning of attachment is striking. You better wake up before the poisonous rain of passion and anger begins ; otherwise it would be impossible to get up thereafter.

If you want others to respect and care for you then your first and foremost duty is to respect and love them. Don't you know the eternal principle that you reap what you have sown in the field.

—Swami Chaitanya Giri

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हा हा पीयूषपूसनधिहृदयनदि ज्ञानवैराग्यरूपान्
संशोष्य क्षारकूपानयि खनसि कुतो मारमुख्यानमुत्र।
पश्यायं मूर्ध्निमृत्युर्ललति कतिपयैरर्दितुं त्वां निमेषैः
सुप्तः किं मूढजन्तो व्रज विमलपथे मङ्गले मा प्रमाद्यः।।२०।।

जिज्ञासुओं ! तुम हृदयरूप नदी में परिपूर्ण रूप से वर्तमान ज्ञानवैराग्यादि अमृत के समान शीतल और सुमधुर जल के प्रवाह को सुखाकर उसकी जगह काम–क्रोध आदि खारे जल से भरे हुए कुओं को क्यों खोदते हो ? देखो, तुम को शीघ्र ही नष्ट करने के लिए यह मृत्यु तुम्हारे शिर के ऊपर चक्कर लगा रहा है। ऐसे संकटमय समय में भी तुम क्यों निद्राक्रान्त होकर सोये पड़े हो। इसलिए उठो, आंलस्य और प्रमाद को छोड़कर कल्याणकारी मोक्षमार्ग के पथिक बनो।।२०।।

(20) O'Seekers of true knowledge ! Why do you dig well full of hard water of passion and anger after drying the current of nectar like cold and sweet water flowing in the stream of the heart ? Behold ! Death is roving over your head to destroy you soon. Why are you sleeping even in such perilous moment ? Therefore arise leave laziness and carelessness and tread the path of peaceful salvation.

चेतच्चेत्त्वं हि चेतो जडमिव वचनैर्मामकीनैः प्रबोधं
नायास्यद्यापि नूनं तव किमपि महत्पापमुद्भूतमस्ति।
स्वस्तिस्तात् ते व्रजामो वयमथ विपुलां भूमिकां काञ्चिदेतां
यत्र त्वं नो न चेत्यं परमतिविशदं ज्योतिरेकं समन्तात्।।२१।।

हे चित्त ! यदि तुम चेतन होते हुए भी जड़ की तरह अभी मेरे वचनों द्वारा नहीं समझोगे तो जान लेना कि तुम्हारा कोई अति उग्र पाप उदय हो रहा है। अस्तु, तुम अपनी इच्छानुकूल रहो, हम भी उस स्थान पर जाते हैं जहाँ तुम तथा कोई अन्य अनात्मस्वरूप दृश्य भी नहीं है, किन्तु एक अत्यन्त निर्मल एवं विश्वव्यापी आत्मस्वरूप प्रकाश विद्यमान है।।२१।।

(21) O'Mind ! Though you are a living being yet like a non-living if you don't get wise through my words then know it for certain that some of your most intense sins is going to fructify. In that case let you remain where you want to. I too shall go to a place where you or other undivine sight is not there but where there is only pure and all pervading light of the Self.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चेतः शृण्वेतदन्ते परमहितमहं श्रावये सङ्ग्रहेण
सौख्यं यास्यस्यवश्यं पृथु सपदि सखे केवलं तद्ग्रहेण।
त्यक्त्वाऽनात्माभिमानानतिविशदधिया वीक्ष्य चात्मानमेकं,
पश्यच्चैवैनमन्तर्बहिरपि च जगत्स्वप्नभावेन जह्याः।।२२।।

हे चित्त ! सावधान होकर सुनो, मैं तुमको संक्षेप से परम हितकर वाक्य सुनाता हूँ, जिसका पालन करने से तुम शीघ्र ही परमानन्द को प्राप्त हो जाओगे। वह यह कि तुम देह–गेह आदि में अहंत्व–ममत्वरूप अनात्माभिमानों को त्यागकर तथा निर्मल और सूक्ष्म बुद्धि से एक अद्वितीय आत्मा को साक्षात्कार करके फिर उसी को बाहर–भीतर परिपूर्ण रूप से अनुभव करते हुए इस जगत् को स्वाप्निक पदार्थों के समान समझकर छोड़ दो।।२२।।

(22) O'Mind ! Listen with care my brief but extremely beneficial words following which you will attain supreme bliss soon. That is you leave the feeling of I and mine in things other than the Self and with pure and fine intellect realise the One, Secondless Self. Then experiencing fully the Self within and around, negate this world like things of the dream.

चेतः किं खिद्यसे त्वं लिखितमिह पुरा यद्भवेत्तेविधात्रा
भाव्यं तेनैव नूनं शुभमशुभमथो भुङ्क्ष्व भूत्वा प्रसन्नम्।
मायामेतां समस्तामपि विदितवतस्ते न शोकोचितत्वं,
सत्त्वं भूयिष्ठमङ्गीकुरु विहर सदा स्वीयकर्मानुसारम्।।२३।।

चित्त ! तुम इतने खिन्न क्यों होते हो। परमात्मा ने जो कुछ शुभ अथवा अशुभ तुम्हारे भाग्य में लिख दिया है वही होगा। उसे तुम प्रसन्न होकर भोगो और इस सकल संसार को मायामय समझने वाले पुरुष को शोक अथवा खेद करना उचित भी नहीं है। इसलिए धैर्य धारणकर सदा अपने भाग्यानुसार प्राप्त पदार्थ से प्रसन्न रहते हुए विचरण करो।।२३।।

(23) O'Mind ! Why do you get so disturbed ? Good or bad whatever fate has written for you must happen and which you should accept with pleasure. It is not proper for a person who considers this whole world unreal to feel sorrow or morose. Therefore have forebearance and always feel happy with things brought by destiny.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुःखान्यायान्ति सद्यो जगति तनुभृतां यान्त्यकस्मात्सुखानि
तेषामन्ते सुखानि प्रकटमुपनमन्ते पुनर्दुःखवन्ति।
जायनते चाथ मृत्वा मरणमुपलभन्ते जनित्वा तथाऽमी
एवं संसारवृत्तं चलमधिगतवान् खेदमोदौ भजेत्कः।।२४।।

इस संसार में प्रत्येक प्राणी को कभी तो दुःख घेर लेते हैं, कभी अकस्मात् ही वह बड़े सुख का भोक्ता बन जाता है। तदनन्तर फिर हठात् दुःखों से घिरकर वह अनन्त सुखमय जीवन का अनुभव करता है। इसी प्रकार वह कभी तो जन्मधारण कर मृत्यु को प्राप्त होता है और कभी मरण के पश्चात् पुनः उत्पन्न होता है। इस प्रकार इस संसार को अहर्निश घटीयन्त्र के समान घूमने वाला समझकर कौन बुद्धिमान् सांसारिक पदार्थों में हर्ष अथवा शोक को प्राप्त होगा।।२४।।

(24) Every being in this world is grief stricken at some moment and at another suddenly bursts into joy. Thereafter again he is confronted with sorrow and yet again leads a life full of happiness. Likewise man goes through the cycle of birth and death. Knowing thus that the world is rotating day and night like the wheel of a potter which wise person would get pleased or dejected with the worldly objects.

मृत्योर्माति भयं भूदिति रहसि मनो बोधयाम्येतदेकं
मन्येथा मुक्तरेकं यदि सपदि वियायुः समेऽप्याधयस्ते।
सत्यं प्रत्यञ्चमेकं प्रतिभुवनभवं भावयात्मानमन्तस्त्य-
क्त्वा तुच्छाभमन्यद्धितमहितमिवोद्भासमानं समन्तात्।।२५।।

हे चित्त ! मैं तुमको एक उपाय बतलाता हूँ। यदि तुम उसे सन्देह और भ्रम छोड़कर स्वीकार कर लोगे तो तुम्हें कभी भी जन्म–मरण का भय व्याप्त नहीं होगा, भले ही सारी आपत्तियाँ तुम पर ही आक्रमण कर दें। वह उपाय यह है कि जो हितकर से प्रतीत होने पर भी वस्तुतः अनर्थकर हैं, ऐसे इन तुच्छ अनात्म पदार्थों का राग छोड़कर तुम सत्य, सर्वव्यापी एवं सबके साक्षीभूत अपने प्रत्यगात्मा का ही, मनन, चिन्तन और ध्यान किया करो।।२५।।

(25) O'Mind ! I Have a prescription for you. If you accept it without doubt or delusion you will never be afraid of birth and death even when all the troubles surround you. That is to leave attachment with these petty nonself objects, which though apparently look pleasing but in reality are full of harm. Reflect, contemplate and meditate on the real, Omnipresent Divine Self, the witness of all.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हा गत्वाध्वानमर्द्धं कथमपि च पुरोदृश्यमानेऽपि धाम्नि
चेतः किं मोक्षनाम्नि प्रयदभिवलसे मन्द पश्चादकस्मात्।
भुक्त्वा भोगानिहत्यान्मधुगरलयुताञ्नोपमान्वयस्मरः किं
याह्ययूद्र्ध्वं मागमोऽधो न यदि कृतधियां हास्यतां यास्यसीह।।२६।।

हे चित्त ! परमार्थ का आधा मार्ग तय कर लेने पर और मोक्षनामक परमधाम के दृष्टिगोचर होने पर भी तुम क्यों पीछे संसार की ओर चलने लगे ? क्या मधु और विष मिले हुए अन्न के समान भोगकाल में मधुर और परिणाम में अनिष्ट करने वाले सांसारिक विषयों को अनुभव करके भी उनके स्वरूप को भूल गये ? चलो, उन्नति की ओर बढ़ो। अवनति की ओर जाना उचित नहीं है। यदि ऐसा नहीं करोगे तो बुद्धिमान् पुरुषों में तुम्हारा उपहास होगा।।२६।।

(26) O'Mind ! After covering half of the way to God and having a glimpse of the permanant abode of the soul namely salvation, why are you looking back towards the world? Have you forgotten the real nature of the worldly objects which like the food mixed with honey and poison tastes sweet but result only in misery. Therefore march towards prosperity as it is not proper to move in the direction of adversity and become a laughing stock of the wise.

It is absolute truth that the qualities of the cause come into its effect. If you don't serve your parents and elders and insult them, then surely your children will also not render any service to you or have regard for you.

—***Swami Chaitanya Giri***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एते प्रेयोऽभिलापा अहह कथममी कोमलाङ्गेषु सङ्गा,
रूपं हा पाटलाभं मधु मधुरमिदं चाधरोपान्तलग्नम्।
प्रोत्सृप्ता लोभयन्ते मुखकमल पुटादुत्कटामोदधारा
हाहैवं मोहवन्तो जगति जडधियो ग्रासतां यन्तिमृत्योः।।२७।।

प्रियतमा के वे मधुर आलाप कैसे आनन्दप्रद थे ? कोमल अङ्गों का स्पर्श कैसा लोकोत्तर सुख की वर्षा करने वाला था ? गुलाब के फूलों को भी तिरस्कृत करने वाला कैसा रमणीय रूप था ? अधरोष्ठ में अतीव मधुर मधु लगा हुआ था तथा मुखकमल से बहने वाली उत्कट गन्ध की धाराएँ मन को किस प्रकार लुभाने वाली थीं ? इसी प्रकार मोहजाल में फँसे हुए विषयी पुरुष मृत्यु के मुख में प्रविष्ट हो जाते हैं।।२७।।

(27) How pleasant were the sweet melodies sung by the beloved ? What an unearthly rain of comfort poured by the touch of the soft parts of her body ? What an attractive beauty was her form which even surpassed the beauty of rose flowers ? Not to speak of her lips which were as though coated with the sweetest honey and how mind captivating was the intense fragrance flowing from her lotus face. Such are the thoughts of men who caught in the web of delusion enter the jaws of death.

ज्यायस्येका बुभुक्षा चिरतदनुजनुः सा द्वितीया मुमुक्षा
द्वे अप्येते भगिन्यौ मम च दुहितरावेत्य चेतोऽङ्गणे मे।
वैरायेते तदाद्या करणगणयुतैकाकिनी सा कनिष्ठा
पक्षे याम्यन्ति मायास्तदिह लघुतरं दुर्बलत्वात्प्रियत्वात्।।२८।।

बुभुक्षा और मुमुक्षा नाम की दो बहिनें मेरी पुत्रियाँ हैं, जिनमें बुभुक्षा बड़ी है और मुमुक्षा छोटी। ये दोनों मेरे चित्तरूप आँगन में आकर आपस में लड़ती हैं, बुभुक्षा इन्द्रियों के सहित होनेके कारण बलवती है और मुमुक्षा छोटी तथा अकेली होने के कारण दुर्बल है। इसलिए मैं मुमुक्षा की ही सहायता करूँगा क्योंकि वह दुर्बल और छोटी होने के कारण मुझे प्रिय है।।२८।।

(28) The desire for indulgence and the wish for liberation are my two daughters of which the former is elder. They come to the courtyard of my mind and start querelling. The elder helped by the sense organs is stronger and the younger one is alone and weak. I will therefore help the younger and weak who is also dear to me.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोहान्धप्रविवेकचक्षुष इमे रज्यन्ति कामाकुला
लोका हा विषयेषु मामकमिदं प्रेयः सदा स्थास्यति।
इत्येवं दृढ़बद्धमुग्धमतयो हृष्यन्ति कांश्चित्क्षणान्
दह्यन्तेऽरमनल्पशोकदहने हा कस्य को विद्यते।।२९।।

अज्ञान से विवेक रूप नेत्र के अन्धे हो जाने पर काम और रागादि से आक्रान्त पुरुष 'ये हमारे प्रिय पदार्थ सदा रहेंगे' इस भ्रम के वशीभूत होकर विषयों में आसक्त हो जाते हैं, परन्तु कुछ ही क्षण हर्ष मानकर फिर शीघ्र ही प्रबल शोकानल से सन्तप्त होने लगते हैं। इस संसार में कौन किसकी रक्षा कर सकता है ? ।।२९।।

(29) Men whose power of discrimination has been blinded by ignorance and who are dominated by desire, passion etc indulge in enjoyment of sensual objects thinking erronously that those dear objects will remain with them for ever. Such persons after tasting pleasure for a few moments, soon burn in the intense fire of sorrow. Who can protect whom in this world ?

किमिमामयि दीनतामगाः,
प्रथमानोरुमहत्त्वभागपि।
समधीहि निजं तु वैभवं,
सुखसिन्धुस्त्वमवाप्तसन्नसि।।३०।।

अरे मुमुक्षुवर्ग ! तुम स्वयं प्रकाशमान और निरतिशय महत्त्व सम्पन्न होते हुए भी क्यों इस प्रकार दीनता को प्राप्त हो रहे हो ? अपने स्वरूपका स्मरण तो करो। देखो, तुम परम आनन्द के समुद्र और जो कुछ पाना था उसे प्राप्त किये हुए हो।।३०।।

(30) O'Seekers of Salvation ! Why are you feeling so helpless when you are self-effulgent and endowed with abundant influence ? If you just recaptulate your own nature you will find that you are the ocean of supreme bliss and possess everything worth having.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ममतामभिमुञ्च भिन्नता-
मपि केचित् क्षणमेकमीशते।
तव सोढुमये न संविदः,
किमहन्तामन्येन पश्यसि।।३१।।

देह–गेह प्रभृति में ममता का त्याग करो। शरीर एवं इन्द्रिय आदि में अहन्त्व बुद्धि रखना भी अन्याय है, क्योंकि ज्ञानस्वरूप तुम्हारे में भेद सर्वथा असंभव है।।३१।।

(31) Give up the feeling of mine in your body, house property etc. It is not fair to identify yourself with body and its organs. Being embodiment of knowledge, duality is impossible in you and the feeling of I and mine cannot exist without duality.

अवलोकय सर्वमेकया,
मधुमत्त्या समुदारया दृशा।
निजरूपमनाविलं महद्,
भ्रमभातेषु कथं विमुह्यसि।।३२।।

भ्रममात्र से प्रतीत होने वाली अनात्म वस्तुओं में क्यों मोहित हो रहे हो। अपनी अद्वैत तथा आनन्दामृतवर्षिणी उदारदृष्टि द्वारा सबको निर्दोष परब्रह्म रूप में ही देखो।।३२।।

(32) Why are you getting deluded by nonself things which owe their appearance to false imagination. With your broad sightedness pouring nectar of bliss, behold everything as one with faultless Supreme Divine.

निश्चय करो कि तुम मन और इन्द्रियों के स्वामी हो सेवक नहीं। परन्तु तुम्हारे प्रमाद तथा असावधानता के कारण इन दुष्ट सेवकों ने तुमको अपना दास और गुलाम बना रखा है। जिससे तुम गरीब और भिखारियों की तरह दीन और दुःखी रहते हो। उठो ! अपने अधिकार को अच्छी तरह समझो और इन्द्रियों के गुलाम न बनकर उनके स्वामी बनो तथा जीवन को सफल बनाओ।

–स्वामी चैतन्य गिरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकलं निजरूपमित्यव,
त्यज भेदभ्रममीहसे सुखम्।
यदि भूरिभयं द्वितीयतः,
श्रुतिरप्याह सनातनी तव।।३३।।

यदि तुम सुख की प्राप्ति चाहते हो तो भ्रमात्मक प्रतीति के विषयभूत द्वैतप्रपञ्च की उपेक्षा करो और सम्पूर्ण चराचरात्मक विश्व को अपना ही स्वरूप समझो ; क्योंकि 'उदरमन्तरं कुरुते अथ तस्य भयं भवति' 'मृत्योः सः मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति' इत्यादि सनातनी श्रुतियाँ द्वितीय–दर्शन से ही भय का प्रतिपादन कर रही हैं।।३३।।

(33) If you want to have happiness, ignore the false existence of duality and consider all animate and inanimate universe as manifestation of your ownself. The eternal Vedic Mantras have attributed fear to the vision of duality.

त्यज सङ्गमनात्मभावना–
कृतमङ्गीकुरु सर्वतः शुभाम्।
प्रियतामवलोकयन्नहं
प्रविराजेऽखिलदेहकेष्विति।।३४।।

'सकल शरीरों में उनकी समस्त अवस्थाओं का प्रकाशन करता हुआ मैं स्वयं साक्षी रूप से विराजमान हूँ' इस निश्चय का अवलम्बन लेकर अनात्मभावना से हुई विषयासक्ति को त्याग दो और सर्वत्र प्रियभाव को स्वीकार करो।।३४।।

(34) Taking refuge in the conviction that I exist as the witness, illuminating all the states of all the bodies, give up attachment to sense objects and cherish a feeling of love everywhere.

If you want the Lord to appear in your heart, then make it large and open enough. It is impossible to accommodate the Omnipresent Lord in a closed and contracted heart. Don't you know that a pitcher cannot hold the whole sea.

— ***Swami Chaitanya Giri***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विजहीहि दुरात्मसङ्गतिं,
कुरु शीलान्वितचेतसाममूम्।
जय काममुखानिमानरी-
नवधायात्मनि मानसं मुहुः।।३५।।

दुष्ट पुरुषों की सङ्गति का त्याग करके सर्वदा सुशील और आत्मनिष्ठ पुरुषों का ही सङ्ग करो तथा उनकी बताई हुई युक्तियों से मनकी आत्माकार वृत्तियों का प्रवाह चलाकर काम–क्रोधादि आन्तरिक शत्रुओं का नाश कर डालो।।३५।।

(35) Leaving the company of wicked persons, always associate with persons of fine character who are established in divine self. Also by devising the flow of thoughts towards Self by the methods learnt form the above saints, control the inner enemies like passion, anger etc.

पिरभावय भङ्गुरानिमान्
भवभोगानतिदारुणनये।
व्यथसे किमितीह बालिश ?
प्रसभं त्रोटय मोहबन्धनम्।।३६।।

अरे छोटे बच्चों के सदृश बेसमझ चित्त ! इन सांसारिक विषयों को क्षणभंगुर होने के कारण अत्यन्त दुःख के हेतु समझो और उनके राग से होने वाले दुःखों की निवृत्ति के लिए उनमें पहले से उत्पन्न हुए मोहनामक बन्धन को काट कर विरक्ति का सम्पादन करो।।३६।।

(36) O' Mind, unwise like little kids ! Consider the material objects with their momentary nature as the cause of immeasurable misery. Cut asunder the bondage of delusion with them and cultivate dispassion to get relief from the pain inflicted by them.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवधीरय वीर तानरीन्,
स्वशरीरं नगरीव यैः कृतम्।
शफरीव विनीरतीरगा,
यदधीरं परिवर्तते मनः।।३७।।

हे वीर ! उन रागद्वेषादि शत्रुओं का बहिष्कार करो जिन्होंने तुम्हारे शरीर को ही अपनी नगरी बना रखा है और जिनके पराधीन होकर तुम्हारा चित्त जलहीन तलैया में पड़ी हुई मछली की तरह तड़फता रहता है।।३७।।

(37) O'Brave ! Boycott the enemies like attachment and aversion which have made your body as their home town and under whose slavery your mind has become restless like a fish in a waterless pond.

परिशीलय लीनचेतसा
सततं शास्त्रमिहात्मगोचरम्।
अचिरादनुलप्स्यसे सुखं,
निजपूर्णत्वमधीत्य तत्त्वतः।।३८।।

एकाग्रचित्त होकर निरन्तर उपनिषदादि अध्यात्म शास्त्रों का चिन्तन किया करो जिससे तुम अपने आप को पूर्ण ब्रह्म स्वरूप निश्चित करके शीघ्र ही परमानन्द में मग्न हो जाओगे।।३८।।

(38) With a steady intellect always contemplate on the spiritual texts like Upanishadas which would establish your inner self in the supreme God and submerge you, without delay, in indescribable bliss.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तव नैव कदापि कल्मषं,
धिय एषा गुणदोषकल्पना।
करणं यदि चेष्टते शुभे,
त्वशुभे वाऽप्यथ किं ततस्तव।।३९।।

साक्षिस्वरूप तुम्हारे में कर्तृत्व–भोक्तृत्वादि कोई भी दोष नहीं है और 'मैं कर्ता हूँ' 'मैं भोक्ता हूँ' इत्यादि प्रतीति तो साक्षी के उपाधिस्वरूप अन्तःकरण में जमे हुए कर्तृत्व–भोक्तृत्व के कारण हो रही है। तुमसे सर्वथा पृथक् अन्तःकरण यदि किसी शुभ अथवा अशुभ कर्म में प्रवृत्त भी हो फिर भी तुम्हारा इसमें किसी प्रकार का हानि–लाभ नहीं होता है।।३९।।

(39) Being of the nature of the witness, none of the faults like doership or enjoyer touch you. Such feelings as I am the doer or I am the enjoyer occur due to impressions sticking on the mind, which is of the nature of attributive adjunct of the witness Divine. If the internal organs which are absolutely different from you perform some good or bad action you don't really gain or loose anything.

न खलु त्वमसीह शेमुषी,
न गणस्त्वं करणात्मनामपि।
अपि तु प्रभुरद्भुतः सदाऽ-
स्त्यदसीयः परिभासको भवान्।।४०।।

तुम इस देह में बुद्धि नहीं हो, वैसे ही इन्द्रियों के समुदाय भी तुम नहीं हो, तुम तो उन सबके प्रकाशक, सदा आश्चर्यमय, सर्वसमर्थ, सर्वाधिष्ठान स्वरूप हो।।४०।।

(40) You are neither the intellect nor the outer organs of the body. Infact these are comprehended by the light proivded by you who are everwonderful, almighty and the support for all that exists.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवहेलय भेदकल्पना-
मवलोकस्व समस्तमात्मनि।
सकले च निबोध निष्कलं
सुखचैतन्यमनन्तवैभवम्।।४१।।

भेद बुद्धि का त्याग करके सम्पूर्ण संसार को अपने आत्मा में ही अधिष्ठित समझो तथा सुखचैतन्यैकरस, दिक्कालवस्तु–परिच्छेदशून्य एवं अविद्या और उसके कार्य से रहित आत्मा को अधिष्ठान रूप से सर्वत्र विद्यमान देखो।।४१।।

(41) Disown the intellect that creates difference, consider whole of the world as if imposed on your inner Self and see everywhere, in the form of support, the same Divine Self the embodiment of bliss, everflowing conciousness, devoid of the limitation of direction, time, objects and free of Maya (divine illusion) and its effects.

महिमा तव चैष शाश्वतो
नहि पुण्ये सति वर्द्धते मनाक्।
ह्रसते वृजिने न पूर्ववत्,
प्रथते तत्कृतकृत्यको भवान्।।४२।।

आत्मा की विशेषता यही है कि न तो पुण्यकर्म से उसमें कोई उत्कर्ष होता है और न पापकर्म से किसी अपकर्ष की ही प्राप्ति होती है, किन्तु दोनों दशा में पूर्ववत् स्थित रहता है। इस प्रकार तुम अपने आत्मा की भावना करते हुए एक दिन अवश्य उस आत्मदेव का साक्षात्कार कर लोगे और फिर तुमको कोई कर्तव्य शेष न रहने के कारण सर्वदा परमानन्द का अनुभव होता रहेगा।।४२।।

(42) The divine Self does not receive a boost by a pious action nor does it get depressed by a sinful deed but retains its original poise in both states. Contemplating on the Self in this manner you shall surely realise the Divine in you and having no duties left you would ever remain in blissful state.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिघस्रमधीष्व शान्तये
ननु शान्तीरनुवेदमुद्गताः।
रहसि प्रणिचिन्तयस्व च,
प्रणवं तत्प्रवणेन चेतसा।।४३।।

अपने चित्त को निदिध्यासन के योग्य बनाने के लिए तुम पृथक्–पृथक् वेदों में आये हुए शान्ति–मन्त्र का प्रतिदिन पाठ करो और निर्जन स्थान में तत्पर होकर प्रणव का अभ्यास करो।।४३।।

(43) In order to make your intellect fit for contemplation recite daily the peace mantras described in different Vedas. Also devotedly practise the japa of 'Om' in a secluded place.

अयि चिन्तय चेतसा चिरं
क्वचिदम्भोदविनीलगात्रकम्।
सकलेन्दुसमाभवक्त्रकं
मधुरं श्रीवनमालिनं मुदा।।४४।।

अरे साधकों ! यदि तुम्हारा चित्त नाम–रूप चिन्तन का ही रसिक है तो तुम निरन्तर मन ही मन श्रीकृष्णचन्द्र की घनश्याम एवं पूर्णचन्द्र के समान मुखवाली मनोहर मूर्ति का ही चिन्तन किया करो तथा भगवान् के नामों का ही स्मरण करो ।।४४।।

(44) O' Aspirants ! If your mind is fond of thoughts related to name and form only then always contemplate on the dark complexioned attractive form of Shri Krishana with his face blooming like the full moon and think only of the names of the Lord.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपि भावय भूधरोपमे,
वृषभे रूढमगूढविग्रहम्।
भसितेन विभूषितं जटा-
स्खलदम्भःपृथुपूरमीश्वरम्।।४५।।

यदि आपका चित्त भगवान् कृष्ण की मनोहर मूर्त्ति के ध्यान में रुचि नहीं रखता तो भगवान् शङ्कर के सच्चिदानन्द स्वरूप का ध्यान करो जो पर्वत के समान विशाल बैल पर चढ़े हुए हैं जिनकी जटाओं से भगवती भगीरथी का प्रवाह बड़े वेग से बह रहा है और जिनका देह भस्म से धवलित हो रहा है।।४५।।

(45) In case your mind does not relish the attractive form of Lord Krishna then meditate on Lord shiva the embodiment of existence knowledge and bliss, riding on the mountain like huge bull, having goddess Ganga flowing from his hair with great force and his body smeared with ash.

दुधुवुर्गमनेन मेदिनी-
मपि ये रावणतत्सुतादयः।
इह तेऽपि यमेन चर्विताः
क्व वयं कीटपतङ्गसन्निभाः।।४६।।

जिनके चलने से ही पृथ्वी कांपने लगती थी ऐसे शारीरिक शक्ति रखने वाले भी रावण और उसके पुत्र-पौत्रादि अन्त में काल के गाल में चले गये, फिर मच्छर और मक्खिओं के समान हम लोगों की तो बात ही क्या है।।।४६।।

(46) When Ravana, his sons and grandsons, physically so powerful that their mere walk shook the earth, were consumed by the death in the end then what can be said about us who in their comparison are like mosquitoes and flies.

भगवान् सत्यस्वरूप है, अतः उसे सत्य ही प्रिय है। छोटे से छोटा साधन भी यदि सत्यता के साथ, दम्भ-पाखण्ड और स्वार्थ को त्याग कर किया जाता है तो वह भगवान् के दरबार में गिना जाता है। जबकि बड़े से बड़ा भी साधन यदि दम्भ छल और असत्यता पूर्वक किया जाता है तो वह अनिष्टकर होता है। अतः काम करो और सच्चाई से करो।

– स्वामी चैतन्य गिरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तदुदेधि यतस्व सत्वरं
निजनिःश्रेयसहेतवे स्फुटम्।
विगते सति मानवे वपु-
ष्यभिलष्यन्नपि किं करिष्यसि।।४७।।

यदि मृत्यु से बचने का उपाय केवल भगवद्भजन ही है तो उठों और शीघ्र ही अपने कल्याण के साधन का अनुष्ठान करो, क्योंकि सर्व साधनों के करने में समर्थ मनुष्य शरीर का नाश होने पर तुम चाहते हुए भी कुछ नहीं कर सकोगे।।४७।।

(47) If devotion to the Lord is the only way to transcend death then rise and without delay begin practice leading to your emancipation, because after the end of the human body capable of such efforts you will not be able to do anything even if you wish.

नात्यन्तं कुरु सहसा जनैरबोधै-
रासङ्गं व्रज विदतां समीपमाशु।
उत्कर्षैरथ धिषणां निजाममीषा
मीशानैरपवदितुं वचोभिरान्ध्यम्।।४८।।

अज्ञानी पुरुषों के सहवास में ही आयु को बिताते रहना उचित नहीं है। शीघ्र ही श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ गुरुओं की सेवा में उपस्थित हो जाओ तथा उनके प्रामाणिक और उपपत्तिपूर्ण वचनों का अवलम्बन लेकर अपने हृदयपटल में फैले हुये मोहतिमिर को दूर करने के लिए अपनी बुद्धि में सामर्थ्य सम्पादन करो।।४८।।

(48) It is not proper to spend your life in the company of unrealised persons. Therefore, at once, take refuge of the learned and realised preceptors and with the help of their proverbial words sharpen your intellect to dispel the darkness of your heart.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वीताशो भवविमलाशयः समस्मिन्
स्फीताशः स्थिरसुखदे पदे नितान्तम्।
प्रध्यायेस्थ विशदं विशोकमेकं,
स्वात्मानं विभुमखिलान्तरात्मभूतम्।।४९।।

सांसारिक विषयों से सुख प्राप्ति की दुराशा छोड़कर शुद्धान्तःकरण हो सर्वात्मभावस्वरूप नित्यनिरतिशयसुखप्रद पद की तीव्र आकाङ्क्षा रखते हुए स्वयं प्रकाश, सकलदूषण रहित, एक, विभु और समस्त प्राणियों के अन्तरात्मस्वरूप अपने प्रत्यगात्मा का निरन्तर ध्यान किया करो।।४९।।

(49) Give up the false hope of pleasure from objects of the world and with a pure mind filled with a strong desire for achieving the state of constant supreme bliss, always meditate on the Divine-self-effulgent, free of all taints, the one whole, omnipresent and inner Self of all creatures.

पश्येदं जगदखिलं निजात्मनि त्वं
मिथ्याभं मरुकिरणेष्विवोत्थमम्भः।
संरम्भं त्यज तदिह स्वयंप्रकाशो
भासि त्वं ननु बहुधा किमीहसे भोः।।५०।।

तुम इस सकल संसार को, मरुप्रदेश में पड़ी हुई सूर्य की किरणों में दिखाई देने वाले जल के समान, आत्मा में कल्पित समझो और संसार के मिथ्यापदार्थों के भोगने में जो तुम्हारी प्रवृत्ति है उसे त्याग दो। देखो ! तुम्हारा स्वरूपभूत चैतन्य स्वयंप्रकाश होने के कारण निरन्तर भासमान रहता है, उसे त्यागकर तुम और क्या चाहते हो? ।।५०।।

(50) Look upon all this universe like a miraj in the inner Self and check your tendency to derive pleasure from the imaginary objects. Behold ! The conciousness within is self-effulgent and ever-shining. What more do you want other than this (blissful state)?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कल्याणं तव विमलं महत्स्वरूपं
ध्यायन्ति स्फुटमनिशं मुनीशमुख्याः।
पुण्याघे त्वयि नतरामपि प्रथेते
माऽहन्तामिह जडतावति प्रसैषीः।।५१।।

तुम्हारा स्वरूपभूत आत्मा लेशमात्र दुःख के संसर्ग से शून्य और निरतिशय आनन्दरूप है। नित्य निरतिशय आनन्द की इच्छा वाले प्राचीन ऋषि–मुनियों ने भी ध्यान और चिन्तन आदि के द्वारा उसी का साक्षात्कार करके अपने को कृतकृत्य माना था। तुम्हारे स्वरूप में पुण्य–पाप का लेप भी नहीं होता, किन्तु इस जड़–शरीर में अहन्त्व का अध्यास होने से उसमें इन सब विरोधी गुणों की प्रतीति होती है। इसलिए सब अनर्थों के मूल इस देहात्मत्वनिश्चय का त्याग करो।।५१।।

(51) Your own divine Self bereft of any trace of misery is supreme bliss by nature. Even the ancient seers got fulfilment only after realisation of the divine Self through meditation and contemplation. It has no attachment with pious deeds or sins but because of the feeling of ownership in the body, these apposites seem to belong to the soul. Therefore leave the concept of being the body which is the root cause of all misery.

यदि तुम अपने हृदय में परमात्मा को बसाना चाहते हो तो उसे विशाल तथा उदार बनाओ। कृपण तथा संकुचित हृदय में सर्वव्यापक परमात्मा का समाना असम्भव है। क्या तुम नहीं जानते कि गागर में सागर कैसे बैठ सकता है।

–स्वामी चैतन्य गिरि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैराग्यं पृथु बिभृहि स्मराखिलं भो
दुःखाढ्यं क्षणविरसं चलं च दृश्यम्।
स्पृश्यन्तामिह विषया यथौषधं स्यान्
नैराश्यं श्रय नितरामुदास्व नित्यम्।।५२।।

अरे मुमुक्षुओं ! समस्त दृश्य को क्षणभंगुर, विरस और दुःखपूर्ण देखते हुए परवैराग्य को धारण करो। शरीरस्थिति के प्रयोजक आहार–विहारादि को भी क्षुधा–पिपासारूप रोग के निवारण के लिए औषधरूप से सेवन करो और सम्पूर्ण सांसारिक विषयों से सुखप्राप्ति की आशा छोड़कर प्रारब्धवश इष्ट या अनिष्ट प्राप्त होने पर भी उदासीन–वृत्ति धारण करो।।५२।।

(52) O'Seekers of Salvation ! Knowing all conceivable things as shortlived, devoid of pleasure and full of sorrow, cultivate dispassion. Take only so much food as bare necessary for maintenance of the body, like medicine for curing the disease of hunger and thirst. Give up the hope of getting pleasure from any worldly object and remain unmindful of whatever good or bad comes to you by destiny.

वात्सल्यं यदि सततं प्रवर्तयेथा
भूतानामिह करुणाविशारदः सन्।
निःसङ्गो हृदि नितरामपि स्वशक्त्या,
लोकानामुपकृतये घटस्व विद्वन्।।५३।।

यदि करुणापूर्ण हृदय के कारण तुम प्राणियों पर दया रखते हो तो विवेक–वैराग्यादि के बल से सदा निःसङ्ग रहकर लोगों का उपकार करो।।५३।।

(53) If you out of mercy possess benovalence for living beings then render service to them with detatchment sprung from your power of discrimination and dispassion.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैतस्मादधिकमिहास्ति विद्वदर्हं
विद्याभिर्य उ जनतातमोनिवर्हः।
क्लिश्यन्ते ननु जगतां कृते महान्तो
दृष्टान्तोऽमृतकिरणादयस्तवामी।।५४।।

विद्या के द्वारा जनता के हृदयाकाश में फैले हुए अन्धकार को दूर करने से बढ़कर विद्वानों के लिए कोई और कर्तव्य नहीं है। देखो, सूर्य–चन्द्रमा आदि संसार के कारण ही राहु प्रभृतियों से पीड़ित होते हैं।।५४।।

(54) The learned have no duty greater than dispelling, by the light of their knowledge, the darkness prevailing in the hearts of fellowbeings. Note, the heavenly bodies like the Sun and the Moon accept suffering when eclipsed by Rahu etc. for the sake of the world only.

भीतश्चेदसि जनता समागमेभ्यो
रागादेर्लघुमनसि प्रवर्तकेभ्यः।
त्यक्त्वाऽरं जनसमितिं तदा विविक्तं
सेवस्वामलधिषणो जहत्समस्तम्।।५५।।

चित्त में रागद्वेषादि को उत्पन्न करने वाले सङ्ग से यदि तुम डरते हो तो जनसमाज तथा वित्तपुत्रादिके संग का त्याग करके शीघ्र ही निर्मलचित्त हो एकान्त प्रदेश का सेवन करो।।५५।।

(55) If you are afraid of your association with persons responsible for generating the feeling of attachment and aversion in your mind, then at once say goodbye to the society, wealth, sons etc and developing a pure mind reside in a secluded place.

Resolve that you are the master and not the servant of your mind and organs. It is only due to your slackness and alertlessness that these rougues have made you their subordinate and slave making you feel helpless and dejected like a poor beggar. Rise! awake! Exert your right befittingly and be not slave but the master of your organs and make life a success with prosperity

— Swami Chaitanya Giri

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अद्वैतामृतमनिशं श्रुतिप्रपाभ्यो
निःशङ्कं प्रणिपिबतां प्रमोदवन्ति।
शान्तानामथ सततं समाधिभाजां
धन्यानामिह विजने वियन्त्यहानि।।५६।।

वे पुरुष धन्य हैं जो प्रतिदिन निःशङ्कमन से शान्तिपूर्वक श्रुतिरूप प्याऊ से अद्वैतामृत का पान करते हुए ध्यानसमाधि के साधन द्वारा एकान्त देश में आनन्दपूर्वक अपना काल व्यतीत करते हैं।।५६।।

(56) Those persons are worthy of gratitude who spend their time in meditation in a secluded place and who with peaceful mind free of doubts, drink the nectar of nonduality from the fountain of the Vedas.

निर्भीको मतिदृढताबलाद्यदि त्वं
स्वच्छन्दं तदु विहर स्वरूपभूतम्।
निःशेषं परिकलयन्निहाधिरोपा-
दुद्भातं तव किमिदं प्रदूषयेत।।५७।।

यदि तुम चित्त दृढ़ होने के कारण जनसंग से निर्भय हो तो सम्पूर्ण विश्व को अपना ही स्वरूप देखते हुए स्वतंत्रतापूर्वक यथेच्छ विचरो। अज्ञानजन्य भ्रमप्रतीति से भासने वाला यह मिथ्या जगत् तुम्हारा क्या बिगाड़ सकता है ?।।५७।।

(57) If by the dint of your strong mind you have overcome the fear of attachment to persons, then looking upon the whole universe as your own manifestation, roam freely as you wish. What harm can come to you from this false world owing its appearance to only ignorance.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रागःक्वावस्थितःस्यान्मयि विमलतमश्रीनभःसन्निभेऽस्मिन्
या त्वेषा रागरेखा स्फुरितपरिततता शक्रकोदण्डतुल्या।
साऽभ्रामे स्वान्तखण्डे विलसतु सुतरां मेघसंसर्गशून्ये
कोद्रिक्तिः कापरिक्तिर्गगन इव मयि स्वान्ततोऽत्यन्तदूरे।।५८।।

आकाश के समान अत्यन्त निर्मल और सर्वदा असंग मुझमें राग किस प्रकार रह सकता है। जो बिजली की चमक के समान राग की रेखा दिखाई पड़ती है वह मेघरूप अन्तःकरण में ही स्थित है। सो उसका धर्म होने से सदा उसी में रहे। परन्तु मेघ के सम्पर्क से सर्वथा शून्य आकाश के समान अन्तःकरण से सर्वथा असम्बद्ध मुझमें किसी प्रकार का उत्कर्षापकर्ष नहीं हो सकता।।५८।।

(58) Extremely pure and ever detached like the Sky how can the Self have any passion ? The lightning like line of passion (within me) exists only in the cloud of mind. Being the attribute of the mind let it (the passion) remain there; but the Self, totally unlinked with the mind like the Sky with the cloud, will have no gain or loss from it.

चेष्टन्ते चेदिमानि प्रतिनियतगुणं चक्षुरादीनि नित्यं
चेष्टन्तां काममस्मिन् मयि सकलजगच्चेष्टमानत्वहेतौ।
चेष्टेरन्नो कुतोऽयस्यचलइव चलत्यस्मयस्कान्त एव
भिन्नश्चात्यन्तमेभ्यस्तदिह मयि कथं पुण्यपापावलेहः।।५९।।

यदि देह तथा चक्षु आदि इन्द्रियाँ अपने–अपने विषयों की ओर प्रवृत्त होती हैं तो हों। सम्पूर्ण जगत् की चेष्टा के हेतुभूत मुझ आत्मचैतन्य की सन्निधि में जड़वर्ग की चेष्टा होना उपपन्न ही है। क्योंकि वह लोहे के चलने पर भी अचल रहने वाले चुम्बक के समान स्वयं सब प्रकार के विकारों से रहित है। अतः बाह्य देहादिकों से अत्यन्त विलक्षण मुझ आत्मा में पुण्य–पाप का लेप कैसे हो सकता है।।५९।।

(59) If the body and its organs move towards their respective objects let them do so as it is but right that in the vicinity of Self conciousness which moves the whole universe, the inanimate bodies move like iron pieces towards the steady positioned magnet. Therefore how in Self which is entirely different form the external body etc there can be any layer of sin or pious deeds?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योऽयं रागोऽस्मदीयो न खलु स मुहिराणामिवानात्मदृष्ट्या
किन्त्वात्मैवेदमम्भोगतमिह सलिलं फेनमुख्यं यथैवम्।
आत्मन्यध्यस्तभावादिति निपुणधिया पश्यतो रञ्जना मे
क्वात्मप्रेमाणमेनं यदि तु जडधियो रागमाहुस्ततः किम्।।६०।।

ज्ञानी का राग अज्ञानियों के समान अनात्मदृष्टिमूलक नहीं होता, क्योंकि उसकी दृष्टि में सम्पूर्ण जगत् आत्मा में कल्पित होने के कारण आत्मस्वरूप ही है, जिस प्रकार कि तरंगफेनादि जल में कल्पित होने के कारण जल से अभिन्न दृष्टि से देखने वाले को किसमें राग हो सकता है; और जो ज्ञानी में प्रवृत्ति का प्रयोजक थोड़ा–सा रागाभास दिखायी देता है, वह भी राग नहीं किन्तु आत्मप्रेम ही है। यदि उसी को अविवेकी पुरुष राग कहते हैं तो कहें, इससे ज्ञानी रागी नहीं बन सकता।।६०।।

(60) The attachment possessed by the learned, unlike the ignorant, is not based on nonself disposition because in their view the whole universe is superimposed on and the same as the Self. For whom then the learned who sees the world inseparable from Self, like wave and foam from water, will have passion ? The small shadow of passion which is the cause of his activity is not really passion but love of the Self. If men devoid of discrimination call it passion, let them say so, it can hardly convert the learned into a passionate person.

जो कुछ तुमने पकाया है उसमें से किसी अतिथि को अवश्य देना चाहिये। जिस घर से अतिथि संतुष्ट हो कर जाता है वहाँ कभी कोई दैवी कोप नहीं हो सकता। अतिथि अग्निरूप होता है, यदि सत्कार मान और अन्नजलादि से उसे शान्त न किया जाय तो वह मनुष्य के सम्पूर्ण पुण्यों को जला कर भस्म कर देता है। अतः अतिथि को खिला कर खाओ।

– स्वामी चैतन्य गिरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाहं मूर्खो न विद्वान् न च जरठतनुर्नैव बालो युवा वा,
नैव स्त्री नो पुमान्वा सततमथ मयि क्लीबभावोऽपि नास्ति।
किन्त्वेषामेक आत्मा विगतगुणगणो दोषलेशैश्चशून्यो
नित्यानन्दश्चिदात्मा तदिह मयि कुतस्त्यागरागौ भवेताम्।।६१।।

मैं न तो मूर्ख हूँ और न विद्वान् ही हूँ, वृद्ध, बाल, युवा भी मैं नहीं हूँ, मैं स्त्री, पुरुष या नपुंसक भी नहीं हूँ, क्योंकि ये सब देह, इन्द्रिय तथा बुद्धि के धर्म हैं, मैं इनसे सर्वथा पृथक् हूँ तथा देह, इन्द्रियाँ और बुद्धि इन सबका प्रेरक एवं सब प्रकार के गुणदोष से शून्य सच्चिदानन्द स्वरूप हूँ। तब मुझमें रागद्वेषादि कैसे रह सकते हैं ?।।६१।

(61) I am neither foolish nor learned. I am not aged, child or young. I am also not woman, man or eunuch because all these are the characteristics of the body, organs and intellect from which I am entirely different and of which I am the source of existence. I am free of virtue or vice and am the embodiment of existence, knowledge and bliss. Then how can passion exist in me ?

मय्यानन्दैकसिन्धौ कथमवतरतु प्रेप्सयाऽऽनन्दबिन्दु-
र्विन्दुः को रत्नपुञ्जान् भवति मतियुतः काममिच्छुर्वराटम्।
नाटन्तीह त्विमास्ता जलधिमधिजलं नापगा भूरिपूराः
शूराः के तत्र वक्तुं जलनिधिमभिलाषेण युक्तं तथाऽत्र।।६२।।

केवल, एक, अनन्त, आनन्द के समुद्र मुझमें वैषयिक आनन्द की बूंदों को पाने की इच्छा किस प्रकार हो सकती है ? कौन बुद्धिमान् महान् रत्नराशि को पाकर फिर कौड़ी के लिए लालायित होगा ? फिर भी यदि प्रारब्ध के कारण मेरे में विषयप्राप्ति प्रतीत हो रही है तो इतने ही से मुझमें काम की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि यद्यपि समुद्र में रात–दिन अनन्तजलपूर्ण नदियों का प्रवेश हो रहा है फिर भी उसे नदी प्रवेश का अभिलाषी कहने में कौन समर्थ है ? ।।६२।।

(62) How can I have desire for drops of sensual pleasure when I am exclusively the ocean of infinite bliss ? No wise person possessing a huge stock of diamonds would become crazy for a penny. Nevertheless if due to destiny, there appears to be a collection of objects around me, one should not imagine lust in me just as the ocean cannot be accused of inviting inflow of river water into it eventhough day and night rivers with infinite quantity of water go on entering into it.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेयानात्मा समस्मादिति विदितमिदं सर्वलोके च वेदे
सर्वं चाप्येतदात्मा गमितमिदमपि श्रौतवाक्यैः सहस्रैः।
तस्मात्प्रेमास्तु यत्र क्वचिदपि मम स ब्रह्मरूपो न रागो
नागस्तस्मान्मदीये निजविमलतनौ प्रेमणि प्रापणीयम्।।६३।।

समस्त अनात्म पदार्थों की अपेक्षा आत्मा ही परमप्रिय है, यह सब वेदों में और लोक में भी प्रसिद्ध है। और यह सम्पूर्ण दृश्यमान विश्व आत्मस्वरूप है, यह भी सैकड़ों–सहस्रों वेद वाक्यों से निर्णय हो चुका है। इसलिए जिस किसी भी वस्तु में मेरा प्रेम है वह ब्रह्मस्वरूप ही है, राग नहीं है। ऐसे अत्यन्त निर्मल और स्वस्वरूपभूत प्रेम में किसी भी दोष की प्राप्ति नहीं हो सकती।।६३।।

(63) It is said in Vedas and also seen in practice that the Self is dearest of all nonself things. It has been amply testified in thousands of Vedic Mantras that this whole visible world is only manifestation of the Self. Therefore my love for things is not due to passion for them but due to the fact that they are only the forms of the Lord. In such extremely pure love directed towards the Divine Self there cannot be any flaw.

जातं चेतो मदीयं वियदमलमुदैत् पूर्ण इन्दुर्विचार-
स्तत्त्वालोकः समन्ताद् व्यसरदरमथो शान्तिरातन्यतेयम्।
पापस्तापो विलीनोऽमृतमिव परितः स्यन्दतेऽमन्दमेतद्
धन्या कल्याणरात्रिः परमवसितवान् वासरोऽसौ प्रपञ्चः।।६४।।

मेरा चित्तरूपी आकाश निर्मल हो गया, विचाररूप पूर्णचन्द्र का उदय हुआ और चारों ओर तत्त्वज्ञानरूप प्रकाश फैल गया। उसके पश्चात् दुःखप्रद ताप का अभाव होकर परमशान्ति का लाभ हुआ और चारों ओर अनन्त अमृत का प्रवाह बहने लगा। अब प्रपञ्चरूप प्रचण्ड दिन का अवसान होने से सब ओर अत्यन्त तीव्र पुण्यों से प्राप्त होने वाली कल्याणरूपी रात्रि विराजमान है।।६४।।

(64) The sky of my intellect has become clear and the moon of Divine thought has risen, from which light of self knwoledge has spread all around causing worrisome heat to disappear. Now perfect peace has been attained and a continuous flow of nectar has started from all directions. The horrifying day of the world phenomenon has ended and the comforting night achievable through extremely pious deeds prevails everywhere.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीनः सोऽयं प्रपञ्चो यदधि मम पुराऽभून्महत्कौतुकित्वं
शान्तास्तास्ताः समीहा अनवरतमहोयाभिरुच्चाटितोऽहम्।
उद्वेगाः सर्व एते विलयमुपगताः शीतमासीन्मनो मे
धन्योऽस्म्येकं समन्तात्स्फुरति मम महज्ज्योतिरानन्दभूतम्।।६५।।

अनेक अनुपपत्ति के कारण ब्रह्मज्ञान होना सर्वथा असम्भव है, वह मेरा महान् आश्चर्य अब लीन हो गया, तथा जिन इच्छाओं की पूर्ति के लिए मैं सर्वथा अस्थिर तथा उद्विग्न रहा करता था वे इच्छाएँ और उद्वेग भी सबके सब एक साथ विलीन हो गये और मेरा चित्त परम शान्त हो गया। अब चारों ओर मुझे स्वयं प्रकाश आनन्द ही प्रतीत हो रहा है। इसलिए कृतकृत्य तथा ज्ञातज्ञेय होने के कारण मैं परम धन्य हूँ।।६५।।

(65) The greatest disbelief nurtured by me that due to several improbabilities it is imposible to have the knowledge of the Divine now stands dissolved. Those desires for whose fulfilment I used to remain unsteady and perturbed have all vanished and my mind has become extremely peaceful. Now I see the self effulgent bliss all around and feel fully gratified after accomplishing what was to be accomplished and knowing the knowable.

अत्यन्त निर्मल तथा नित्य शुद्ध परमात्मा का निवास शुद्ध तथा निर्दोष अन्तःकरण में ही संभव हो सकता है। छोटों से प्रेम, बड़ों का आदर तथा अपने बराबर वालों से मित्रता का व्यवहार करने से ईर्ष्या, असूया, मात्सर्यादि सम्पूर्ण दोष दूर हो जाते हैं और चित्त कोमल तथा उदार बनकर भगवान् के निवास योग्य बन जाता है।

–स्वामी चैतन्य गिरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामः क्व स्यान्मदीयो जगदखिलमिदं ज्ञातमत्यन्ततुच्छं
कामाभावेतुकोपःकथमिव विभवेत्कारणं सोऽस्य यस्मात्।
लोभः सत्यत्वमूलो जगति च वितथे सत्यताभ्रान्तिरूपा
मोहोभ्रान्तेर्निदानं सकलमिदमगाद्वीतशोकः शिवोऽहम्।।६६।।

जगत् को अत्यन्त असार समझ लेने पर मुझे किस विषय में काम हो सकता है ? काम का अभाव हो जाने पर क्रोध भी नहीं हो सकता क्योंकि काम्य वस्तु के न रहने पर क्रोध का भी कोई विषय नहीं रहता। लोभ का कारण पदार्थों में सत्यता बुद्धि करना है, वह असत् जगत् में सत्यता पर गम्भीर विचार करने से भ्रमरूप सिद्ध होती है और भ्रम का हेतु अधिष्ठानभूत आत्मा का अज्ञान है। जब आत्मप्रमा से मोह की निवृत्ति हो गयी तो उसके कारण होने वाली भ्रान्ति भी जाती रही और भ्रान्ति के दूर होने पर उसका कार्य लोभ भी कभी नहीं ठहर सकता। अतः मैं सकलदोषरहित होकर शिवस्वरूप से ही स्थित हूँ।।६६।।

(66) What can be the object of my desire after comprehending the complete hollowness of the world ? The end of the lust means the end of anger as well, because in the absence of want there is no basis for anger. The cause of greed is the consideration that the things are real which turns out to be illusory on deep thought. The reason for this illusion is the ignorance about the supporting Self. When the delusion is removed by the knowledge of the Self, the illusion created by it is also removed and with the end of illusion the greed born out of it becomes unsustainable. Therefore I, free of all blemish, stand as the embodiment of Shiva.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शान्ते चेतस्यकस्मादुदगमदमितं ज्योतिरानन्दपूर्णं
तूर्णं मोहान्धकारो व्यगलदथ सुधौघाः समन्तात्स्रवन्ति।
नष्टाःशोकादयोऽमी विकलितमनसो नान्यदालोकयामः
सत्यं चाद्यन्तहीनं प्रविततमतुलं केवलं ब्रह्म भाति।।६७।।

जब चित्त शान्त हुआ तो उसमें आनन्दरूप ज्योति का स्वयं ही आविर्भाव हो गया जिसके कारण अज्ञान रूप अन्धकार की निवृत्ति हो जाने से चारों ओर आनन्दामृत का प्रवाह बहने लगा है तथा शोकमोहादि चोरों का दल व्याकुल होकर नष्ट हो गया है। अब केवल, सत्य, आद्यन्तरहित, सर्वव्यापी, अद्वितीय ब्रह्म ही सर्वत्र प्रतीत हो रहा है। उससे भिन्न दूसरी वस्तु का तो कहीं नाम भी शेष नहीं है।।६७।।

(67) As the mind attained peace, it was automatically filled with the light of bliss dispelling the darkness of ignorance and starting the flow of nectar all around. The worried group of thieves like grief and delusion have vanished. Now I behold everywhere the beginningless and endless truth which is Omnipresent, Secondless Supreme God. Nothing different from Him exists even for name sake.

ब्रह्मैवोद्ध्वं तथाधः प्रसृतमथ पुरस्ताच्च पश्चादपीदं
ब्रह्मैवोदक्तथाऽवाग्दिशि विदिशि समं व्याप्तमेकं सदेतत्।
नित्यानन्दोरुतेजोभृतविविधवपुर्भ्राजते माययाऽदो
वतोद्धूतं यथाऽम्भो बहुविधवपुषा नान्यदस्तीह तत्त्वम्।।६८।।

सच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म ही ऊपर–नीचे तथा इधर–उधर सारी दिशा–विदिशाओं में एकरस होकर पूर्ण है। वही ब्रह्म परमार्थ दृष्टि से एक होने पर भी माया के कारण नाना रूपों में प्रतीत होता है। जिस प्रकार एक ही जल वायु के कारण तरङ्ग, फेन,बुद्बुदादि अनेकों आकारों में भासने लगता है।६८।।

(68) The Supreme God the embodiment of existence knowledge and bliss fills all sides equally as a whole. The same God though one in reality appears in different forms due to Maya, the illusory power, in the same way as the water associated with wind appears in the form of wave, foam and bubbles etc.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गङ्गौघाधो निमग्ना दृढपृथुलशिला क्लिद्यते नो यथान्त-
र्नैषद्वाप्युच्चलेत्सा सति वहति महास्रोतसि स्वोपरिष्टात्।
तद्वत्संसारपूरे सति महति सदा स्यन्दमानेऽतिघोरे
निर्दुःखा निश्चलाङ्गा श्रुतिसमधिगता पीवरी चिच्छिलाऽहम्।।६९।।

जिस प्रकार गङ्गा के प्रवाह में डूबी हुयी विशाल शिला अपने ऊपर सर्वदा गङ्गा का महाप्रवाह बहते रहने पर भी नहीं भीगती और न अपने स्थान से विचलित ही होती है उसी प्रकार अत्यन्त घोर और महान् संसारनद का प्रवाह निरन्तर अपने ऊपर बहते रहने पर भी वह श्रुतिसिद्ध आत्मनाम की भारी शिला भी दुःखहीन और निश्चलरूप में ही रहती है।।६९।।

(69). As a huge rock submerged in the Ganges does not get soaked or shifts from its place inspite of strong currents always crossing over it, in the same manner, the heavy rock namely Self propounded by the Vedas always remains steady and sorrowless inspite of the ever flowing severe and great world river.

धूयन्तां रागवातैरनिशमिह मनश्चीनवासोध्वजान्ताः
शान्ताःसन्तोऽथवान्ते जहतु कथमपि स्वीयमालौल्यमेते।
के ते गाढं निखातं सकलजडभुवि प्रत्यगात्मानमुच्चैः
स्वस्थं कान्ताभमाम्दोलयितुमपि मनाग् वज्रमुद्दण्डदण्डम्।।७०।।

रागरूप वायु के वेग से मनरूप ध्वजा के अन्तिम भाग चाहे रातदिन हिलते रहें अथवा शान्त होकर अन्त में अपनी चपलता को छोड़ दें, तथापि उनके कारण जड़प्रपञ्चरूप भूमि में दृढ़ता से गड़ा हुआ अत्यन्त ऊँचा और कूटस्थ आत्मारूप वज्रदण्ड तनिक भी इधर–उधर नहीं हो सकता।।७०।।

(70) The strong wind of passion may shake the extremes of the mind flag day and night or becoming calm may leave it undisturbed but the extremely high, unshakable thunderbolt like supporting pole of the divine Self, struck firmly into the ground of this world phenomenon, cannot be displaced by even an inch.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षणमहह मनो मे नन्दति स्वं समस्तं
परिकलयदनन्तं ब्रह्मशान्तं नितान्तम्।
क्षणमथ तु दुराशावायुनोद्धूयमानं
विशदहह विभेदं खेदमङ्गीकरोति।।७१।।

कभी तो मेरा मन अपने को अतिशान्त और अनन्त ब्रह्मस्वरूप अनुभव करता हुआ अत्यन्त आनन्दित होता है और कभी दुर्वासनारूप वायु से विचलित होकर द्वैतोन्मुख प्रवृत्ति के कारण खिन्न होने लगता है ।।७१।।

(71) Sometimes my mind experiences profound peace and happiness after identifying itself with the infinite supreme God but sometimes, disturbed by the wind of ill impressions born out of the practice of dualism, it becomes restless.

मनः शान्तद्वैतं पिबतु परमानन्दममृतं
भ्रमद्वाऽस्मिन्द्वैते दुरतिगमदुःखानि सहताम्।
अहं त्वस्यास्वस्थामविरतमवस्थामविकलो
विलोके निःशोके निजमहिमनि स्थास्नुरचलन्।।७२।।

मन द्वैत से उपरत होकर चाहे परमानन्दस्वरूप अमृत का पान करे अथवा द्वैतरूप गहन वन में विचरता हुआ दुःसह दुःखों का अनुभव करे। दोनों ही अवस्थाओं में मैं अपने सकलशोकरहित (स्वरूप में) अविकृत और अचल रूप से स्थित रहकर चित्त की अवस्थाओं को देखता रहता हूँ।।७२।।

(72) Whether the mind free of dualism drinks the nectar of supreme bliss or wandering in the dense forest of dualism experiences unbearable miseries; in both these states I, unchanged and steady devoid of all sorrow, stand as witness to these.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न मे प्रलोपः सति सर्वसंप्लवे
न चोद्भवोऽभूदितरस्य तूदये।
उभावपीमाववलोकयन्नहं
जगद्गतावस्मि सदैकसम्प्रथः ।।७३।।

सकल प्रपञ्च का नाश होने पर भी मेरा नाश नहीं होता और उदय होने पर मेरा जन्म नहीं हो सकता, मैं तो जगत् के उत्पत्ति और प्रलय का प्रकाश करता हुआ सदा एकरस ही रहता हूँ।।७३।।

(73) Neither the end of this creation ends me nor its beginning brings me to life. I always remain the same witnessing the creation and destruction of the universe.

जगत्कथं मय्यथ सच्चिदात्मनि
स्थितिं लभतेदमसज्जडात्मकम्।
तथापि भात्येव विभातु किं भवे-
न्नभस्तले चेन्नगरीव विभ्रमात्।।७४।।

सच्चिदानन्दस्वरूप मुझमें यह असत् और जड़रूप जगत् कैसे स्थित रह सकता है ? तथापि आकाश में नगर के समान यदि इसका भ्रम से मेरे में भान होता है तो हो, इसमें मेरी कोई हानि नहीं है।७४।।

(74) How can the nonexisting lifeless universe abide in me whose nature is existence knowledge and bliss. Nevertheless if it falsely appears in me like the city seen in the sky, it does no harm to me.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहं जगत्यत्र न मय्यदस्तथा
वृथा विकल्पस्तु विजृम्भते यथा।
न दाम भोगिन्यथ न स्रजि त्वसा-
वथापि सत्यानृतमेलनं मुधा।।७५।।

यद्यपि न तो मैं इस जगत् में हूँ और न यह जगत् ही मेरे में है, तथापि अविवेक के कारण दोनों में आधाराधेयभाव प्रतीत होता है। जिस प्रकार न तो सर्प में रज्जु है और न रज्जु में सर्प ही है फिर भी रज्जुतत्त्व के अज्ञान के कारण सत्य और मिथ्या का परस्पर तादात्म्य प्रतीत हो ही जाता है।।७५।।

(75) Even though I don't have any link with this world nor does the world exist in me yet due to lack of discrimination there appears to be a relation of support and the supported between the two, in the same manner as the snake does not exist in the rope nor the rope in snake but due to ignorance of the rope, the real and unreal do get mingled.

मनः स्फुरद् भाति जगत्तयाऽन्यथा
स्वतत्त्वबोधादृत एव केवलम्।
अवाप्य बोधं प्रचकास्ति भासुरं
मनो भवद् ब्रह्म निरामयाभयम्।।७६।।

आत्मतत्त्व के बोध से पूर्व केवल चित्त ही जगद्रूप से स्फुरित होकर अन्यथा प्रतीत हुआ करता है तथा ब्रह्म और आत्मा के एकत्व का साक्षात्कार हो जाने पर वही मन शुद्धसच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म से अभेदरूप से प्रकाशित होने लगता है।७६।।

(76) Prior to the knowledge of the Self, it is the mind alone that appears in the form of the world but with the realisation of the oneness of the Self with the Supreme God the same mind, devoid of any difference, brightly appears as embodiment of pure existence, knowledge and bliss.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगत्प्रलोपं जगुरुन्मनस्कतां
मनोऽवशेषं दृढमस्य मूलकम्।
ततो मुमुक्षुः प्रयतेत सागमं
मनः प्रलोपेऽन्यदुपेक्ष्य साधनम्।।७७।।

क्योंकि चित्त का अभाव ही जगत् का अभाव करने वाला है और चित्त का अस्तित्व ही उसका मूल है, इसलिए मुमुक्षु को अन्य साधनों की उपेक्षा करके सबसे पहले शास्त्रोक्त उपायों से मन का नाश करने के लिए उद्यत होना चाहिए।।७७।।

(77) As the absence of mind means the disappearance of this world and its existence the world's root, the aspirant ignoring other disciplines should first of all make effort to destroy the mind by means described in the scriptures.

ततः प्रयत्नैः परिशोधनीयता-
मयुष्य पूर्वे बभणुर्महाधियः।
न जातु जातं जगदस्ति सच्चिती-
त्यसंशयं भावनमाहुरामृजाम्।।७८।।

क्योंकि संसार का कारण चित्त ही है इसीलिए पूर्वाचार्यों ने 'चित्तमेव हि संसार-स्तत्प्रयत्नाच्चिकित्स्यताम्' इत्यादि वाक्यों द्वारा प्रयत्नपूर्वक चित्तशोधन का ही उपदेश किया है। सच्चिदानन्दस्वरूप आत्मा में असत् जड़, और दुःख रूप जगत् तीनों काल में नहीं हो सकता, ऐसा संशय और विपर्ययशून्य चिन्तन ही चित्त का शोधन करने वाला है।।७८।।

(78) Mind being the root of the world, the earlier teachers through various sermons emphasised the need to exert all efforts to control it. Doubt and misconcept free, contemplation that the false, lifeless and painful universe has no existence at anytime, is the means to purify the mind.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनः सरागं मलमूत्रभाजनं
वपुः पवित्रं मनुतेऽमृतादपि।
तदेव वैराग्यविशारदं भव-
द्धिरण्यगर्भं न तृणाय मन्यते।।७९।।

काम एवं रागादि से आक्रान्त चित्त मलमूत्रादि अपवित्र पदार्थों से परिपूर्ण शरीर को अमृत से भी अधिक पवित्र समझता है और वही वैराग्यरूप शुद्धि से युक्त होने पर हिरण्यगर्भ तक को तिनके के समान भी नहीं समझता। अतः पहले जो जगत् की सत्ता में मन की कारणता बतायी जाती है वह अनुपपन्न नहीं है, किन्तु अपने अनुभव से सिद्ध होने के कारण प्रामाणिक ही है।।७९।।

(79) The mind polluted by lust and passion considers the body as pure as nectar, even-though it is full of foul things like human waste etc. and the same mind possessing the purity of dispassion does not care even for the position enjoyed by the creator Brahma. Therefore what is told about the mind being the root cause of the universe is not a thought in the air but is proved by self experience.

अहो सदानन्दमयः सदोदितो
विभुश्चिदात्माऽप्यज एकलो ध्रुवः।
अनायि सर्वेश्वर एव सन्नसन्-
मनःपिशाचैर्ननु दीनतामिव।।८०।।

यह आत्मा सर्वदा आनन्दमय, नित्य, विभु, स्वयंप्रकाश, अविक्रिय, अद्वितीय, कूटस्थ और सर्वेश्वर होकर भी मन आदि पिशाचों के सम्पर्क से दीन–जैसे बना हुआ है।।८०।।

(80) Even though, the divine Self is ever full of bliss, permanant, all pervading, self effulgent, unchangeable, secondless, unshakable and Lord of all, yet it, in association with the demons like mind etc, becomes so very poor and helpless.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहो अहो अद्भुतमेकमीक्षितं
गजोऽपि वन्यः खलु तन्तुना सितः।
इदं तथा चापरमद्भुतं महद्
घटे भृतः सागर एव केनचित्।।८१।।

बड़े आश्चर्य की बात है कि जंगली हाथी को एक तन्तु से बाँध लिया और इससे भी बढ़कर आश्चर्य यह है कि किसी ने महासागर को घड़े में भर लिया।।८१।।

(81) Is it not strange that a wild elephant has been tied down with a thin thread and stranger still that someone has filled the ocean into a pitcher ?

मनः प्रचारो विषयेषु मास्म भू-
दिति स्वरूपे मुहुरर्प्यतामिदम्।
विना तथा ध्यानसमाधिसन्ततिं
मनोजयो नेत्यगदन्महर्षयः।।८२।।

मन की प्रवृत्ति विषयों में न हो, इसलिए उसे बार-बार अपने स्वरूप में स्थित करना चाहिए। परन्तु दीर्घकाल तक ध्यान और समाधि के अभ्यास के बिना स्वरुप में चित्त की स्थिति हो नहीं सकती—यह प्राचीन महर्षिगण सिद्ध कर चुके हैं। अतः इसके लिए ध्यान और समाधि की भी आवश्यकता है।।८२।।

(82) For checking the mind's tendency to go towards sense objects, it should be made to contemplate on the Self. Of course, without the practice of meditation and samadhi for a long time, the mind cannot be eslablished in the Self. This has been amply proved by the early seers. Thus meditation and samadhi (state of Superconciousness) are also essential for this.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनोजयश्चेन्न कृतो न वासनाः
क्षयं च नीता यदि मूलतोऽखिलाः।
स्थितिस्तथा तत्त्वपदं न लम्भिता
वृथा प्रलापाय तदाऽऽगमा अमी।।८३।।

यदि मन का जय नहीं किया, सम्पूर्ण वासनाओं का समूल नाश नहीं किया और आत्मतत्त्व में चित्त की पूर्ण स्थिति नहीं की, तो श्रवण–मननादि का अनुष्ठान सब व्यर्थ प्रलापमात्र ही है।।८३।।

(83) If the mind has not been controlled and all the ill impressions possessed by it have not been removed alongwith their root and the intellect has not been established fully in the divine Self, the practice of listening and contemplation on the Divine is all useless talk.

मनः सदा खेलति वासनाऽऽविलं
पराचि नित्यं प्रवणं तथेन्द्रियम्।
अथापि चेद् ब्रह्म वदन्ति निर्भया
अहो जनानां परिशोचनीयता।।८४।।

वासनाओं से बसा हुआ चित्त सदा विषयों ही में खेल रहा है और इन्द्रियगण सर्वदा अनात्मवस्तु में ही तत्पर रहती हैं फिर भी निर्भय होकर ब्रह्मोपदेश कर रहे हैं—हाय ! जीवों की कैसी शोचनीय दशा है ।।८४।।

(84) What a pity that persons whose minds are full of ill impressions and who are always playing about the sense objects and whose sense organs are ever eager to grasp non-self things, are fearlessely lecturing on supreme God ! Is not it a worrisome state of the Jivas?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः परागर्थपराक्षवर्गकं
निरुद्ध्य यत्नेन मुमुक्षुरादितः।
मनः समाधाय च मानतो मिते
विलोकयेत्स्वं गुरुदिष्टया दिशा।।८५।।

आत्मबोध और मनोनिरोध दोनों ही आवश्यक होने के कारण पहले मुमुक्षु अनात्मा की ओर जाने वाली इन्द्रियों को यत्नपूर्वक रोककर शास्त्र प्रमाण से निश्चित वस्तु में चित्त को निरुद्ध करे और गुरूपदिष्ट मार्ग से आत्मा का साक्षात्कार करे।।८५।।

(85) Self realisation and control of mind both being necessary, the aspirant with full effort should first control the outgoing sense organs and then fix the intellect on the definite substance testified by the scriptures and realise the Self through the technique told by the preceptor.

मनोविलासानवलोकयन्विभु-
र्विराजतेऽयं हृदि सङ्गवर्जितः।
न दुःखदीनो न च सौख्यवर्धितो
भवत्ययं चित्तदशाः प्रकाशयन्।।८६।।

सर्वव्यापी परमात्मा मनोवृत्तियों का साक्षी बनकर हृदय में विराजमान है और चित्त के सुख–दुखों को प्रकाशित करते हुए भी असङ्ग होने के कारण उसके दुःख से दुःखी और सुख से सुखी नहीं होता, किन्तु सदा एकरस ही रहता है।।८६।।

(86) All pervading God resides in the heart, witnessing the modifications of the mind alongwith its experience of pain and pleasure, but It always keeps poise without association with grief or happiness of the mind because of its inherent detachment..

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वान्ते विभान्तं प्रतिबोधमन्त-
ध्वान्तं नितान्तं प्रविदारयन्तम्।
शान्तं न विन्देत जनो यदीमं
नान्तं व्रजेज्जन्मजरामृतीनाम्।।८७।।

अपने अन्तःकरण में उसकी वृत्तियों के साक्षीरूप से प्रकाशमान और हृदय के अन्धकार को समूल नष्ट करने में समर्थ शान्त–स्वरूप परमात्मा को जब तक पुरुष प्राप्त नहीं करेगा तब तक वह जन्म–जरा मृत्युस्वरूप अनर्थमय संसार से मुक्त नहीं हो सकेगा।।८७।।

(87) So long as man does not realise God, the embodiment of peace, the witness of mind and its modifications and capable of destroying darkness of the heart, it would not be able to free itself from miseries of the world like birth, old age and death.

आत्मा च नामाथ च लम्भनीयो
जज्ञुर्बुधा विप्रतिषिद्धमेतत्।
तस्मादसौ लब्धतयैव लभ्यः
कण्ठस्थचामीकरसंनिकाशः।।८८।।

यद्यपि नित्यप्राप्त होने के कारण आत्मा को प्राप्तव्य कहना सर्वथा विरुद्ध है तथापि 'आत्मा प्राप्तव्यः' इसका अर्थ है कि 'प्राप्तत्वेन रूपेणैवात्मा निश्चेतव्यः' अर्थात् आत्मा नित्यप्राप्त है–इस प्रकार ही निश्चय करना, जिस प्रकार की गले में पड़े हुए हार की विस्मृति होने पर 'हार मेरे कण्ठ में है' इस प्रकार निश्चय होना ही उसकी प्राप्ति है।।८८।।

(88) Eventhough it is a total contradiction to term the everavailable Self as acquirable, yet the usage of the word indicates the finding of the found like the forgotten necklace round the neck.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमुं निधिं गाढमहो जनानां
निगूढमन्तर्हृदि दीप्यमानम्।
न जानते मोहशिलाऽऽवृतत्वा-
दमी ततो दीनदशामवापुः ।।८९।।

मनुष्यों के हृदय में गंभीर स्थल में छिपे हुए उस देदीप्यमान आत्मनिधि को, अज्ञान–शिला से आवृत होने के कारण, न जानकर ही सब लोग दुःख का अनुभव कर रहे हैं।।८९।।

(89) People are experiencing grief by not knowing the treasure of the Self hidden in the heart due to the cover of ignorance over it.

विद्यादतस्तूर्णमिमं विवित्सु-
र्व्यपावधिं मोदमनन्तलोके।
त्यक्त्वेतरत्कर्म वृथा वितानं
विधूय कामान् मृगतृष्णिकाभान्।।९०।।

निरवधि सुख को प्राप्त करने की इच्छा वाला पुरुष व्यर्थ आडम्बर वाले कर्मों को और उनसे प्राप्त होने वाले मरुमरीचिका के जल सदृश स्वर्गादि विषयों को छोड़कर अपनी हृदयकन्दरा में सर्वदा भासमान परमात्मा का साक्षात्कार करे। तभी संसार का बीजभूत अज्ञान नष्ट होगा और तभी इसको अचल पद की प्राप्ति होगी।।९०।।

(90) An aspirant of Divine bliss should leave the hypocritic rituals leading to mirage of heavenly pleasure etc and realise the ever efflugent God present in the cave of the heart. Only then the seed of this world mamely ignorance will be destroyed and he (aspirant) will adorn his unshakable position.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयमहमखिलेश्वरश्चिदात्मा
किमिह मयाऽनुपलब्धमस्ति लोके।
सति जडजगतां मयि प्रचेष्टा
तदहमहो जगदन्तरात्मभूतः ।।९१।।

मैं सारे जगत् के स्वामी चिदात्मा से अभिन्न हूँ; अतः संसार में मुझे कौन वस्तु अप्राप्त हो सकती है ? सम्पूर्ण जड़ जगत् की चेष्टा मेरी ही सत्ता से होती है, इसलिए जगत् का अन्तर्यामी और प्रेरक मैं ही हूँ।।९१।।

(91) I am not different from the Lord of this whole universe. Therefore there is nothing unavailable to me. The whole lifeless world moves because of my presence and so I am the indweller and life line of this world.

जगदिदमखिलं मयि प्रभातं
न मदतिरिक्तमतोऽण्वपि प्रलोके।
व्यपगतमभवद् भयं समस्तं
भयमितरभ्रमभासितं यदूचुः ।।९२।।

यह सम्पूर्ण जगत् अधिष्ठानभूत मेरे में ही प्रतीत होता है। इसलिए मुझसे भिन्न संसार में अणुमात्र भी नहीं है। अतः द्वैतभ्रम से प्राप्त हुआ सारा भय आज नष्ट हो गया है।।९२।।

(92) This whole world appears in me the substratum and there is not even an atom devoid of me. Therefore the fear born out of the false dualism has vanished today.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुखमनन्तमिदं जगतामहं
मयि तु दुःखलवोऽपि कथं भवेत्।
न खलु लोकविलोकनके खा-
वनुपधानतमः समदर्शकि।।९३।।

जब मैं समस्त जगत् को आनन्दित करने वाला और अनन्त सुखस्वरूप हूँ तब मेरे में दुःख का बिन्दु भी कैसे संभव हो सकता है। अपने प्रकाश से सारे संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्य में क्या कभी किसी ने वास्तविक अन्धकार देखा है ? ।।९३।।

(93) When I, the embodiment of infinite bliss, am the giver of pleasure to the whole world, how even a dot of pain is possible in me? Has anyone seen real darkness in the sun which provides light to the whole universe?

कामपाशपरिणद्धमानसो
जन्तुरेष जगतीह जायते।
शारदाभ्रपरिशुद्धचेतसो
ब्रह्मणश्च मम जन्म कीदृशम्।।९४।।

कामरूपी पाश में चित्त के बँधने पर ही जीव को संसार में जन्म लेना पड़ता है। शरत्कालीन मेघों के समान निर्मलचित्त होने के कारण ब्रह्मस्वरूप मेरा जन्म नहीं हो सकता।।९४।।

(94) Only a 'Jiva' caught in the net of lust has to get birth in this world. Whereas for me possessing a pure intellect like the clear sky of winter and having the same nature as of Supreme God, there is no birth.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

या बिभर्ति जगदेतदद्भुतं
वासना वितथभोगभासुरा।
जीवलोकमृगवागुराधुना
सावबोधबलतो व्यशीर्यत।।९५।।

जो मिथ्या विषयों के द्वारा पुष्ट होने वाली और जीवगण रूप मृगों को बाँधने के लिए जाल के समान तथा इस जगत् की स्थिति में प्रधान कारण हैं वे वासनाएँ भी आत्मज्ञान का उदय होने से नष्ट हो गयीं।।९५।।

(95) The ill impressions fattened by the false sense objects, acting like a net to bind the animals like 'jivas' and which constitute the main cause of the appearance of this universe, have been destroyed by the knowledge of the Self.

वीतशोकमतिलोकमेककं
ज्योतिरेव जगदन्तरीक्ष्यते।
न स्म भाति न च भाति वस्तुतो
भास्यतीदमिह विश्वडम्बरम्।।९६।।

शोक–मोहादि समस्त संसार धर्मों से रहित, एक, अलौकिक, चैतन्यज्योति ही जगत् के अन्दर अनुस्यूत दिखायी देती है और इसी से इस जगदाडम्बर का त्रैकालिक अत्यन्ताभाव हो गया है।।९६।।

(96) The light of transcendental conciousness devoid of sorrow and delusion etc of the world is pervading this universe and due to this the false drama of the world has ceased completely forever.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदगादयं प्रचुरबोधमयो
रविरस्तमायदखिलं च तमः।
मिहिका व्यलास्त, वितथप्रतिभा
व्यशदायताथ चिदनन्तनभः ।।९७।।

संशय–विपर्ययशून्य सुदृढ़ बोधरूप सूर्य का उदय होने से अज्ञान रूप अन्धकार नष्ट हो गया और मिथ्या–प्रतीति रूप कुहिरा दूर होकर चैतन्य रूप आकाश अत्यन्त निर्मल हो गया।।९७।।

(97) With the rising of bright sun of knowledge free of doubts and contradictions, the darkness of ignorance has been dispelled and the fog of false comprehension has disappeared leaving the sky of conciousness absolutely clear.

न जुगुप्सतेऽथ हृदयं तु मना-
गभिनन्दतीह न च किञ्चिदपि।
प्रतिपित्सते न किमपि स्वपरं
रमतेऽनपेक्षमपसीमसुखे।।९८।।

मेरा हृदय न तो किसी पदार्थ से घृणा करता है और न किसी में प्रेम रखता है तथा आत्मा वा अनात्मा किसी भी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा नहीं रखता, किन्तु सर्वदा निरवधिक आनन्द ही में मग्न रहता है।।९८।।

(98) My heart neither hates nor loves anything and has no desire to acquire things of the world or even transcendental; instead it always overflows with endless bliss.

God is embodiment of Truth and therfore loves only truth.

— ***Swami Chaitanya Giri***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकटत्वमापदियमन्तरहो
परितृप्तिरन्तविधुराऽविषया।
अविलोलमेतदिह हन्त मनो
लवणस्य भित्तमिव लीनमभूत्।।९९।।

अनन्त तथा निर्विषय आन्तर शान्ति का आविर्भाव हुआ और यह मन निश्चल होकर जल में लवणपिण्ड के समान उसी में लीन हो गया।।९९।।

(99) With the dawn of infinite independent inner peace, the mind has become steady and has merged in it like a salt stone in water.

प्रपञ्चपरिचर्चया विगतमेव दुर्धर्षया
व्यभासि परहर्षयाऽमितसुधाऽभिसंवर्षया।
गभीरमवगाढया किमपि तत्त्वमाबाढया
विलीय मिलितं धिया सपदि तत्र संपित्सया।।१००।।

प्रपञ्च के विषय में जो अत्यन्त दुर्दम्य सङ्कल्प थे वे शान्त हो गये, अनन्त हर्ष प्रदान करने वाली परमामृत की वृष्टि का आरम्भ हो गया और किसी अकथनीय तत्त्व में दृढ़ता के साथ जटिल होकर उसी में मिलने की इच्छा से बुद्धि भी विलीन होकर उसी के साथ एकरस हो गयी।।१००।।

(100) The extremely hard assumptions about the world phenomenon have ceased and the infinitely pleasing rain of nectar has started. The intellect bound strongly with an indescribable substance, wishing to mingle with it, has become one with the same, loosing its own identity.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिहरन्नखिलं लभते पुमा-
नभिलषन्न च विन्दति किञ्चन।
यदमृतत्वमवादिषुरागमा-
स्त्यजनतः सकलस्य समस्ततताम्।।१०१।।

इच्छा करने से पुरुष को कुछ भी नहीं मिलता और त्याग करने से सब कुछ प्राप्त हो जाता है, क्योंकि परम दुर्लभ सर्वात्मभावरूप मोक्षनामक अमृतत्व भी सबके त्याग से ही प्राप्त होता है। इसमें 'त्यागेनैके अमृत्वमानशुः' यह शास्त्र प्रमाण है।।१०१।।

(101) Man gets nothing by having desires but achieves everything by renunciation because extremely rare nectar namely realisation of Self in everything is also achievable by it. This is borne by the words in scripture, "Divine nectar can only be obtained through renunciation".

बहुशः परिचिन्तिता श्रुति-
र्ननुगीता न न वा विचारिता।
मनसे तु तदेव रोचते
यदमुत्रानिशवर्ज्यमीरितम्।।१०२।।

श्रुति का भी बहुत मनन किया तथा गीता के विचार में भी कोई कमी नहीं रक्खी, तो भी मन की तो उन्हीं पदार्थों में रुचि है जिनका कि शास्त्रों में निषेध है।।१०२।।

(102) I had deep contemplation on the Vedas and spared no pains to study Bhagawadgita thoroughly. Even then the mind is attracted towards the same objects that are forbidden by the scriptures.

प्रतिदिन स्वाध्याय करो। शास्त्र दीपक के समान है। जैसे प्रकाश के बिना अन्धकार में ठोकरें खाना पड़ता है उसी प्रकार बिना शास्त्र की सहायता के मनुष्य पद-पद पर ठोकरें खाता है और अनेक आपत्तियाँ उठाता है।

– स्वामी चैतन्य गिरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनः क्षणं धावति चन्द्रमण्डलं
क्षणं विशत्येतदहो रसातलम्।
क्षणेन पर्यट्य दिगन्तचक्रकं
द्रुतुं समक्षणोति समग्रभूतलम्।।१०३।।

कभी तो मन स्वर्ग प्राप्ति के लिए पुण्यकर्मों की ओर दौड़ता है और कभी नरक में डालने वाले पापों की ओर जाता है तथा कभी मनुष्य लोक में ही उन्नति करने के लिए साधारण कर्म करने लगता है। इस प्रकार थोड़े ही समय में यह सारे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है।।१०३।।

(103) Sometimes the mind runs towards virtuous deeds leading to heaven and sometimes goes towards sins leading to hell and sometimes in order to acquire property in this world starts doing ordinary jobs. Like this in short time it treads over the whole universe.

अदो मनो जय्यमगासिषुर्बुधा
मुधा प्रलापानितरान्न किं जगुः।
वियद् गदाभिः परिचूर्ण्य सर्वतो
महोदधौ क्षेप्यमहो जना इति।।१०४।।

पूर्व ऋषियों ने जो चञ्चल चित्त को भी जय होने के योग्य कहा है तो इसी प्रकार के 'गदाओं से आकाश का चूरा करके समुद्र में फेंक दो' किन्हीं अन्य व्यर्थ प्रलापों का उल्लेख क्यों नहीं किया ? ।।१०४।।

(104) What the ancient seers told about the mind that it is conquerable appears to me as hypothetical as asking to make powder of the sky by mace and throw it into the sea. (In otherwords it is extremely difficult to control the mind)

Daily study the scriptures which are sources of light. Just as in the absence of light one stumbles in the darkness, in the same way without the help of scriptures man has to encounter difficulties at every step of life.

— Swami Chaitanya Giri

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किमत्र चित्रं यदि वासमग्रके
सति प्रयत्ने पुरुषस्य दुर्दमे।
प्रसत्तिमासेदुष्टि सर्वयन्तरि
प्रभौ नभः किं कत्तमद्दुरासदम्।।१०५।।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यदि पुरुष पूरी तरह प्रबल प्रयत्न करे तो परमात्मा को प्रसन्न करके चित्त को जय कर सकता है, क्योंकि परमेश्वर की सहायता से आकाश को चूर्णित करना क्या, इससे भी दुष्कर कार्य सरलता से किये जा सकते हैं।।१०५।।

(105) No wonder if man tries hard he can conquer the mind by the grace of God with whose help works even more difficult than powdering the sky can easily be done.

ततो न हेया धृतिरुत्तमा मना-
गनादिदुर्वासनयाऽपि दूषितम्।
मनः पुरा शुध्यति पुंस्प्रयत्नतो
निदर्शनं स्पर्शमयश्च पश्यत।।१०६।।

इसलिए पुरुष को चाहिए कि धैर्य का त्याग न करे, क्योंकि अनादि दुर्वासनाओं से दूषित मन भी पुरुषप्रयत्न से शुद्ध हो सकता है। इसमें लौह और स्पर्शमणि का दृष्टान्त प्रसिद्ध है।।१०६।।

(106) In the circumstances, man should never give up forebearance because the mind soiled by age-old ill impressions can be purified by human effort. The saying regarding iron and the touchstone is famous in this regard.

दीन और दुःखी प्राणी भगवान् के रिश्तेदार हैं, इसी लिए भगवान् का एक नाम दीनबन्धु है। जो मनुष्य दीन दुःखियों की सहायता तथा सेवा करता है वह मानो भगवान् की सहायता और सेवा करता है। ऐसे मनुष्य पर भगवान् बहुत शीघ्र प्रसन्न होते हैं। अतः भगवत्कृपा प्राप्त करने के लिए उनके बान्धव दीन-दुःखियों की सहायता करो।

– स्वामी चैतन्य गिरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहो दुराशारशनाभिपाशितो-
ऽस्म्यहं सदा मर्कटवत्प्रनर्तितः।
त्वया विभो हे जगदीश सम्प्रति
प्रमुञ्च मां त्वा प्रणमामि भूरिशः।।१०७।।

हे विभो ! हे जगदीश्वर ! तुमने दुराशारूप रस्सी में बाँधकर बन्दर के समान मुझसे तरह–तरह के पुण्यपापों का अनुष्ठान रूप नृत्य कराया है। अब मेरी यही प्रार्थना है कि मुझे इस बन्धन से मुक्त कर दो।।१०७।।

(107) O, God Infinite ! Because of my virtuous and sinful deeds you made me dance like a monkey by tying me with the rope of false hope. Now my only prayer is that You free me from this bondage.

पतिः पशूनामसि वेदघोषितः
कुतः पशुं मामपि नैव पासि भोः।
न शक्यते चेत्पतिभावमुत्सृजे-
रहं पशुत्वं विजहामि ते विभो।।१०८।।

भगवन् ! आपको वेदों में पशुपति कहा है, जिसका अर्थ है पशु का पालन करने वाला, तो फिर आप पशुरूप मेरी रक्षा क्यों नहीं करते ? यदि मेरी रक्षा नहीं कर सकते तो अपने पशुपति नाम को त्याग दो और मैं भी आपके प्रति अपना पशुनाम त्यागता हूँ।।१०८।।

(108) O God ! You have been described as Lord of the animals which means the rearer of them. Then why don't you protect me, the animal? If you cannot protect me then kindly give up your 'Pashupati' name and I also change my animal name.

In order to receive the grace of the Lord, help the poor and agrieved who are his near and dear ones.

— Swami Chaitanya Giri

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलं फलेनेह सुपर्वसम्पदा
कृतं विरिञ्चेः पदवीक्षयाऽपि मे।
न विष्णुधिष्ण्यं न च भर्गभूमिका-
मथाद्रिये ब्रह्म भवामि निर्भयम्।।१०९।।

देवलोक स्वर्ग की प्राप्ति से मुझे कुछ प्रयोजन नहीं है, ब्रह्मलोक की भी मैं इच्छा नहीं रखता, विष्णुलोक तथा शिवलोक में भी मेरी श्रद्धा नहीं है। परन्तु 'निर्भय ब्रह्मपद मुझे प्राप्त हो' यही मेरी सदा कामना रहती है।।१०९।।

(109) I do not aim to achieve heaven of the gods nor 'Brahmaloka' the abode of Lord Brahma. I have no faith in either Vishnuloka or Shivaloka. What I always long to achieve is the fearless state of the Supreme God.

'परमात्मा जो कुछ करता है ठीक ही करता है और उससे जगत् का कल्याण ही होता है', ऐसा समझकर परमात्मा के किसी कार्य में दोष मत देखो और कभी भी उसकी समालोचना मत करो। यदि तुम भगवान् के कार्यों में त्रुटि और दोष देखते हो तो तुम उसको अल्पज्ञ तथा अल्पशक्ति समझते हो और ऐसा करना नास्तिकता तथा महापाप है, इससे बचते रहना चाहिए।

—स्वामी चैतन्य गिरि

Whatever God does is right and is meant to do good to the world. Being so, don't find faults in any of His works and never criticise Him. If you indulge in such criticism it means you underate His knowledge and Power and it only displays your atheism which is hineous sin to be shunned.

— Swami Chaitnya Giri

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सौराष्ट्र प्रदेश में श्री सोमनाथ ज्योतिर्लिङ्ग

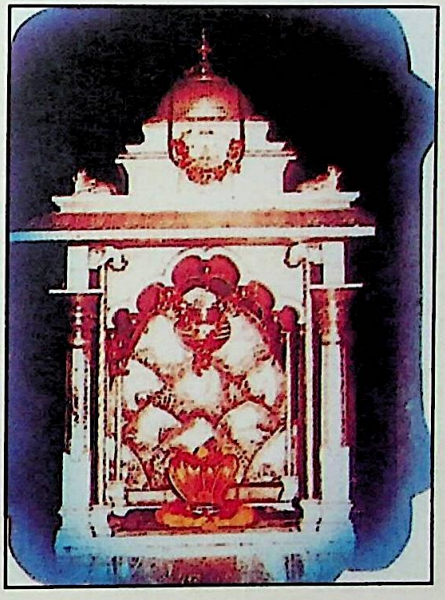

श्रीशैल पर्वत पर श्रीमल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

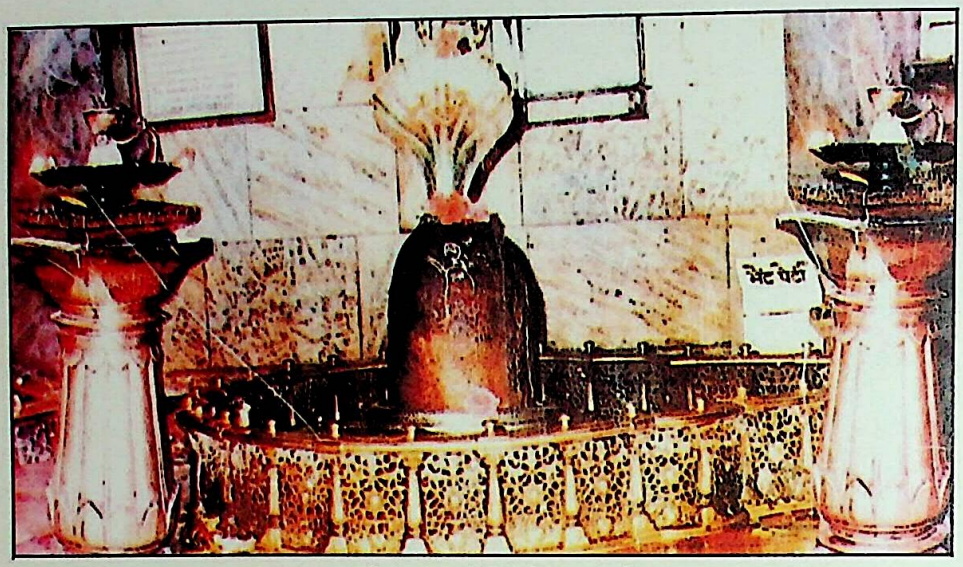

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग, उज्जैन

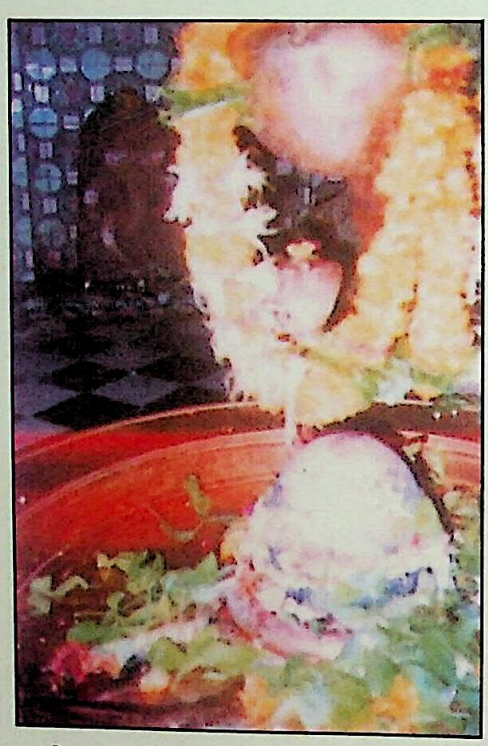

नर्मदा तटीय ॐकारेश्वर अथवा अमलेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

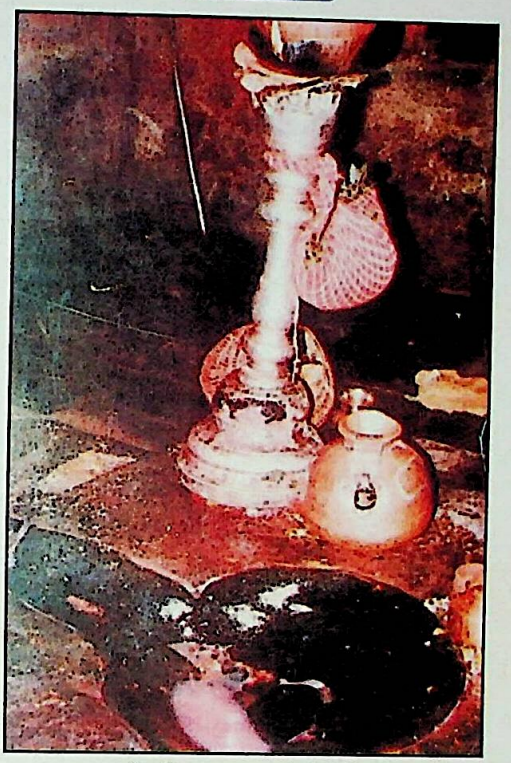

श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग

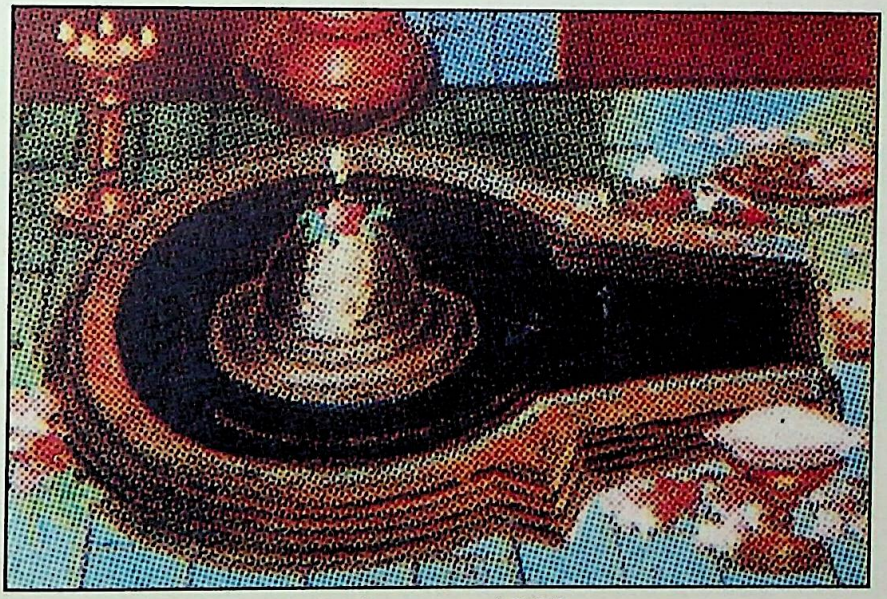

श्री भीमाशङ्कर ज्योतिर्लिङ्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेतुबंध श्री रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग

दारुकावनस्थ श्री नागेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

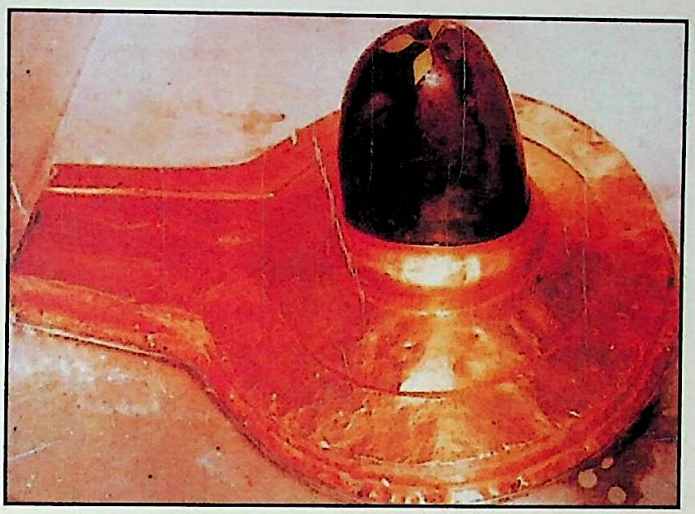

श्रीकाशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग

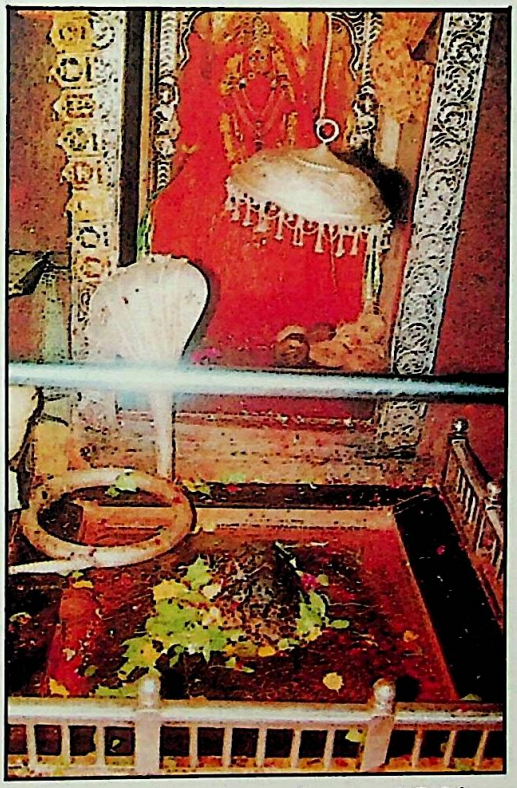

गोदावरी तटीय श्रीत्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

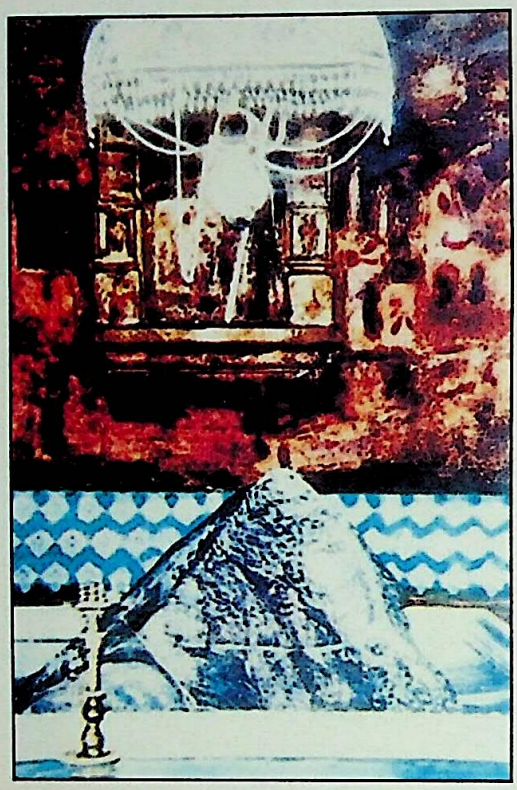

हिमालय के केदार शृंग पर श्री केदार नाथ ज्योतिर्लिङ्ग

श्री घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

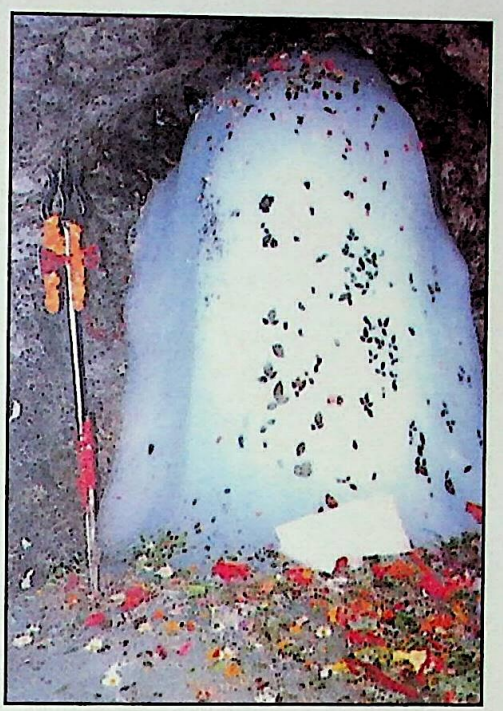

काश्मीर स्थित श्री अमरनाथ हिम लिंग.

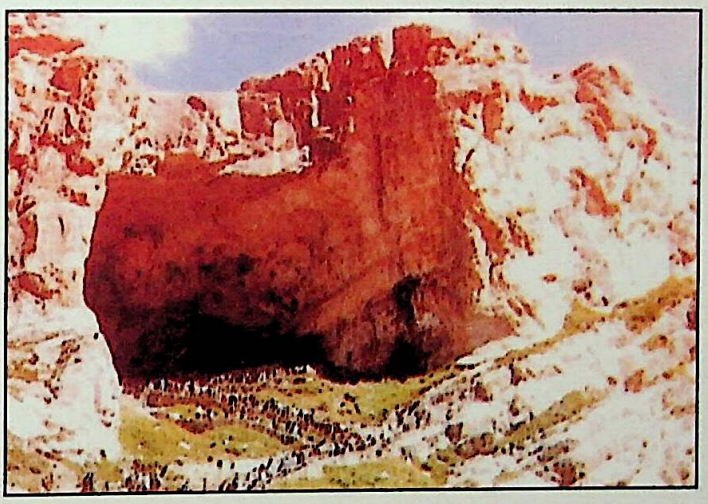

श्री अमरनाथ गुफा को जाते हुए यात्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

कैलास पर्वत, कैलास मानसरोवर एवं राजहंस

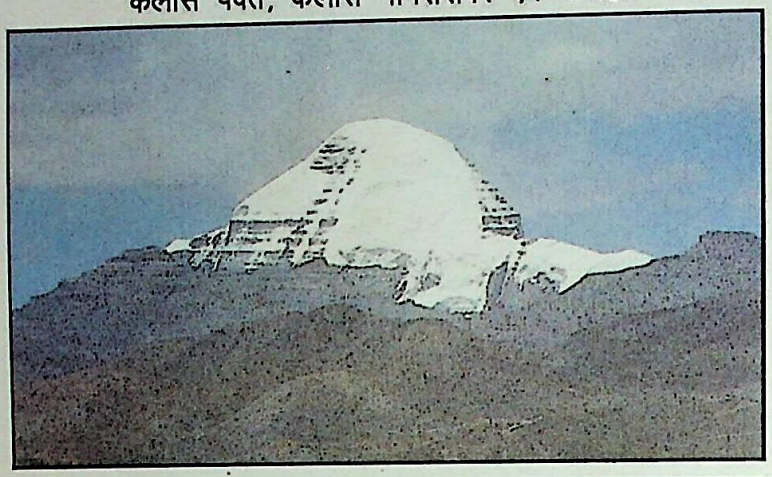

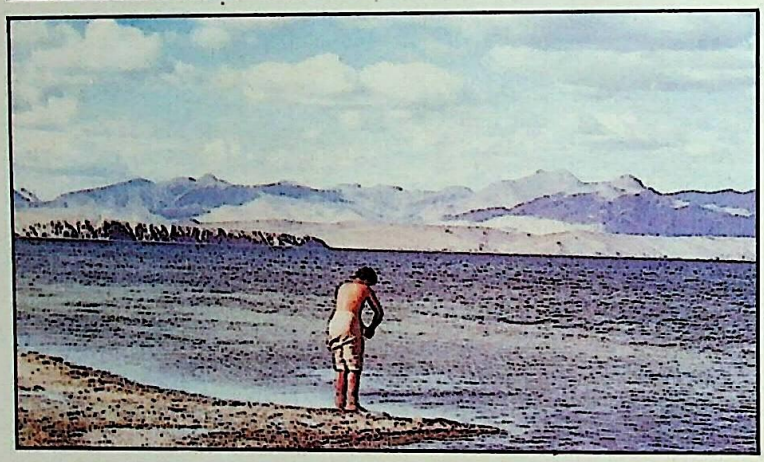

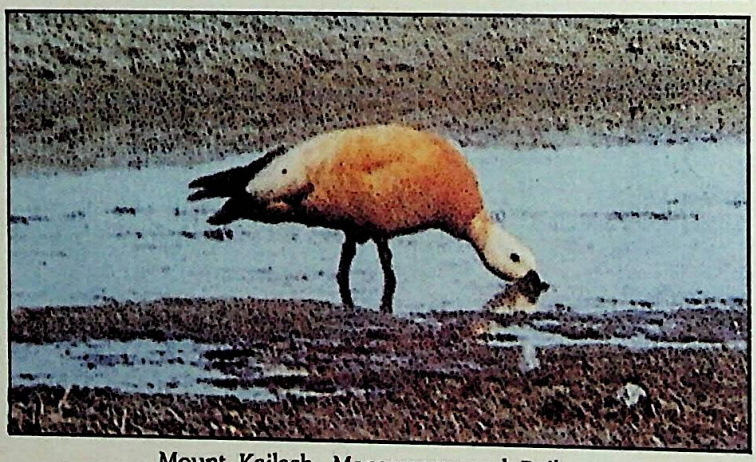

Mount Kailash, Mansarovar and Rajhans

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कैलास आश्रम ट्रस्ट को आयकर विभाग से प्राप्त पत्र की प्रतिलिपि (सूचनार्थ)

INCOME-TAX DEPARTMENT

K–601/ITO–RKH District : RISHIKESH

1.	Year of Assessment	:	1996–97
2.	Name of Assessee (with complete address)	:	Sri Kailash Ashram Trust, Muni - Ki - Reti, Rishikesh,
3.	Status	:	A.O.P. (Tuust).
4.	Whether - Resident / Resident but not ordinarily resident / Non-resident	:	R & O. R.
5.	Method of accounting	:	—
6.	Accounting period (to be shown separately for source of income)	:	31.3.1996.
7.	Section and Sub-section under which the assessement is made	:	Assessment u/s 143 (3) of the I.T. Act, 1961.

ASSESSMENT ORDER

Return of income showing total loss of Rs. 1,19,924/–was filed on 15-10-1996. The case was selected for scrutiny under compulsory scrutiny. As per guidelines of selection of trust cases for scrutiny as the assets of the trust were more than Rs. 1 crore. Notice under section 143 (2) of the I.T. Act, 1961, was issued. Shri Medhanand Puri, Managing trustee, attended from time to time and the case was discussed with him. The assessee trust file books of accounts and vouchers for expenses, in support of expenditure debited in the income and expenditure account. It was stated by the Managing trustee that the trust is fully engaged in achieving the charitable objectives mentioned in the Trust Deed. The details of expenses made during the year were obtained and vouchers were test checked. Donation received during the year were also verified from the donations receipt books and books of accounts. Details of addition in fixed assets were also obtained. From the details examination, it was revealed that expenses are fully vouched. The trust is performing the activities which are of charitable nature. The expenses have been made as per provisions of section 11 (2) of the I.T. Act, 1961, and the aspect of investment in specified assets as per provisions of section 11 (5) of the I. T. Act, 1961. was also examined. The trust is a genuine trust and qualifies for the deductions, therefore, assessment is completed on returned income. Issue, N.D.

Date : 7-3-97

Income Tax Department Seal

Sd/-
(PUSHPENDRA KUMAR)
INCOME TAX OFFICER
RISHIKESH
CODE NO. 205428

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्री १०८ स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज

आचार्य महामण्डलेश्वर कैलासाश्रम, ऋषिकेश

शुभ दीपावली महोत्सव – शुक्रवार, २१ कार्तिक सं० २०१०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

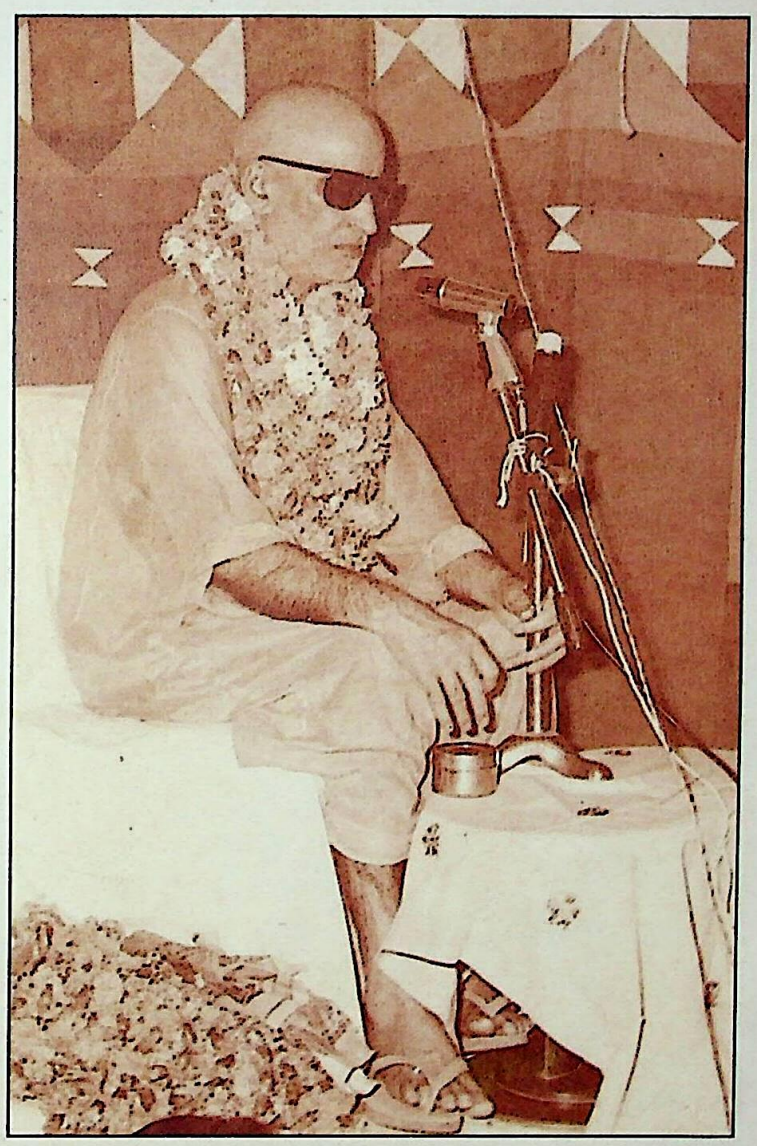

पूज्य शास्त्री जी महाराज प्रवचन मुद्रा में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैलास आश्रम दिव्यविभूति दर्शन

Acharyas of Kailash Ashram Rishikesh

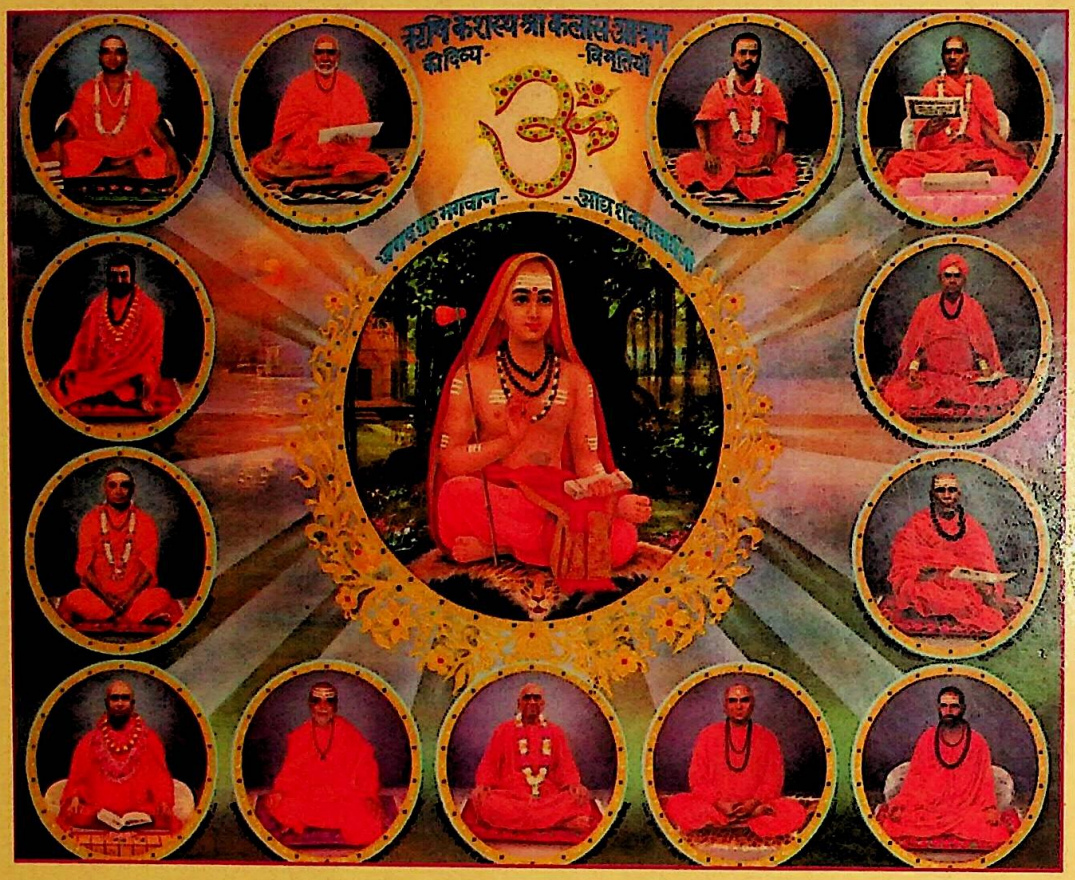

सौजन्य

जयमाला पर्स एम्पोरियम

5/76, W.E.A., अजमल खाँ रोड, करौल बाग, नई दिल्ली – 110005

दूरभाष : 5729218, 5728898

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection